॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

दुःखसे बचो, सुखसे जियो

[मन्त्रानुष्ठान तथा औषध]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

'हे प्रभो! आप ही मेरी माता हो, आप ही पिता हो, आप ही बन्धु हो, आप ही सखा हो, आप ही विद्या हो, आप ही धन हो। हे देवदेव! मेरे सब कुछ आप ही हो।'

राजेन्द्र कुमार धवन

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

नम्र निवेदन

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

'सभी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभीका कल्याण हो, किसीको किंचिन्मात्र भी दुःख न हो।'

कई वर्ष पूर्व 'दुःखसे बचो, सुखसे जियो' और 'मन्त्रसिद्धिके उपाय' शीर्षकसे दो पुस्तकें श्रीकृष्णप्रकाशन, जयपुरसे प्रकाशित की गयी थीं। पाठकोंकी माँगके कारण अब उन्हीं पुस्तकोंका संशोधन-संवर्धन-परिवर्तन करके प्रस्तुत पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पुस्तकको दो खण्डोंमें विभक्त किया गया है—मन्त्रानुष्ठान खण्ड एवं औषध खण्ड। प्रथम खण्डमें मन्त्रसिद्धिके विषयमें आवश्यक जानकारीके साथ विभिन्न मन्त्रानुष्ठान तथा स्तोत्र दिये गये हैं। मन्त्रशास्त्र बहुत विशाल है। इसमें भिन्न-भिन्न उद्देश्योंकी सिद्धिके लिये भिन्न-भिन्न देवताओंकी भिन्न-भिन्न विधियोंका बहुत व्यापक रूपसे वर्णन प्राप्त होता है। प्रस्तुत पुस्तकमें संक्षिप्तरूपसे मुख्य-मुख्य आवश्यक विषयोंका उल्लेख किया गया है। विस्तारसे जाननेके इच्छुक सज्जनोंको शारदातिलक, मन्त्रमहोदधि, मन्त्रमहार्णव, रुद्रयामलतन्त्र आदि प्रामाणिक तन्त्र-ग्रन्थोंका अवलोकन करना चाहिये। द्वितीय खण्डमें सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'कल्याण' तथा अन्य विश्वसनीय स्रोतोंसे प्राप्त ओषधियोंका संकलन दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तकमें परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजकी कृपासे प्राप्त विविध सामग्री भी सम्मिलित की गयी है। श्रीस्वामीजी महाराज द्वारा बताये गये अनुष्ठानों तथा ओषधियोंको 卐 चिह्नसे निर्देशित किया गया है।

आशा है, पाठकगण इस पुस्तकसे लाभ उठायेंगे।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी
वि०सं० २०८० (सन् २०२३)

निवेदक—
राजेन्द्र कुमार धवन

[*ज्ञातव्य*—इस पुस्तकमें प्रकाशित सामग्री (औषधि आदि) पाठकोंको केवल विषयसे परिचित करानेके उद्देश्य दी गयी है। किसी भी विधिको अपनानेसे पूर्व अनुभवी विशेषज्ञोंकी सलाह अवश्य लेनी चाहिये। प्रकाशक और लेखक किसी प्रकारकी हानिके जिम्मेदार नहीं होंगे।]

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

विषय-सूची

मन्त्रानुष्ठान-खण्ड

(प्रथम प्रकरण)

(द्वितीय प्रकरण)

(तृतीय प्रकरण)

(चतुर्थ प्रकरण)

औषध-खण्ड

===::0::===

मन्त्रानुष्ठान खण्ड

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

प्रथम प्रकरण

मन्त्रशक्ति

'मन्त्र' शब्दके अन्तर्गत तीन बातें आती हैं—मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र। जिसका माला आदिसे गिनती करके जप किया जाता है, वह 'मन्त्र' कहलाता है। विशिष्ट मुहूर्तमें किसी जड़ी-बूटी आदिसे कार्य सिद्ध किया जाय तो वह 'तन्त्र' कहलाता है। भोजपत्र आदिमें रेखाएँ खींचकर उनमें निश्चित संख्यामें अंक लिखे जायँ तो वह 'यन्त्र' कहलाता है।

मन्त्रशक्ति अमोघ है—

मन्त्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब॥

(मानस, बाल० २५६)

'जिसके वशमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सभी देवता हैं, वह मन्त्र अत्यन्त छोटा होता है। महान् मतवाले गजराजको छोटा-सा अंकुश वशमें कर लेता है।'

मन्त्रशक्तिसे मेरु पर्वतको भी चलायमान किया जा सकता है—'**मेरुं चालयते स्थानात्**', पृथ्वीको भी समुद्रमें डुबाया जा सकता है—'**सागरं प्लावयेन्महीम्**' और सूर्यको भी पृथ्वीपर गिराया जा सकता है—'**सूर्यं प्रपातयेद् भूमौ**' (उड्डीशतन्त्रम्)!! जैसे अणुशक्तिसे लोगोंके भलेके कार्य भी किये जा सकते हैं और अणुबम बनाकर लोगोंका नाश भी किया जा सकता है, वैसे ही मन्त्रशक्तिसे लोगोंका भला भी किया जा सकता है और नाश भी किया जा सकता है।

शास्त्रोंमें अणिमा, गरिमा आदि जो अनेक प्रकारकी सिद्धियाँ बतायी गयी हैं, वे सब सिद्धियाँ मन्त्रोंसे भी प्राप्त की जा सकती हैं। पातंजलयोगदर्शनमें आया है—

जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धयः।

(कैवल्य० १)

'जन्म, औषधि, मन्त्र, तप और समाधि—इन पाँच उपायोंसे सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं।'

***

मन्त्रसिद्धि

मन्त्रोंकी ओर जनताका विशेष आकर्षण देखकर अनेक लोभी लेखक एवं प्रकाशक मन्त्रोंकी पुस्तकें छाप रहे हैं, जिनसे लाभकी अपेक्षा हानिकी ही आशंका रहती है। कारण यह है कि उनमें लिखे मन्त्र प्रायः लेखकके अनुभूत नहीं होते और इधर-उधरसे नकल करके इकट्ठे किये हुए होते हैं। उनमें मन्त्र प्रायः अशुद्ध छपे रहते हैं और उनकी जानकारी भी अधूरी रहती है। अतः अनुभवी गुरुके बिना किसीको भूलकर भी तान्त्रिक सिद्धिमें नहीं लगना चाहिये।

पुस्तके लिखिता विद्या नैव सिद्धिप्रदा नृणाम्।

गुरु विनाऽपि शास्त्रेऽस्मिन् नाधिकारः कथञ्चन॥

(उड्डीशतन्त्रम्)

‘पुस्तकमें लिखी हुई मन्त्रविद्या मनुष्यको सिद्धि देनेवाली नहीं होती। इस मन्त्रशास्त्रमें गुरुके बिना स्वयं क्रिया करनेका अधिकार किसीको भी नहीं है।’

आजकल तन्त्रके नामपर प्रायः ठगी चलती है। तान्त्रिकोंमें सच्चाई कम, पर दिखावा, चालाकी अधिक रहती है। तान्त्रिकोंके वेशमें कंचन-कामिनीके भूखे भेड़िये अधिक मिलते हैं! ऐसी कई घटनाएँ समाचार-पत्रोंमें छपती रहती हैं। इसलिये विशेषकर स्त्रियोंको भूलकर भी तान्त्रिकोंके पास अकेले नहीं जाना चाहिये। कुछ ऐसे भी धूर्त तान्त्रिक होते हैं, जो जान-बूझकर दूसरेको प्रेतबाधा लगा देते हैं, जिससे वह उनके चंगुलमें फँसा रहे और वे उससे रुपये लूटते रहें।

वर्तमानमें मन्त्रानुष्ठान प्रायः शीघ्र सिद्ध नहीं होते। कई वर्ष पूर्व एक प्रसिद्ध तान्त्रिक (जिन्होंने तन्त्र-विद्यापर पच्चीससे अधिक पुस्तकें भी लिखी हैं)-का एक पत्र परमश्रद्धेय स्वामीजी (श्रीरामसुखदासजी) महाराजके पास आया था। उसमें लिखा था—

‘मन्त्रजप लाखोंकी संख्यामें हुआ। कवच, स्तोत्रके असंख्य पाठ हुए।.......अन्नपूर्णाका व्रत माँने ३४ वर्ष व पत्नीने १७ वर्ष किया। लक्ष्मीके बड़े-बड़े प्रयोग व अन्नपूर्णाका चार लाख मन्त्रजप, हवन, मार्जन, तर्पण, अभिषेक, कन्या व ब्राह्मण-भोजन कराया, पर रत्तीभर भी उन्नतिके मार्ग प्रशस्त न हुए।.......अब तो बच्चोंका लालन-पालन भी कठिन हो गया है। अब महँगाई व पूजा-सामग्रीकी खरीद भी कठिन है। मन स्थिर नहीं।’ आदि।

ऐसी बातोंसे शंका होने लगती है कि कहीं कलियुगमें मन्त्रानुष्ठान निष्प्रभाव तो नहीं हो रहे हैं! वास्तविक बात तो भगवान् ही जानें। मन्त्रानुष्ठान सफल न होनेमें अनेक कारण हो सकते हैं। भगवान् शंकर कहते हैं—

जिह्वा दग्धा परान्नेन करौ दग्धौ प्रतिग्रहात्।
मनो दग्धं परस्त्रीभिः कार्यसिद्धिः कथं भवेत्॥

(कुलार्णवतन्त्रम् १५। ७७)

‘दूसरेका अन्न खानेसे जिसकी जीभ जल चुकी है, दूसरेसे दान लेनेसे जिसके हाथ जल चुके हैं और दूसरेकी स्त्रीका चिन्तन करनेसे जिसका मन जल चुका है, उसे सिद्धि कैसे मिल सकती है?’

मन्त्रानुष्ठानकी सफलतामें बलाबलका विचार होता है। अनुष्ठानका बल कम हो और प्रारब्धका बल अधिक हो तो अनुष्ठान निष्फल हो जायगा। परंतु अनुष्ठानका बल अधिक हो जाय और प्रारब्धका बल कम हो जाय तो अनुष्ठान सफल हो जायगा। प्रारब्धका बल कितना है—यह हम जान नहीं सकते। इसलिये साधक जो अनुष्ठान कर रहा हो, उसे बार-बार करता रहे*। जब अनुष्ठानका बल प्रारब्धके बलसे अधिक हो जायगा, तब कार्य सिद्ध हो जायगा।

यहाँ शंका हो सकती है कि जब बिना भोगे कर्मफल क्षीण नहीं हो सकता तो फिर अनुष्ठानसे प्रारब्ध कैसे कट सकता है? इसका समाधान यह है कि जैसे किसीको कैद होती है तो कैदी व्यक्ति बदलेमें जुर्माना (रुपये) देकर कैदसे छूट सकता है, ऐसे ही अनुष्ठान करके मनुष्य प्रारब्धके भोगसे छूट सकता है।

---

* **पुरश्चरण एकस्मिन्कृते जन्मान्तराघतः। मन्त्रो यदि न सिद्धः स्यात्तदा तत्पुनराचरेत्॥** (मन्त्रमहोदधि २४। १२९)

मन्त्रानुष्ठान करनेसे पूर्व साधकको मन्त्रोंके दस संस्कार तथा माला-संस्कार और राशिचक्र, नक्षत्रशोधनचक्र, ऋणधनशोधनचक्र, कुलाकुलचक्र, अकथहचक्र, अकडमचक्र, कूर्मचक्र आदिपर विचार कर लेना चाहिये।

***

मन्त्रग्रहण (दीक्षा)

पिता, नाना, छोटे भाई, शत्रुपक्षके व्यक्ति, शूद्र तथा स्त्रीसे मन्त्रकी दीक्षा नहीं लेनी चाहिये—

निन्दितस्तु पितुर्मन्त्रस्तथा मातामहस्य च।
सोदरस्य कनिष्ठस्य वैरिपक्षाश्रितस्य च॥
शूद्राणां च तथा स्त्रीणां गुरुत्वं न कदाचन।

(मन्त्रमहार्णव, देवता० १। ४९-५०)

पति अपनी स्त्रीको, पिता अपनी कन्या तथा पुत्रको और भाई अपने भाईको मन्त्रकी दीक्षा न दे—

न पत्नीं दीक्षयेद् भर्ता न पिता दीक्षयेत् सुताम्।
न पुत्रं च तथा भ्राता भ्रातरं नैव दीक्षयेद्॥

(रुद्रयामल, उत्तरतन्त्र २। ८७)

चैत्र, वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन—इन मासोंमें; रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार—इन वारोंमें; द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी तथा पूर्णिमा—इन तिथियों; तथा अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी और हस्त—इन नक्षत्रोंमें मन्त्र ग्रहण करना चाहिये। मन्त्रग्रहणके लिये सूर्यग्रहण सबसे उत्तम काल माना जाता है।

गुरुसे मन्त्र श्रवण करके कण्ठस्थ कर लेना चाहिये, उसे लिखना नहीं चाहिये।

***

देवपूजन

जपके आदिमें तथा अन्तमें देवताका पूजन अवश्य करना चाहिये। पूजाके पंचोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार, अष्टादशोपचार आदि अनेक प्रकार हैं। पंचोपचार पूजामें इष्टदेवको गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य—ये पाँच वस्तुएँ अर्पण की जाती हैं।

घरमें प्रतिदिन पूजाके लिये वही प्रतिमा कल्याणदायिनी होती है, जो स्वर्ण आदि धातुओंकी बनी हो तथा कम-से-कम अँगूठेके बराबर तथा अधिक-से-अधिक एक बित्तेकी हो। जो टेढ़ी हो, जली हुई हो, खण्डित हो, जिसका मस्तक या आँख फूटी हुई हो अथवा जिसे चाण्डाल आदि अस्पृश्य मनुष्योंने छू दिया हो, वैसी प्रतिमाकी पूजा नहीं करनी चाहिये।

घरमें टूटी-फूटी अथवा अग्निसे जली हुई प्रतिमाकी पूजा नहीं करनी चाहिये। ऐसी मूर्तिकी पूजा करनेसे गृहस्वामीके मनमें उद्वेग या अनिष्ट होता है—

गृहेऽग्निदग्धा भग्ना वा नैव पूज्या वसुन्धरे।
आसान्तु पूजनाद्गेहे उद्वेगे प्राप्नुयाद् गृही॥

(वराहपुराण १८६। ४३)

घरमें अँगूठेके पर्वसे लेकर एक बित्ता परिमाणकी ही प्रतिमा होनी चाहिये। इससे बड़ी प्रतिमा घरमें शुभ नहीं है—

अङ्गुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु।
गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः॥

(मत्स्यपुराण २५८। २२)

घरमें दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्यप्रतिमा, तीन देवी-प्रतिमा, दो गोमती-चक्र और दो शालग्रामका पूजन नहीं करना चाहिये। इनका पूजन करनेसे गृहस्वामीको दु:ख, अशान्तिकी प्राप्ति होती है।

देवपूजा उत्तरमुख होकर और पितृपूजा दक्षिणमुख होकर करनी चाहिये—**उदङ्मुखस्तु देवानां पितृणां दक्षिणामुखः॥** (स्कन्दपुराण, प्रभास० २०६। १८)

केश खोलकर आचमन और देवपूजन नहीं करना चाहिये—**मुक्तकेशश्च नाचामेद्देवाद्यर्चां च वर्जयेत्॥** (विष्णुपुराण ३।१२।१९)

नीला, लाल अथवा काला वस्त्र पहनकर और बिना धोया हुआ वस्त्र पहनकर भगवान् विष्णुका पूजन नहीं करना चाहिये।

मन्त्र-जपके समय अपने सामने शुद्ध घीका दीपक जलते रहना उत्तम होता है। दीपक जलानेके लिये गौका घी उत्तम, भैंसका तथा तिलका घी मध्यम और बकरी आदिका घी अधम कहा गया है—

उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवम्।
तिलतैले तु तादृक्स्यात्कनीयोऽजादिजं घृतम्॥

(मन्त्रमहोदधि १७। ११०)

घीका दीपक देवताके दाहिने (अपने बायें हाथकी तरफ) और तेलका दीपक देवताके बायें (अपने दायें हाथकी तरफ) रखना चाहिये—'**घृतदीपो दक्षिणे स्यात् तैलदीपस्तु वामतः**' (मन्त्रमहोदधि २२। ११९)। धूप देवताके बायें अर्थात् अपने दायें हाथकी तरफ रखनी चाहिये। नैवेद्य देवताके दायीं ओर या सामने रखना चाहिये। गन्ध, पुष्प और भूषण देवताके सामने रखने चाहिये।

भगवान्‌की उपासना करते समय दीपकका स्पर्श करनेपर हाथ धो लेना चाहिये, अन्यथा दोष लगता है—

दीपं स्पृष्ट्वा तु यो देवि मम कर्माणि कारयेत्।
तस्यापराधाद्वै भूमे पापं प्राप्नोति मानवः॥

(वराहपुराण १३६। १)

भगवान्, देवता तथा ऋषियोंको अनामिका अंगुलीसे, पितरोंको तर्जनी अंगुलीसे और खुदको मध्यमा अंगुलीसे तिलक करना चाहिये।

नैवेद्य पवित्रतापूर्वक अपने घरका ही बना होना चाहिये। घरमें न बना सकें तो बाजारसे फल लाकर अर्पण करना चाहिये। यथासम्भव वही नैवेद्य अर्पण करना चाहिये, जो इष्टदेवको प्रिय हो; जैसे—हनुमान्‌जीको गुड़-चना और गणेशजीको लड्डू प्रिय हैं।

विष्णुको अक्षत, आक एवं धतूरा, शंकरको केवड़ा, सूर्यको तगर और हनुमान्, गणेश एवं दुर्गाको तुलसी अर्पण नहीं करनी चाहिये।

विष्णुको पीला और रेशमी वस्त्र, देवी, सूर्य तथा गणेशको लाल वस्त्र, और शंकरको सफेद वस्त्र प्रिय है।

शिवलिंग, शालग्राम और हनुमान्‌जी—इन तीनोंका स्पर्श स्त्रियोंके लिये निषिद्ध है।

शक्तिकी एक, सूर्यकी सात, गणेशकी तीन, विष्णुकी चार तथा शिवकी आधी प्रदक्षिणा करनी चाहिये।

प्रदक्षिणा, प्रणाम, पूजा, हवन, जप और गुरु तथा देवताके दर्शनके समय गलेमें वस्त्र नहीं लपेटना चाहिये—

प्रदक्षिणे प्रणामे च पूजायां हवने जपे॥
न कण्ठावृतवस्त्रः स्याद्दर्शने गुरुदेवयोः।
(वाधूलस्मृति १३९-१४०)

नवरात्रमें कन्या-पूजनके समय एक वर्षकी अवस्थावाली कन्या नहीं लेनी चाहिये। 'कुमारी' वही कहलाती है, जो कम-से-कम दो वर्षकी हो चुकी हो। तीन वर्षकी कन्याको 'त्रिमूर्ति' और चार वर्षकी कन्याको 'कल्याणी' कहते हैं। पाँच वर्षवालीको 'रोहिणी', छः वर्षवालीको 'कालिका', सात वर्षवालीको 'चण्डिका', आठ वर्षवालीको 'शाम्भवी', नौ वर्षवालीको 'दुर्गा' और दस वर्षवालीको 'सुभद्रा' कहा गया है। इससे ऊपर अवस्थावाली कन्याकी पूजा नहीं करनी चाहिये। वह सभी कार्योंमें निन्द्य मानी जाती है।

मन्त्रानुष्ठान करनेसे पहले शरीरस्थ पंचभूतोंका शोधन करने हेतु निम्नलिखित चार मन्त्रोंका जप कर लेना चाहिये—

१-**ॐ भूतशृङ्गाटात् शिरःसुषुम्णापथेन जीवशिवं परमशिवपदे योजयामि स्वाहा।**

२-**ॐ यं लिङ्गशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।**

३-**ॐ रं सङ्कोचशरीरं दह दह स्वाहा।**

४-**ॐ परमशिव सुषुम्णापथेन मूलशृङ्गाटम् उल्लस उल्लस, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल सोऽहं हंसः स्वाहा।**

***

आसन

बिना आसनके भूमिपर बैठकर जप करनेसे मन्त्र सिद्ध नहीं होता तथा दुःख प्राप्त होता है। बाँसके आसनपर बैठकर जप करनेसे दरिद्रता आती है। पत्थरपर बैठकर जप करनेसे रोग होते हैं। काठपर बैठकर जप करनेसे दुर्भाग्यकी वृद्धि होती है। तृणके आसनपर बैठकर जप करनेसे यशकी हानि होती है। पत्तोंके आसनपर बैठकर जप करनेसे चित्तकी भ्रान्ति होती है। रेशम, कुशा अथवा कम्बलका आसन उत्तम माना गया है।

अपना आसन अलग रखना चाहिये। दूसरेके आसनपर बैठकर जप नहीं करना चाहिये। लाल कम्बलका अथवा कुशाका आसन श्रेष्ठ माना गया है। आसन लोमरहित होना चाहिये, अन्यथा सिद्धि नहीं होती।

देवताओंके रूप एवं वर्णके अनुसार भी विभिन्न प्रकारके आसन और उनके रंग निर्धारित किये गये हैं। जैसे, हनुमान्, गणेश, सूर्य, शक्ति आदिके उपासकको लाल रंगका, कालीके उपासकको काले रंगका, बगलामुखीके साधकको पीले रंगका आसन प्रयोग करनेकी बात कही गयी है।

***

माला

माला रुद्राक्ष, तुलसी, स्फटिक, मोती, मूँगा, कमलगट्टा, हाथीदाँत आदिकी हो सकती है। विभिन्न कामनाओं और विभिन्न देवताओंके अनुसार मालाओंमें भी भेद होता है। वैष्णवके लिये तुलसीकी, गाणपत्यके लिये हाथीदाँतकी और शैव, शाक्त आदिके लिये रुद्राक्षकी माला उत्तम मानी गयी है। रुद्राक्षकी मालासे जपनेपर सभी प्रकारके मन्त्र सिद्ध होते हैं—**'रुद्राक्षमालया जप्तो मन्त्रः सर्वफलप्रदः'** (उड्डीशतन्त्र), **'सर्वकार्यसमृद्ध्यर्थं जपे रुद्राक्षमालया'** (मन्त्रमहार्णव)।

शिवजीका मन्त्र रुद्राक्षकी मालासे जपना चाहिये, तुलसीकी मालासे नहीं।

स्त्रियोंको रुद्राक्षकी मालासे जप न करके तुलसीकी मालासे जप करना चाहिये। अशुद्ध अवस्थामें उन्हें काठकी मालासे जप करना चाहिये। पाठके लिये गीता-रामायणकी पुस्तक अलग रखनी चाहिये। अशुद्ध अवस्थामें तुलसीकी कण्ठी पहननेका निषेध नहीं है।

माला एक सौ आठ, चौवन अथवा सत्ताईस दानोंकी होनी चाहिये। एक सौ आठ दानोंकी माला सब प्रकारके जपमें काम आती है।

माला लाल रंगके सूत्रमें पिरोनी चाहिये। मालाके प्रत्येक मनकेके बीच ग्रन्थि होनी चाहिये। रुद्राक्षके दानोंमें मुख और पुच्छका भेद भी होता है। अतः रुद्राक्षकी माला पिरोते समय मुखके साथ मुख और पुच्छके साथ पुच्छ जोड़कर माला बनानी चाहिये। मालाके दाने छोटे-बड़े नहीं होने चाहिये।

मालाको गोमुखीमें डालकर अथवा कपड़ेसे ढककर जपना चाहिये, अन्यथा जप निष्फल हो जाता है।

प्रातःकालमें नाभि, मध्याह्नमें हृदय और सायंकालमें नासिकाके समीप हाथ रखकर जप करना चाहिये।

मालाको अशुद्ध अवस्था पासमें रखना, बायें हाथसे फेरना, लोगोंको दिखाते फिरना और जहाँ-कहीं रख देना निषिद्ध है। जपमाला किसीको भी दिखानी नहीं चाहिये, गुरुको भी नहीं।

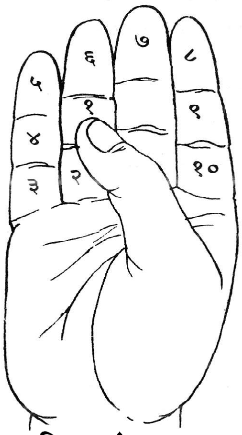
माला फेरते समय अनामिका, अँगूठा तथा मध्यमा अंगुलीका योग रहना चाहिये। जपके समय तर्जनी अंगुलीसे मालाका कभी स्पर्श नहीं करना चाहिये। जपके समय मालामें सुमेरुका उल्लंघन नहीं करना चाहिये। सुमेरु आनेपर मालाको घुमा लेना चाहिये।

जप करते समय मालाकी आवाज नहीं आनी चाहिये, अन्यथा साधकको रोग होता है। जपके समय हाथ भी नहीं हिलाना चाहिये। न स्वयं हिले, न मालाको हिलाये। जप करते समय माला हाथसे छूटकर गिरना अथवा टूटना बहुत अशुभ होता है। यदि छूट जाय तो आचमन करके, इष्टदेवसे क्षमा-याचना करके फिरसे जप आरम्भ करना चाहिये। जप करनेके बाद मालाको किसी ऊँचे तथा शुद्ध स्थानपर रख देना चाहिये।

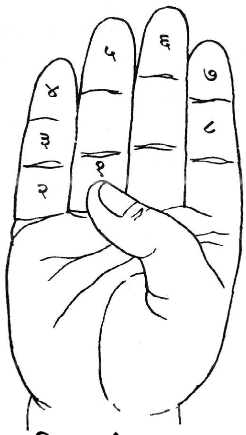
बायें हाथसे मालाका स्पर्श नहीं करना चाहिये। मालाको हाथ, सिर अथवा गलेमें धारण नहीं करना चाहिये—**'न धारयेत्करे मूर्ध्नि कण्ठे च जपमालिकाम्'** (मन्त्रमहार्णव)।

यदि माला उपलब्ध न हो तो करमालासे भी जप किया जा सकता है। करमालाका नियम यह है कि (रेखाचित्र-संख्या १ के अनुसार) अनामिकाके मध्यभागसे आरम्भ करके नीचेकी ओर चलते हुए कनिष्ठाके मूलसे अग्रभागतक जाय; फिर अनामिका और मध्यमाके अग्रभागपर होते हुए तर्जनीके मूलतक जाय। इस प्रकार अनामिकाके दो, कनिष्ठाके तीन, पुनः अनामिकाका एक, मध्यमाका एक और तर्जनीके तीन पर्व—

कुल दस संख्या होती है। मध्यमाके दो पर्व सुमेरु मानकर छोड़ दिये जाते हैं। इस प्रकार दस करमाला जप करनेके बाद (रेखाचित्र-संख्या २ के अनुसार) आठ संख्यातक जप करनेसे एक माला अर्थात् १०८ जप-संख्या पूर्ण हो जाती है।

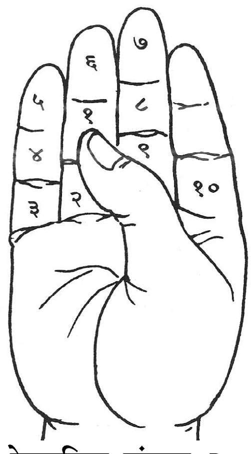


रेखाचित्र-संख्या १

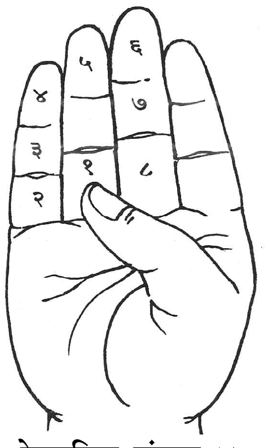


रेखाचित्र-संख्या २

शक्तिके अनुष्ठानमें करमालाका अलग नियम है (रेखाचित्र-संख्या ३)। अनामिकाके मध्यभागसे आरम्भ करके नीचेकी ओर चलते हुए कनिष्ठाके मूलसे अग्रभागतक जाय; फिर अनामिका और मध्यमाके अग्रभागपर होते हुए मध्यमाके ही मूलतक जाय और फिर तर्जनीका मूलपर्व ले। इस प्रकार अनामिकाके दो, कनिष्ठाके तीन, अनामिकाका एक, मध्यमाके तीन और तर्जनीका मूलपर्व—इस प्रकार दस संख्या पूर्ण होती है। इसके बाद (रेखाचित्र-संख्या ४ के अनुसार) आठ संख्यातक जप करनेसे एक माला अर्थात् १०८ जप-संख्या पूर्ण हो जाती है।



रेखाचित्र-संख्या ३



रेखाचित्र-संख्या ४

करमालासे जप करते समय अंगुलियाँ अलग-अलग नहीं होनी चाहिये। थोड़ी-सी हथेली मुड़ी रहनी चाहिये। सुमेरुका उल्लंघन और पर्वोंकी सन्धि (गाँठ)-का स्पर्श नहीं करना चाहिये।

***

मन्त्र-जप

जप तीन प्रकारसे किया जाता है—वाचिक, उपांशु और मानस। जो दूसरेको सुनायी दे, वह 'वाचिक' जप कहलाता है। जिसमें जीभ और होंठ तो हिलें, पर दूसरेको शब्द सुनायी न दें, वह 'उपांशु' जप कहलाता है। जिसमें जीभ और होंठ न हिलें, केवल मनसे जप किया जाय, वह 'मानस' जप कहलाता है। वाचिक

जपको अधम, उपांशु जपको मध्यम और मानस जपको उत्तम माना गया है।

जपका फल घरमें बैठकर करनेसे एकगुणा, गोशालामें सौगुणा, वन या तीर्थस्थानमें हजारगुणा, पर्वतपर दस हजार गुणा, नदीतटपर लाखगुणा और देवालयमें कोटिगुणा होता है।

दिनमें पूर्व अथवा उत्तरकी ओर मुख करके तथा रात्रिमें उत्तरकी ओर मुख करके जप आदि देवकार्य करने चाहिये—

उपविश्यासने मन्त्री प्राङ्मुखो वाप्युदङ्मुखः।
रात्रावुदङ्मुखैः कार्यं देवकार्य सदैव हि॥

(मन्त्रमहार्णव, देवता० १। ११२)

भीगे हुए वस्त्र पहनकर जप नहीं करना चाहिये। सिरपर वस्त्र रखकर अथवा सिर ढककर जप करना निषिद्ध है। जपके समय (माला पूरी हुए बिना) बातचीत नहीं करनी चाहिये। जप करते समय यदि शौच अथवा लघुशंकाका वेग हो, भूख-प्यास लगी हो तो उसको रोकना नहीं चाहिये, अपितु पहले उनसे निवृत्त होकर फिर जप करना चाहिये। कारण कि जबतक मल-मूत्रका वेग रहता है, तबतक मनुष्य अशुद्ध रहता है—**'यावत्तु धारयेद्वेगाः तावदप्रयतो भवेत्'** (वृद्धगौतमस्मृति १२। १६)।

जप करते समय आलस्य, जँभाई, नींद, छींकना, थूकना, डरना, अशुद्ध (नाभिसे नीचेके) अंगोंका स्पर्श करना, क्रोध करना, पैर फैलाना, दूसरोंसे बात करना, अपानवायुका त्याग करना आदि निषिद्ध है। यदि छींक आ जाय अथवा अशुद्ध अंगोंका स्पर्श हो जाय तो हाथ धोकर तथा आचमन करके पुनः माला प्रारम्भ करे।

मैले वस्त्र और मैले केश रखकर तथा दुर्गन्धित मुखसे जप करनेपर देवता नाराज हो जाते हैं।

गीले वस्त्रोंको पहनकर अथवा दोनों हाथ घुटनोंसे बाहर करके जो जप, होम और दान किया जाता है, वह सब निष्फल हो जाता है—

आर्द्रवासास्तु यत्कुर्याद् बहिर्जानु च यत्कृतम्।
तत्सर्वं निष्फलं कुर्याज्जपहोमप्रतिग्रहम्॥

(लिखितस्मृति ६३)

सोते हुए, बिना आसनके, चलते या खाते हुए, बिना माला ढके और सिर ढककर जो जप किया जाता है, उसकी अनुष्ठानके जपमें गिनती नहीं होती। अँधेरे स्थानमें जप नहीं करना चाहिये। जूता पहने हुए अथवा पैर फैलाकर जप करना निषिद्ध है। जप करते समय पैर फैलाना, बातें करते-करते जप करना, नख काटना, रस्सी, तिनका या डोरा तोड़ना, शरीर कँपाना, बालोंको बाँधना आदि कार्य निषिद्ध हैं।

मन्त्र-जपके समय यदि अपने ऊपर रजस्वला स्त्रीकी छाया पड़ जाय तो मन्त्रसिद्धि नहीं होती।

मन्त्रानुष्ठान सदा एकान्तमें बैठकर करना चाहिये। जहाँ अनेक लोगोंकी दृष्टि पड़े, ऐसी जगह बैठकर जप आदि नहीं करना चाहिये। यदि ऐसी जगह बैठना पड़े तो परदा लगा लेना चाहिये।

मन्त्रसिद्धिके समय आनेवाले विघ्नोंको दूर करनेके लिये देवीपुराण (महाभागवत)-के सतहत्तरवें अध्यायमें आये **'कामाख्याकवच'** का पाठ करना चाहिये*। अनुष्ठानसे पूर्व अपने मस्तकपर तिलक लगा लेना चाहिये।

रजस्वला स्त्रीको झाड़ा देनेसे मन्त्रसिद्धि नष्ट हो जाती है।

---

* इस खण्डके चतुर्थ प्रकरणमें 'कामाख्याकवच' दिया गया है।

रोगीके घर जाकर झाड़ा देनेपर उस घरका अन्न-जल एक दिनतक ग्रहण नहीं करना चाहिये।

अभिमन्त्रित जलपात्रको पृथ्वीपर नहीं रखना चाहिये, अन्यथा उसकी शक्ति पृथ्वीमें चली जाती है। उसे लकड़ीकी वस्तुके ऊपर रखना चाहिये।

अनुष्ठानकालमें साधक जिसका अन्न ग्रहण करता है, उसको अनुष्ठानका आधा फल मिल जाता है। अत: अनुष्ठान करते समय दूसरेका अन्न नहीं खाना चाहिये।

अनुष्ठानकालमें केवल गायका दूध पीकर रहनेसे शीघ्र सिद्धि मिलती है।

अनुष्ठानकालमें साधकको ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए संयमपूर्वक रहना चाहिये और भूमिपर शयन करना चाहिये।

जपमें न बहुत शीघ्रता करनी चाहिये और न बहुत विलम्ब। बहुत धीमे जप करनेसे रोग और बहुत तेज जप करनेसे तपका क्षय होता है। गाते हुए अथवा सिर हिलाते हुए भी जप नहीं करना चाहिये। पहले दिन जितने जपका संकल्प किया जाय, उतना ही जप प्रतिदिन होना चाहिये। उसे घटाना-बढ़ाना नहीं चाहिये। एक दिनका भी नागा नहीं होना चाहिये। अनुष्ठान आरम्भ कर देनेपर यदि मरणाशौच या जननाशौच हो जाय तो भी अनुष्ठान नहीं छोड़ना चाहिये।

अपवित्र अवस्थामें, लेटे हुए अथवा चलते-फिरते हुए भी मानसिक जप किया जा सकता है।

कलियुगमें निर्धारित संख्यासे चौगुना जप करनेसे सिद्धि मिलती है। परंतु मनोयोगपूर्वक जप किया जाय तो आधी जप-संख्यासे भी सिद्धि मिल सकती है।

पुस्तकमें देखकर किये गये मन्त्रजपसे सिद्धि नहीं मिलती। अत: मन्त्र कण्ठस्थ करके ही जप करना चाहिये। मनसे स्तोत्रका पाठ करना और वाणीसे मन्त्रका जप करना, दोनों ही फूटे हुए घड़ेके जलके समान निष्फल होते हैं—

मनसा यः स्मरेत् स्तोत्रं वचसा वा मनुं जपेत्।
उभयं निष्फलं देवि भिन्नभाण्डोदकं यथा॥

(कुलार्णवतन्त्र १५। ५६)

अत: स्तोत्र-पाठ बोलकर और मन्त्र-जप मनसे करना चाहिये। हनुमानचालीसाका पाठ बोलकर अथवा मनसे, दोनों प्रकारसे कर सकते हैं। अपने हाथसे लिखे अथवा ब्राह्मणेतर व्यक्तिके हाथसे लिखे स्तोत्रका पाठ नहीं करना चाहिये।

प्रणवके जपका अधिकार केवल यज्ञोपवीतधारी द्विजोंको ही है। स्त्री और शूद्रको प्रणव (ॐकार)-रहित मन्त्रका जप करना चाहिये। प्रणवयुक्त मन्त्र उनके लिये विषके समान होता है—**'विना हि प्रणवं मन्त्रः स्त्री शूद्राणां प्रकीर्तितः प्रणवेन समायुक्तास्तन्मन्त्राश्च विषोपमाः।'** (मन्त्रमहार्णव, देवता० १। ३६७)।

मन्त्र सिद्ध करनेका श्रेष्ठ समय है—दीपावलीकी रात्रि, होलीकी रात्रि, सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण।

बहते हुए जलसे शरीरका सम्पर्क होनेपर मन्त्र-यन्त्रमें विशेष शक्ति आती है। अत: नदीमें नाभिमात्र जलतक खड़े होकर जप करें। यदि ऐसा न कर सकें तो नदीके किनारे बैठकर अपने पैरोंसे नदीका स्पर्श करते हुए जप करें अथवा यन्त्र लिखें। यदि यह भी न कर सकें तो एक मूँजकी रस्सी लेकर उसका एक सिरा पैरके अँगूठेसे बाँधें और दूसरा सिरा नदीमें छोड़ दें, जिससे नदीके साथ सम्बन्ध बना रहे।

मन्त्र गुप्त रखनेकी वस्तु है—**'मन्त्रं यत्नेन गोपयेत्'** (कुलार्णवतन्त्र ११। ८८)। प्रचार करनेसे मन्त्रका प्रभाव क्षीण हो जाता है।

मन्त्रानुष्ठान उस भूमिपर करना चाहिये, जिसके नीचे कोई कमरा, गड्ढा या पोल (खोखलापन) न हो।

अनुष्ठानके अन्तमें जपका दशांश हवन, हवनका दशांश तर्पण, तर्पणका दशांश अभिषेक और यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये। होम न कर सकनेपर ब्राह्मणके लिये होमकी संख्यासे दुगुना, क्षत्रियके लिये तिगुना, वैश्यके लिये चौगुना और शूद्रके लिये पाँचगुना जप करनेका विधान है।

जपके अन्तमें आसनके नीचे जल छोड़कर मृत्तिकासहित उस जलको मस्तकसे लगाना चाहिये, अन्यथा जपके फलको इन्द्र ले लेते हैं।

***

यन्त्र-लेखन

यन्त्र वही श्रेष्ठ माना जाता है, जिसमें एकसे लेकर क्रमशः सभी अंक आयें, कोई भी अंक छूटे नहीं और कोई भी अंक दो बार न आये।

यन्त्र लिखते समय एकसे लेकर सभी अंकोंको क्रमसे लिखना चाहिये; जैसे—पहले १ लिखें, फिर २, फिर ३ आदि।

यदि कोई विशेष विधान न किया गया हो तो यन्त्र कागजपर न लिखकर भोजपत्रपर ही लिखना चाहिये और स्याही-पैनसे न लिखकर अष्टगन्धसे अनारकी कलम द्वारा ही लिखना चाहिये। सफेद चन्दन, लाल चन्दन, केसर, कुंकुंम, कपूर, कस्तूरी, अगर और तगर—ये 'अष्टगन्ध' हैं। अनारकी कलम पुष्यनक्षत्रमें उखाड़ी हुई और नौ अंगुल लम्बी होनी चाहिये।

मन्त्र-यन्त्र सिद्ध होनेके बाद भी प्रत्येक दीपावली व होलीकी रात्रिमें तथा सूर्यग्रहण व चन्द्रग्रहणके समय मन्त्रका जप तथा यन्त्रका लेखन करते रहना चाहिये। इससे मन्त्र-यन्त्र जाग्रत् रहते हैं और उनकी शक्ति बनी रहती है।

यदि किसी दु:खी व्यक्तिको यन्त्र बनाकर देना हो तो दीपावलीकी रात्रि, होलीकी रात्रि, सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहणके समय बनाया गया यन्त्र देना चाहिये। यदि ये अवसर प्राप्त न हों और जल्दी हो तो शनिवारकी रात्रिको भी यन्त्र बनाकर दे सकते हैं।

अनुष्ठानकर्ता सद्‌गुणी-सदाचारी होगा तो उसके द्वारा बनाया गया यन्त्र अधिक समयतक प्रभावशाली रहेगा।

***

पौधेकी जड़ उखाड़नेकी विधि

तान्त्रिक प्रयोगके लिये किसी पौधे अथवा वृक्षकी जड़ आदिको मनमाने ढंगसे तोड़कर ले आनेसे कार्य सिद्ध नहीं होता। विधिपूर्वक लायी हुई जड़ ही कार्यसिद्धिमें सहायक होती है।

जिस दिन पौधेकी जड़ लानी हो, उससे एक दिन पहले सायंकालमें पवित्रतापूर्वक उस पौधेके पास जाय और '**मम कार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा**' का इक्कीस बार जप करके चावल चढ़ाये। फिर 'कल प्रातः मैं आपको लेने आऊँगा, आप अपनी शक्तिसहित मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें'—ऐसा कहकर प्रणाम करे और और लौट आये।

दूसरे दिन प्रातः सूर्योदयसे पूर्व शौच-स्नानादिसे निवृत्त होकर भगवान् शंकरकी पूजा करे। फिर आमन्त्रित पौधेके पास जाकर उसे निम्नलिखित मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे—

ॐ वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादस्मात् शिवाज्ञया॥
(डामरतन्त्र)

फिर निम्नलिखित मन्त्रसे उसे प्रणाम करे—

ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्यविवर्धिनि।
बलमायुश्च मे देहि पापान् मे पाहि दूरतः॥
(डामरतन्त्र)

फिर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए मिट्टी खोदना आरम्भ करे—

ॐ येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः।
येन हीन्द्रोऽथ वरुणो येन त्वामपचक्रमे॥
तेनाहं खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना।
मा ते पाते मा निपाते मा ते तेजोऽन्यथा भवेत्॥
अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यकरी भव।
मम कार्य कृते सिद्धे ततः स्वर्ग गमिष्यति॥
(डामरतन्त्र)

फिर '**ॐ ह्रीं चण्डे हुँ फट् स्वाहा**'—यह मन्त्र बोलते हुए पौधेको जड़सहित उखाड़ ले। फिर '**ॐ ह्रौं क्षौं फट् स्वाहा**'—इस मन्त्रसे जड़को काट ले। तत्पश्चात् उस जड़को घर लाकर किसी ऊँचे स्थानपर रखे, जमीनपर नहीं। फिर उसे पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर)-से स्नान कराये और वस्त्रमें लपेटकर रख ले।

बाँबी, कुएँ, मार्ग, वृक्षके नीचे, देवमन्दिर और श्मशानमें स्थित पौधेको ग्रहण नहीं करना चाहिये। गले हुए, जले हुए और कीड़ा लगे हुए पौधेको भी ग्रहण नहीं करना चाहिये।

***

मन्त्रानुष्ठानमें सावधानी

जैसे उच्च शक्तियुक्त बिजली (हाई वोल्टेज)-के द्वारा बड़े-बड़े कार्य किये जा सकते हैं, पर थोड़ी-सी भी चूक होनेपर वह प्राण हर लेती है, वैसे ही काली, चामुण्डा, बगलामुखी, नरसिंह, पंचमुखी हनुमान् आदि उग्र देवी-देवताओंकी उपासनासे विशेष लाभ होता दीखता है, पर उसमें थोड़ी-सी भी भूल साधकका महान् अनिष्ट कर देती है। अतः साधकको यथासम्भव इनकी उपासनासे दूर रहना चाहिये। यदि इनकी उपासना करनी ही पड़े तो किसी अनुभवी एवं सद्गुणी-सदाचारी गुरुकी देख-रेखमें ही करनी चाहिये। परंतु कर्णपिशाचिनी आदि मलिन देवी-देवताओंकी उपासना तो भूलकर भी नहीं करनी चाहिये। कारण कि ये अपने उपासकोंकी सद्गति नहीं होने देते। अतः इनकी उपासना करनेवालेकी परलोकमें बड़ी दुर्गति होती है।

जिन मन्त्रोंमें इष्टदेवको अपनी कार्यसिद्धिके लिये शपथ या दोहाई दिलाई गयी हो, उनका जप नहीं

करना चाहिये। कारण कि हमारा भला इसीमें है कि इष्टदेव प्रसन्न होकर हमारा कार्य करें। शपथ देकर उन्हें कार्य करनेके लिये विवश करनेसे, उनपर दबाव डालनेसे वे प्रसन्न नहीं होते, उल्टे नाराज होते हैं, जिसका परिणाम हमारे लिये अच्छा नहीं होता।

किसी मन्त्रानुष्ठानके समय यह सावधानी रखनी चाहिये कि जबतक वह मन्त्र पूर्णरूपसे सिद्ध न हो, तबतक उसे किसी भी व्यक्तिको बताना नहीं चाहिये। राजस्थानके एक पण्डितजीने धनप्राप्तिके लिये एक लक्ष्मी-मन्त्रका अनुष्ठान आरम्भ किया। उस मन्त्रका सवा लाख जप करना था। अभी लगभग सत्तर हजार जप हुए होंगे, उनके सामने चलते-फिरते किसी भी समय अदृश्यसे सौ-सौ रुपयोंके नये नोट आकर गिरने लगे! इस बीच उन्होंने एक गरीब ब्राह्मणपर दया करके वह लक्ष्मी-मन्त्र उसको बता दिया। इसके बादसे उनके सामने सौ रुपयेके नोट गिरने बन्द हो गये! फिर उन्होंने दुबारा अनुष्ठान आरम्भ किया, पर वैसी सिद्धि पुनः नहीं हुई!

कुछ मन्त्रानुष्ठान ऐसे होते हैं, जिन्हें सिद्ध करते समय अनेक प्रकारके विघ्न उपस्थित होने लगते हैं, जिनसे भयभीत होकर उपासक बीचमें ही अनुष्ठान छोड़ देता है। इसलिये ऐसे अनुष्ठान किसी अनुभवी पुरुष अथवा गुरुके अधीनस्थ होकर ही करने चाहिये। एक व्यक्तिने हनुमान्‌जीका कोई अनुष्ठान आरम्भ किया। कुछ दिनके बाद उनकी जाँघमें भयंकर फोड़ा हो गया, पर उसने अनुष्ठान नहीं छोड़ा और उसे पूरा कर लिया। फलस्वरूप उसका अनुष्ठान सिद्ध हो गया। एक दिन एकान्तमें मन्त्रकी परीक्षाके लिये उन्होंने कुएँके पास पड़ी एक बड़ी चट्टानको एक हाथसे ही उठा लिया! एक साधुने दूरसे उन्हें ऐसा करते देख लिया और सावधान किया कि ऐसा फिर कभी मत करना!

स्त्रियोंके मनमें प्रायः यह भावना रहती है कि पति मेरे वशमें रहे। इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय है—पतिकी लगनपूर्वक सेवा करना, उसे सुख पहुँचानेकी चेष्टा करना, उससे मीठी वाणीमें बोलना आदि। जो खुद बड़ोंके वशमें होकर रहता है, वह परिणाममें स्वाधीन हो जाता है और जो दूसरोंको अपने वशमें करना चाहता है, वह परिणाममें पराधीन हो जाता है। परंतु कुछ बेसमझ स्त्रियाँ पतिको वशमें करनेके लिये तान्त्रिक क्रियाओंका सहारा लेने लगती हैं, जिनका परिणाम बहुत बुरा होता है—

कालेन पञ्चतां प्राप्ता गता नरकयातनाम्।
ताम्रभ्राष्ट्रे ह्यहं दग्धा युगानि दश पञ्च च॥

....

यान्यापि युवतिर्भूप भर्तुर्वश्यं समाचरेत्।
वृथाधर्मा दुराचारा दह्यते ताम्रभ्राष्ट्रके॥
भर्ता नाथो गतिर्भर्ता दैवतं गुरुरेव च।
तस्य वश्यं चरेद्या तु सा कथं सुखमाप्नुयात्॥
तिर्यग्योनिशतं याति कृमिकुष्ठसमन्विता।

(नारदपुराण, उत्तर० १४। ३६, ३९-४१)

'जो स्त्री अपने पतिके लिये वशीकरणका प्रयोग करती है, उसके सारे धर्म व्यर्थ हो जाते हैं और वह दुराचारिणी स्त्री नरकमें ताँबेके भाड़में पन्द्रह युगोंतक जलायी जाती है। पति ही नारीका रक्षक है, पति ही गति है तथा पति ही देवता और गुरु है। जो उसके ऊपर वशीकरणका प्रयोग करती है, वह कैसे सुख पा सकती है? वह सैकड़ों बार पशु-पक्षियोंकी योनिमें जन्म लेती और अन्तमें गलित कोढ़के रोगसे यूक्त स्त्री होती है।'

जिस व्यक्तिपर वशीकरण मन्त्रका प्रयोग किया जाय, वह पागल भी हो सकता है। अतः ऐसे प्रयोगोंसे दूर रहना चाहिये।

किसी भी स्थितिमें मारण-मन्त्रका प्रयोग नहीं करना चाहिये—

मारणञ्च न कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि।
मारणे निरयप्राप्तिरिहैव कुलसुन्दरिः॥

(शाबरचिन्तामणि १। २७)

'प्राण कण्ठतक आ जायँ तो भी मारण-प्रयोग नहीं करना चाहिये। मारण-प्रयोग करनेवाला इसी जन्ममें नरकके समान महान् कष्ट भोगता है।'

जिस क्रियामें मांस-मदिरा आदिका प्रयोग होता हो, जिसमें पशु-पक्षीकी बलि दी जाती हो, ऐसी तामसिक क्रिया कल्याणकामी मनुष्यको भूलकर भी नहीं करनी अथवा करानी चाहिये। कारण कि इसका परिणाम अनिष्टकारी होता है।

जो अशुद्ध, अपवित्र रहते हैं, उन स्त्री-पुरुषपर अभिचार मन्त्र, जादू-टोना शीघ्र असर करते हैं। अतः अपना शरीर, वस्त्र, खान-पान आदि शुद्ध एवं साफ रखने चाहिये।

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजने 'साधक-संजीवनी' (९। २५ वि०)-में लिखा है—

'देवता, पितर, ऋषि, मुनि, मनुष्य आदिमें भगवद्बुद्धि हो और निष्कामभावपूर्वक केवल उनकी पुष्टिके लिये, उनके हितके लिये ही उनकी सेवा-पूजा की जाय, तो भगवान्‌की प्राप्ति हो जाती है। इन देवता आदिको भगवान्‌से अलग मानना और अपना सकामभाव रखना ही पतनका कारण है।

भूत, प्रेत, पिशाच आदि योनि ही अशुद्ध है और उनकी पूजा-विधि, सामग्री, आराधना आदि भी अत्यन्त अपवित्र है। इनका पूजन करनेवाले इनमें न तो भगवद्बुद्धि कर सकते हैं और न निष्कामभाव ही रख सकते हैं। इसलिये उनका तो सर्वथा पतन ही होता है। इस विषयमें थोड़े वर्ष पहलेकी एक सच्ची घटना है। कोई 'कर्णपिशाचिनी' की उपासना करनेवाला था। उसके पास कोई भी कुछ पूछने आता, तो वह उसके बिना पूछे ही बता देता कि यह तुम्हारा प्रश्न है और यह उसका उत्तर है। इससे उसने बहुत रुपये कमाये।

अब उस विद्याके चमत्कारको देखकर एक सज्जन उसके पीछे पड़ गये कि 'मेरेको भी यह विद्या सिखाओ, मैं भी इसको सीखना चाहता हूँ।' तो उसने सरलतासे कहा कि 'यह विद्या चमत्कारी तो बहुत है, पर वास्तविक हित, कल्याण करनेवाली नहीं है।' उससे यह पूछा गया कि 'आप दूसरेके बिना कहे ही उसके प्रश्नको और उत्तरको कैसे जान जाते हो?' तो उसने कहा कि 'मैं अपने कानमें विष्ठा लगाये रखता हूँ। जब कोई पूछने आता है, तो उस समय कर्णपिशाचिनी आकर मेरे कानमें उसका प्रश्न और प्रश्नका उत्तर सुना देती है और मैं वैसा ही कह देता हूँ।' फिर उससे पूछा गया कि 'आपका मरना कैसे होगा—इस विषयमें आपने कुछ पूछा है कि नहीं?' इसपर उसने कहा कि 'मेरा मरना तो नर्मदाके किनारे होगा'। उसका शरीर शान्त होनेके बाद पता लगा कि जब वह (अपना अन्त-समय जानकर) नर्मदामें जाने लगा, तब कर्णपिशाचिनी सूकरी बनकर उसके सामने आ गयी। उसको देखकर वह नर्मदाकी तरफ भागा, तो कर्णपिशाचिनीने उसको नर्मदामें जानेसे पहले ही किनारेपर मार दिया। कारण यह था कि अगर वह नर्मदामें मरता तो उसकी सद्‌गति हो जाती। परंतु कर्णपिशाचिनीने उसकी सद्‌गति नहीं होने दी और उसको नर्मदाके किनारेपर ही मारकर अपने साथ ले गयी।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि देवता, पितर आदिकी उपासना स्वरूपसे त्याज्य नहीं है; परंतु भूत, प्रेत,

पिशाच आदिकी उपासना स्वरूपसे ही त्याज्य है। कारण कि देवताओंमें भगवद्भाव और निष्कामभाव हो, तो उनकी उपासना भी कल्याण करनेवाली है। परंतु भूत, प्रेत आदिकी उपासना करनेवालोंकी कभी सद्‌गति होती ही नहीं, दुर्गति ही होती है।

हाँ, पारमार्थिक साधक भूत-प्रेतोंके उद्धारके लिये उनका श्राद्ध-तर्पण कर सकते हैं। कारण कि उन भूत-प्रेतोंको अपना इष्ट मानकर उनकी उपासना करना ही पतनका कारण है। उनके उद्धारके लिये श्राद्ध-तर्पण करना अर्थात् उनको पिण्ड-जल देना कोई दोषकी बात नहीं है। सन्त-महात्माओंके द्वारा भी अनेक भूत-प्रेतोंका उद्धार हुआ है।'

विशेष—卐 कोई काम सिद्ध करना हो तो सिद्धियोगमें शुरू करना चाहिये। शुक्रवारको 'नन्दा' (१, ६, ११), बुधवारको 'भद्रा' (२, ७, १२), मंगलवारको 'जया' (३, ८, १३), शनिवारको 'रिक्ता' (४, ९, १४) और गुरुवारको 'पूर्णा' (५, १०, १५ पूर्णिमा) तिथि हो तो उसे 'सिद्धियोग' कहते हैं। पंचांगके अनुसार जिस समयतक तिथि रहे, उसी समयतक सिद्धियोग मानना चाहिये।

कोई भी अनुष्ठान आरम्भ करते समय वार, नक्षत्र तथा चन्द्रमा ठीक होने चाहिये। यह विज्ञ ब्राह्मणसे पूछ लेना चाहिये।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

द्वितीय प्रकरण

अनुष्ठान-सम्बन्धी आवश्यक बातें

१. एक ही सिद्धान्त, एक ही इष्ट, एक ही मन्त्र, एक ही माला, एक ही समय, एक ही आसन तथा एक ही स्थान हो तो जल्दी सिद्धि होती है।

२. अपना एक ही इष्ट और एक ही मन्त्र रखना चाहिये। दूसरे मन्त्रकी महिमा सुनकर अपने मन्त्रको बदलना नहीं चाहिये। कोई कुछ भी कहे, लोभमें नहीं पड़ना चाहिये। भगवान्‌के जिस नाममें आपकी श्रद्धा हो, जो नाम आपको प्यारा लगे, उसीको जपनेसे आपको लाभ होगा। भगवान्‌के किसी भी नाममें कम शक्ति नहीं है। सब नाम कल्याण करनेवाले हैं।

३. शास्त्रोंमें जिस देवता की बात आयी है, उसीको सर्वोपरि बतानेका तात्पर्य है कि एक निष्ठा हो। निष्ठा बनानेके लिये ही एककी महिमा कही है। वास्तवमें 'एकमें अनेक और अनेकमें एक' हिन्दूधर्मका खास सिद्धान्त है। गृहस्थका कर्तव्य है कि जिसका जो समय (त्यौहार, दिन) आये, उस दिन उस देवताका पूजन कर ले, पर निष्ठा एककी रखे।

४. जिस आसनपर बैठकर ध्यान आदि किया जाय, वह आसन अपना होना चाहिये, दूसरेका नहीं; क्योंकि दूसरेका आसन काममें लिया जाय तो उसमें वैसे ही परमाणु रहते हैं। इसी तरहसे गोमुखी, माला, सन्ध्याके पंचपात्र, आचमनी आदि भी अपने अलग रखने चाहिये। शास्त्रोंमें तो यहाँतक विधान आया है कि दूसरोंके बैठनेका आसन, पहननेकी जूती, खड़ाऊँ, कुर्ता आदिको अपने काममें लेनेसे अपनेको दूसरेके पाप-पुण्यका भागी होना पड़ता है।

५. कलियुगमें कोई अपना उद्धार करना चाहे तो राम तथा कृष्णकी प्रधानता है, और सिद्धियाँ प्राप्त करना चाहे तो शक्ति तथा गणेशकी प्रधानता है—'**कलौ चण्डीविनायकौ**'।

६. भक्तोंके नामसे भगवान् राजी होते हैं। शंकरजीके मन्दिरमें घण्टाकर्ण आदिका, रामजीके मन्दिरमें हनुमान्, शबरी आदिका नाम लो। शंकरजीके मन्दिरमें रामायणका पाठ करो। रामजीके मन्दिरमें शिवताण्डव, शिवमहिम्नः आदिका पाठ करो। वे राजी हो जायँगे!

७. हनुमान्‌जीको प्रसन्न करना हो तो उन्हें रामायण सुनाओ। रामायण सुननेसे वे बड़े राजी होते हैं।

८. हनुमान्‌जीका नाम लेनेसे हनुमान्‌जी इतने प्रसन्न नहीं होते, जितने राम-नाम लेनेसे प्रसन्न होते हैं। राम-नाम सुनानेसे हनुमान्‌जी बड़े राजी होते हैं। इसलिये उनको राम-नाम सुनाओ।

९. अपने कल्याणकी इच्छा हो तो 'पंचमुखी हनुमान्' अथवा 'वीर हनुमान्' की उपासना न करके 'दास हनुमान्' की उपासना करनी चाहिये।

१०. शिवजीका मन्त्र रुद्राक्षकी मालासे जपना चाहिये, तुलसीकी मालासे नहीं।

११. हनुमान्‌जी और गणेशजीको तुलसी नहीं चढ़ानी चाहिये।

१२. गणेशजी बालरूपमें हैं। अतः उन्हें लड्डू और लाल वस्त्र बड़े प्रिय लगते हैं। गणेशजीकी सूँड़ दायीं तरफ मुड़ी होनी चाहिये।

१३. गणेशजी बुद्धिके अधिष्ठाता हैं; बुद्धि देनेवाले हैं। इनका स्मरण करनेसे बुद्धि तेज होती है।

१४. देवीकी उपासना करनेवाले पुरुषको कभी स्त्रीपर क्रोध नहीं करना चाहिये। क्रोध करनेसे उस स्त्रीका अनिष्ट होगा; वह पागल हो जायगी अथवा मर जायगी।

१५. अगर देवीकी उपासना करनेवाले देवीकी कृपा चाहते हों तो वे कुँआरी छोटी-छोटी कन्याओंको भोजन कराएँ, मिठाई खिलाएँ। इससे देवी बहुत प्रसन्न होती है।

१६. जहाँतक शंख और घण्टेकी आवाज जाती है, वहाँतक नीरोगता, शान्ति, धार्मिक भाव फैलते हैं।

१७. घरमें एक बित्तेसे अधिक ऊँची भगवान्‌की प्रतिमा नहीं रखनी चाहिये, चाहे उसका पूजन करें या न करें। यदि प्रतिमामें भगवद्‌बुद्धि है तो उसे सजावटके लिये भी घरमें न रखें। अगर उसमें भगवद्‌बुद्धि नहीं है तो वह एक खिलौनेकी तरह है, उसे रखनेमें दोष नहीं है; जैसे, ऊँचा मकान होनेका दोष नहीं लगता। अगर घरमें एक बित्तेसे अधिक बढ़ी प्रतिमा हो तो उसे किसी मन्दिरमें पुजारीको दे देना चाहिये।

१८. शिवलिंगपर चढ़ा पदार्थ ही निर्माल्य अर्थात् त्याज्य है। जो पदार्थ शिवलिंगपर नहीं चढ़ा, वह निर्माल्य नहीं है। द्वादश ज्योतिर्लिंगोंपर चढ़ा पदार्थ भी निर्माल्य नहीं है।

१९. अपने खानेके लिये कोई चीज बनाते हैं कि आज सरदी है, हलुआ बनाओ, तो वह भगवान्‌के भोग नहीं लगता। वह खुदके ही भोग लगता है! अपने खानेकी नीयतसे बनाया पदार्थ अशुद्ध होता है।

२०. परिवारमें बच्चेके पैदा होनेपर जो सूआ (जननाशौच) लगता है, उसमें मन्दिरमें जा सकते हैं, सन्ध्या कर सकते हैं, घरके ठाकुरजीकी पूजा कर सकते हैं, भोग लगा सकते हैं, घरके शिवलिंगपर जल चढ़ा सकते हैं, रामायण आदिको छू सकते हैं तथा पाठ कर सकते हैं। परिवारमें सूआ-सूतक सात पीढ़ियोंतक लगता है।

२१. सूआ-सूतकमें भी गीता-रामायणका पाठ कर सकते हैं, पर (उन दिनोंके लिये) अपनी पुस्तक दूसरी रखें। माला भी दूसरी रखें।

२२. सूतकमें भी भगवान् सूर्यको अर्घ्य दे सकते हैं। अर्घ्यके लिये सूतक-पातक निषेध नहीं करता।

२३. घरमें जिस मूर्तिकी प्राण-प्रतिष्ठा हुई हो, उसीमें सूतक लगता है। अत: उसकी पूजा किसी ब्राह्मणसे अथवा विवाहित बहन-बेटीसे करानी चाहिये। परंतु जिस मूर्तिकी प्राण-प्रतिष्ठा नहीं की गयी हो, उसमें सूतक नहीं लगता। कारण कि प्राण-प्रतिष्ठाके बिना ठाकुरजी घरके सदस्यकी तरह ही हैं; अत: सूतकमें भी उनको भोग लगा सकते हैं और अपने हाथसे उनकी पूजा भी कर सकते हैं।

२४. अपने घरमें रखे ठाकुरजीकी प्राण-प्रतिष्ठा नहीं करानी चाहिये।

२५. घरमें जो मूर्ति हो, उसका चित्र अपने पास रखें। कभी बाहर जाना पड़े तो उस चित्रकी पूजा करें। किसी कारणवश मूर्ति खण्डित हो जाय तो उस अवस्थामें भी उस चित्रकी ही पूजा करें।

२६. उपासक भगवान्‌की मूर्तिको तो स्नान करा सकता है, पर चित्रको स्नान नहीं करा सकता; क्योंकि स्नान करानेसे कागज गल जायगा। अत: चित्रको स्नान कराना हो तो उसके सामने एक दर्पण रख दे और उस दर्पणपर पड़नेवाले प्रतिबिम्बको स्नान कराये, तिलक आदि करे।

२७. भगवान्‌के प्रसादमें भी शुद्धि-अशुद्धिका ध्यान रखना चाहिये। अगर उसमें अशुद्धि हो तो प्रसादका कण उठाकर सिरपर धारण कर ले। यह प्रसादका आदर हो गया।

२८. कभी मनमें अशान्ति, हलचल हो तो पन्द्रह-बीस मिनट बैठकर राम-नामका जप करो अथवा गीताके **'आगमापायिनोऽनित्याः'** (१५। ७)—इस पदका जप करो तो हलचल मिट जायगी।

२९. कोई आफत आ जाय तो दस-पन्द्रह मिनट बैठकर नामजप करो और प्रार्थना करो तो रक्षा हो जायगी। सच्चे हृदयसे की गयी प्रार्थनासे तत्काल लाभ होता है।

३०. गृहस्थको केवल 'ॐ' का जप नहीं करना चाहिये।

३१. कोई काम करना हो तो भगवान्‌को याद करके, चरणोंमें नमस्कार करके करो तो काम हो जायगा।

३२. मुखसे नामजप करना और नाम लिखना—दोनोंमें नाम लिखना बढ़िया है। कारण कि लिखनेमें हाथ भी लग जाता है, नेत्र भी लग जाते हैं और मन भी लग जाता है। जितना मन लगेगा, उतना साधन बढ़िया होगा। जितना आपका सम्बन्ध अधिक होगा, उतनी उपासना तेज हो जायगी।

३३. प्रह्लादजीकी तरह एक नामजपमें लग जाय तो कोई जादू-टोना, अभिचार, मूठ आदि काम नहीं करते।

३४. रामरक्षास्तोत्र, हनुमानचालीसा, सुन्दरकाण्डका पाठ करनेसे अनिष्ट मन्त्रोंका (मारण-मोहन आदि तान्त्रिक प्रयोगोंका) असर नहीं होता। परंतु इसमें बलाबल काम करेगा।

३५. कार्यसिद्धिके लिये अपने इष्टदेवसे प्रार्थना करना तो ठीक है, पर उनपर दबाव डालना, उनको शपथ या दुहाई देकर कार्य करनेके लिये विवश करना, उनसे हठ करना सर्वथा अनुचित है। उदाहरणके लिये, 'बजरंगबाण' में हनुमान्‌जीपर ऐसा ही अनुचित दबाव डाला गया है; जैसे—***'इन्हें मारु तोहि सपथ राम की', 'सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै', 'जनकसुता हरिदास कहावौ। ता की सपथ विलंब न लावौ॥', 'उठ उठ चलु तोहि राम दोहाई'***। इस तरह दबाव डालनेसे इष्टदेव प्रसन्न नहीं होते, उल्टे नाराज होते हैं, जिसका पता बादमें लगता है। इसलिये मैं 'बजरंगबाण' के पाठके लिये मना किया करता हूँ। 'बजरंगबाण' गोस्वामी तुलसीदासजीकी रचना नहीं है। वे ऐसी रचना कर ही नहीं सकते। इसलिये कोई बजरंगबाणका पाठ करता हो तो उसे छोड़कर उसकी जगह हनुमानचालीसाका पाठ आरम्भ कर देना चाहिये।

३६. किसी स्तोत्रका माहात्म्य हरेक बार पढ़नेकी जरूरत नहीं है। आरम्भमें और अन्तमें एक बार पढ़ लेना चाहिये।

३७. नल-दमयन्तीकी कथा कलियुगका प्रभाव दूर करनेवाली है। इसलिये हरेक भाई-बहनको नल-दमयन्तीकी कथा पढ़नी चाहिये। इससे बुद्धि शुद्ध होगी तथा कलियुगका असर नहीं होगा। यह श्लोक याद कर लेना चाहिये—

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्॥

(महाभारत वन० ७९। १०)

३८. सृष्टिकी प्रत्येक वस्तुका एक मालिक होता है, जिसे 'अधिष्ठातृदेवता' कहते हैं। कुएँका भी अधिष्ठातृदेवता होता है। यदि कुआँ चलानेसे पहले उसके अधिष्ठातृदेवताका पूजन किया जाय, उसको प्रणाम किया जाय अथवा उसका नाम लिया जाय तो वह कुएँकी विशेष रक्षा करता है, कुएँके कारण कोई नुकसान नहीं होने देता। ऐसे ही वृक्ष आदिका भी अधिष्ठातृदेवता होता है। रात्रिमें किसी वृक्षके नीचे रहना पड़े तो उसके अधिष्ठातृ-देवतासे प्रार्थना करें कि 'हे वृक्षदेवता! मैं आपकी शरणमें हूँ, आप मेरी रक्षा करें' तो रात्रिमें रक्षा होती है। जंगलमें शौच जाना हो तो वहाँपर ***'उत्तम भूमि मध्यम काया, उठो देव मैं जंगल आया'***—ऐसा बोलकर शौच जाना चाहिये, नहीं तो वहाँ रहनेवाले देवता तथा भूत-प्रेत कुपित होकर हमारा अनिष्ट कर सकते हैं।

३९. कोई भी काम करें तो भगवान्‌को याद करके करें। कहीं भी जाना हो तो भगवान्‌का नाम लेकर, चार बार '**नारायण**' नामका उच्चारण करके घरसे निकलें। कुछ भी लिखें तो पहले ऊपर भगवान्‌का नाम लिखें। जिस पत्रके ऊपर भगवान्‌का नाम नहीं लिखा हो, वह बिना सिरवाले पिशाचकी तरह है!

४०. भगवान्‌का चित्र अथवा भगवान्‌का नाम पैरोंके नीचे नहीं आना चाहिये। इतना ही नहीं, अक्षर भी पैरोंके नीचे नहीं आने चाहिये।

४१. देवनागरी अक्षरोंका विशेष आदर करना चाहिये। इन अक्षरोंमें धर्मशास्त्र, वेद, पुराण, स्मृतियाँ भरी हुई हैं! ऐसा दूसरी लिपियोंमें नहीं है। देवनागरी अक्षरोंका जितना आदर है, उतना औरोंका नहीं है। इसलिये इनका आदर विशेष होना चाहिये। पुस्तकके ऊपर बैठना, छपा हुआ कागज (अखबार आदि) नीचे बिछाकर उसके ऊपर बैठना सरस्वतीका निरादर है।

४२. एक सिद्धान्त है कि जो शास्त्रोंका, पुराणोंका, वेदोंका आदर करता है, उसका स्वयंका आदर होता है। इनका निरादर करनेसे स्वयंका ही निरादर होता है, जिसका परिणाम बहुत खराब होता है। इसलिये गीता, रामायण, सहस्रनाम, हनुमानचालीसा आदिको नीचे नहीं रखना चाहिये। नीचे रखना ही हो तो कपड़ा रखकर उसपर रखो, नहीं तो अपनी गोदमें रखो, हाथोंमें रखो।

४३. यदि आपकी सामर्थ्य नहीं हो तो भगवान्‌के पूजन, हवन आदिके लिये रुपये आदि माँगना नहीं चाहिये, प्रत्युत जो अपने पासमें है, उसीसे पूजन करना चाहिये अथवा मनसे पूजन करना चाहिये। वस्तुओंकी आवश्यकता है ही नहीं!

४४. अगर जनेऊ धारण नहीं किया हो तो सन्ध्या तथा गायत्रीका जप नहीं करना चाहिये। लोग समझते हैं कि हम गायत्रीके जपसे बड़े हो जायँगे। पर वे गायत्री-जपसे कभी बड़े नहीं होंगे! गायत्री-जप द्विजातिके लिये टैक्स है। टैक्स देना क्या बड़ी बात है? टैक्स देनेवाला बड़ा आदमी नहीं होता। भगवान्‌का भजन करनेवाला बड़ा होता है।

४५. स्त्रीको गायत्री-मन्त्रका जप नहीं करना चाहिये। आजकल गायत्री-मंत्रका जप वे स्त्रियाँ करती हैं, जिनके भीतर अभिमान है कि हम छोटे क्यों रहें? अपना कल्याण चाहनेवाली स्त्री गायत्री-जप नहीं करेगी। जिसके भीतर अभिमान है, वह पण्डित भी हो तो नरकोंमें जायगा। भगवन्नामका जप गायत्री-जपसे कम नहीं है। भगवन्नाम-जपमें सभीका समान अधिकार है। पर जिसने यज्ञोपवीत धारण न किया हो, ऐसे ब्राह्मणको भी गायत्री-जपका अधिकार नहीं है*।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

—'एक सन्तकी अमूल्य शिक्षा' तथा 'सागरके मोती' पुस्तकसे

प्रश्नोत्तर

प्रश्न—आजकल मन्त्रोंकी सिद्धि न होनेमें क्या कारण है?

स्वामीजी—मनमें परस्त्रीका चिन्तन करनेसे मनमें वैसी शक्ति नहीं रहती। इसलिये कहा है—

जिह्वा दग्धा परान्नेन करौ दग्धौ प्रतिग्रहात्।
मनो दग्धं परस्त्रीभिः कार्यसिद्धिः कथं भवेत्॥

(कुलार्णव० १५। ७७)

'दूसरेका अन्न खानेसे जिसकी जीभ जल गयी है, दान लेनेसे जिसके हाथ जल गये हैं और दूसरेकी

स्त्रीका चिन्तन करनेसे जिसका मन जल गया है, उसे सिद्धि कैसे मिल सकती है?'

दूसरी बात, आजकल तन्त्रविद्याके जानकार गुरु भी प्रत्यक्षमें नहीं मिलते। उत्तराखण्डमें सैकड़ों वर्षोंकी आयुवाले ऐसे महापुरुष विद्यमान हैं। परंतु अपनी सच्ची, तीव्र लगन हो तो वे स्वयं आकर मिलते हैं।

प्रश्न—किसी मन्त्र, तन्त्र अथवा यन्त्रका प्रभाव कबतक रहता है?

स्वामीजी—यदि अनुष्ठानकर्ता संयमी है, श्रेष्ठ आचरण तथा भाववाला है तो उसके द्वारा प्रयुक्त किये गये, बनाये गये यन्त्र आदि अधिक समयतक प्रभावशाली रहते हैं।

प्रश्न—कलियुगमें मन्त्रजपकी संख्या चार गुनी अधिक होनी चाहिये या कम?

स्वामीजी—मन लगाकर जप करे तो आधी जप-संख्यासे ही सिद्धि हो जाती है। अगर मन न लगाये तो चार गुना अधिक जप करनेसे सिद्धि होती है।

प्रश्न—स्वामीजी, आपने कहा कि भागवतमें राम और कृष्णकी उपासना कलियुगमें मुख्य बतायी है; परंतु 'कलौ चण्डीविनायकौ' भी तो कहा है?

स्वामीजी—कलियुगमें कोई अपना उद्धार करना चाहे तो राम तथा कृष्णकी प्रधानता है, और सिद्धियाँ प्राप्त करना चाहे तो शक्ति तथा गणेशकी प्रधानता है।

प्रश्न—शाबर मन्त्रोंकी रचना कैसे होती है?

स्वामीजी—आरम्भमें भगवान् शंकरने अनेक भाषाओंमें असंख्य शाबरमन्त्रोंकी रचना की थी—***'साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा'*** (मानस, बाल० १५। ३)। पीछे सिद्ध महापुरुषोंने अपने तपोबलसे उनकी रचना की है। उनके तपोबलसे उनके बनाये शाबरमन्त्र कार्यसिद्धि करते हैं। जैसे उनके शाप अथवा वरदानमें शक्ति होती है, ऐसे ही उनके द्वारा रचित मन्त्रोंमें भी शक्ति होती है।

प्रश्न—हनुमान्‌जी आदिका अनुष्ठान करते समय कोई मनुष्य गलती कर देता है तो वे उसका अनिष्ट क्यों करते हैं? वे तो कृपा करनेवाले हैं!

स्वामीजी—इसका कारण है—सकामभाव। एक तो मनुष्य उनको न चाहकर भोगोंको चाहता है अर्थात् सकामभाव रखता है, और फिर विधिमें गलती करता है, इसीलिये अनिष्ट होता है।

प्रश्न—हनुमान्‌जीका अनुष्ठान करनेसे कई उपासकोंको बड़ा भय लगता है, कई पागल हो जाते हैं, इसका क्या कारण है?

स्वामीजी—नीयतमें गड़बड़ी होनेसे, कामना होनेसे अथवा विधिमें त्रुटि होनेसे ऐसा हो सकता है,

---

* **सावित्रीं प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति, ... सावित्रीं लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यदि जानीयात्स्त्रीशूद्रः स मृतोऽधो गच्छति तस्मात्सर्वदा नाचष्टे यद्याचष्टे स आचार्यस्तेनैव मृतोऽधो गच्छति॥** (नृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषद् १। ३)

'गायत्री, प्रणव तथा यजुःस्वरूप महालक्ष्मी मन्त्रका उपदेश ज्ञानिजन स्त्रियों और शूद्रोंको नहीं देना चाहते। .... गायत्री, प्रणव और यजुर्वेदमय महालक्ष्मी मन्त्रको यदि स्त्री और शूद्र जान लें तो वे मरनेपर अधोगतिको प्राप्त होते हैं अर्थात् नरकों और नीची योनियोंमें गिरते हैं। इसलिये सदा ही सावधान रहकर उनको इन मन्त्रोंका उपदेश न दे। यदि कोई उन्हें उपदेश देता है तो वह आचार्य भी उन्हींके साथ मरनेपर अधोगतिको प्राप्त होता है।'

अन्यथा हनुमान्‌जी तो बड़े दयालु हैं! वे भक्त हैं, सन्त हैं!

प्रश्न—एक व्यक्तिको प्रेतबाधा है। वह प्रेत उसे नामजप, पाठ आदि नहीं करने देता। तो क्या प्रेत साधन-भजनमें बाधा डाल सकता है? इससे बचनेका उपाय क्या है?

स्वामीजी—साधकके भीतर जिस अंशमें संसारकी मुख्यता है, उसी अंशमें प्रेत बाधा डाल सकता है। जिस अंशमें भगवान्‌की मुख्यता है, उस अंशमें वह बाधा नहीं डाल सकता। जैसे, 'भगवान् मेरे हैं, मैं भगवान्‌का हूँ'—इस अपनेपनमें, भगवान्‌की प्रियतामें वह बाधा नहीं डाल सकता।

इस बाधासे बचनेका उपाय है—'हे मेरे नाथ! हे मेरे प्रभो!'—ऐसा पुकारे। दूसरे व्यक्तिसे नारायणकवच, हनुमानचालीसा आदि सुने और उसके द्वारा अभिमन्त्रित जल पीये। सत्संग करनेसे भी फर्क पड़ता है। अतः सत्संग, कीर्तनके समय वह मेरे सामने बैठे। कीर्तन करनेसे प्रेत भागता है। हनुमानचालीसाके पाठसे प्रेतपर हनुमान्‌जीकी मार पड़ती है। जो पति अपनी पत्नीको कीर्तन, पाठ-पूजा नहीं करने देते, वे भी प्रेत ही हैं!

प्रश्न—कोई स्त्री या पुरुष मन्त्रके द्वारा दूसरेको अपने वशमें करके उससे कोई अनुचित कार्य करवाता है तो इसका दोष वशीभूत व्यक्तिको लगेगा या नहीं?

स्वामीजी—ज्यादा दोष तो वशमें करनेवालेको लगेगा, वशीभूत व्यक्तिको कम लगेगा। वास्तवमें वशीकरण मन्त्र उसीपर चलते हैं, जिसके भीतर कामना है। जितनी कामना होगी, उतना दोष लगेगा। अगर कोई कामना न हो तो उसपर मन्त्र नहीं चल सकता; जैसे-पत्थरपर जोंक नहीं लग सकती।

प्रश्न—क्या स्त्री हनुमानचालीसाका पाठ कर सकती है?

स्वामीजी—हाँ, कर सकती है, पर अशुद्ध अवस्थामें पतिको पाठ करना चाहिये।

प्रश्न—हनुमानचालीसाका पाठ बोलकर करें या मानसिक?

स्वामीजी—बोलकर पाठ करना अच्छा है। चलते-फिरते भी बोलकर पाठ कर सकते हैं।

प्रश्न—चलते-फिरते बोलकर पाठ करनेसे क्या अशुद्धि नहीं लगेगी?

स्वामीजी—नहीं लगेगी।

प्रश्न—कोई हमारे विरुद्ध तान्त्रिक प्रयोग (अभिचार आदि) करे तो उससे बचावका क्या उपाय है?

स्वामीजी—भगवान्‌का भजन करे। भजन करनेवालेपर अभिचार नहीं चलता; जैसे—प्रह्लादजीपर कोई प्रयोग नहीं चला। हनुमानचालीसाका पाठ करनेसे भी प्रयोग नहीं चलता। हनुमानचालीसाका पाठ स्त्री-पुरुष दोनों कर सकते हैं।

प्रश्न—मारण-मोहनादि तान्त्रिक प्रयोगसे बचाव कैसे करें?

स्वामीजी—इनसे हनुमान्‌जी बचाते हैं; अतः हनुमानचालीसा, सुन्दरकाण्ड या रामायणका पाठ करें।

प्रश्न—स्त्रीको शंकरका पूजन करना चाहिये या नहीं?

स्वामीजी—स्त्रीको शिवलिंगका पूजन तथा स्पर्श नहीं करना चाहिये। उसे शिवमूर्तिका पूजन करना चाहिये।

प्रश्न—क्या टोने-टोटके होते हैं?

स्वामीजी—हाँ, होते हैं।

प्रश्न—उनका असर विफल करनेके लिये क्या करना चाहिये?

स्वामीजी—हनुमानचालीसा, सुन्दरकाण्ड आदिका पाठ करना चाहिये।

प्रश्न—पूजा-स्थलमें अनेक देवी-देवताओंकी मूर्तियाँ या चित्र रखना उचित है क्या?

स्वामीजी—रख सकते हैं, पर अपना इष्ट एक ही होना चाहिये।

प्रश्न—आजकल सात्त्विक अनुष्ठानका उतना असर नहीं दीखता, जितना तामस अनुष्ठानका, क्या कारण है?

स्वामीजी—अभी भगवान्‌ने कलियुगको राज्य दिया है। कलियुग तामसकी वृद्धिमें सहायक होता है।

प्रश्न—अनुष्ठान करते समय दीपक क्यों जलाते हैं?

स्वामीजी—घीका दीपक जलानेसे, गंगाजीके तटपर बैठकर जप करनेसे आवरण (मोह)-का नाश होता है। श्रद्धालुको ज्यादा लाभ होता है। तर्क करनेवालेका हृदय कठोर होता है। भाव तेज हो तो दीपक आदिकी भी जरूरत नहीं।

प्रश्न—मन्त्र-जपमें दीक्षाकी आवश्यकता है या नहीं?

स्वामीजी—शिव, हनुमान् आदि जिसमें साधककी रुचि हो अथवा जिनके मन्त्रका वह जप करता हो, उन्हींको अपना गुरु मान लेना चाहिये। अगर उसकी दृष्टिमें कोई भगवत्प्राप्त महात्मा हो तो उनसे दीक्षा लेनी चाहिये। वास्तवमें सांसारिक कामनाओंकी सिद्धिके लिये दीक्षाकी जरूरत है। भगवत्प्राप्तिके लिये दीक्षा लेनेकी जरूरत नहीं है।

प्रश्न—मन्त्र-जपसे पहले उसके (दोष-निवारणके लिये) दस संस्कार करनेकी जरूरत है या नहीं?

स्वामीजी—मन्त्रका संस्कार करनेकी जरूरत सांसारिक कामना-पूर्तिके लिये है। भगवत्प्राप्तिके लिये इसकी जरूरत नहीं है।

प्रश्न—अपने हाथसे लिखे स्तोत्रका पाठ करनेका निषेध आता है, फिर क्या करना चाहिये?

स्वामीजी—किसीसे लिखवा लेना चाहिये। कण्ठस्थ होनेपर फिर पढ़नेकी जरूरत नहीं।

प्रश्न—यदि अपने हाथसे लिखे स्तोत्रको कण्ठस्थ करें तो?

स्वामीजी—कोई आपत्ति नहीं है।

प्रश्न—स्तोत्रके आदि और अन्तमें जो संवाद या माहात्म्य आता है, उसे पढ़ना आवश्यक है क्या?

स्वामीजी—पहले एक बार उस संवाद या माहात्म्यको पढ़कर समझ लें, फिर केवल स्तोत्रका ही पाठ करते रहें। हनुमानचालीसाका, स्तोत्रका पाठ मन-ही-मन भी कर सकते हैं। स्तोत्रका माहात्म्य प्रत्येक बार पढ़नेकी जरूरत नहीं। आरम्भ और अन्तमें एक बार पढ़ लें।

प्रश्न—'गं गणपतये नमः' के आदिमें 'ॐ' लगाना चाहिये या नहीं?

स्वामीजी—अगर यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण न किया हो तो 'ॐ' लगानेकी आवश्यकता नहीं है। जिसका श्रुतियोंमें अधिकार है, उसीका ॐकारमें अधिकार है।

प्रश्न—कामके नाशके लिये कोई अनुष्ठान हो तो बतायें।

स्वामीजी—एक अनुष्ठान है, जो मैंने करवाया भी है।

मन करि बिषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौं एहिं सर परई॥

(मानस, बाल० ३५। ४)

—इसका प्रत्येक चौपाईमें सम्पुट लगाकर श्रीरामचरितमानसके नौ पाठ करें।

प्रश्न—**घरमें ठाकुरजीका मन्दिर है। भगवान्‌का मुख पूर्व दिशाकी ओर है। हम बैठते हैं तो हमारा मुख पश्चिम दिशाकी ओर होता है। यह उचित है क्या?**

स्वामीजी—कोई हर्ज नहीं। आप दिशा मत देखो, प्रत्युत यह देखो कि मैं भगवान्‌के सम्मुख हूँ।

प्रश्न—**क्या तुलसीकी मालासे शिवजीके मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' का जप कर सकते हैं?**

स्वामीजी—नहीं। शिवजीके मन्त्रका जप रुद्राक्षकी मालासे करना चाहिये। वैष्णव मन्त्रका जप करनेके लिये तुलसीकी माला है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

—'रहस्यमयी वार्ता' पुस्तकसे

***

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

विविध अनुष्ठान

सर्वविध उन्नतिके लिये

卐 प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदयसे पहले, मध्याह्नमें भोजनसे पहले तथा सायंकालमें सूर्यास्तसे पहले इसका पाठ करनेसे सर्वविध उन्नति होती है।

एक बार इन दो श्लोकोंसे नमस्कार करें—

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

एक बार इन नौ श्लोकोंका पाठ करें—

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्॥
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि॥
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव॥
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥

एक बार इन दो श्लोकोंका पाठ करें—

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं-
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्ज्वलकान्तिकान्तं -

विघ्नेश्वर सकलविघ्नहरं नमामि॥
विघ्नध्वान्तनिवारणैकतरणिर्विघ्नाटवी हव्यवाड्
विघ्नव्यालकुलोपमर्दगरुडो विघ्नेभपञ्चाननः।
विघ्नोत्तुङ्गगिरिप्रभेदनपविर्विघ्नाम्बुधेर्वाडवो -
विघ्नाघौघघनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः॥

बारह बार इन तीन श्लोकोंका पाठ करें—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वाद्वशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

बारह अथवा चौवन बार इन पाँच श्लोकोंका पाठ करें—

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्त्यावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
नास्ति विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिं लभेद् ध्रुवम्॥

इस मन्त्रकी कम-से-कम एक माला जप करें—

ॐ गँ गँ गँ गणपतये नमः।

बारह अथवा चौवन बार इन पाँच श्लोकोंका पाठ करें—

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्त्यावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।

एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
नास्ति विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिं लभेद् ध्रुवम्॥

एक बार इन नौ श्लोकोंका पाठ करें—

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्॥
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि॥
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव॥
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥

अन्तमें एक बार इन सात श्लोकोंका पाठ करें—

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देवं परिपूर्णं तदस्तु मे॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मनावानुसृतस्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

आवश्यक निर्देश—

१—पाठके समय लाल आसनपर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठना चाहिये।

२—वस्त्र भी लाल हों तो उत्तम है, अन्यथा दाहिने कन्धेपर लाल गमछा रख लेना चाहिये।

३—मन्त्रका जप रुद्राक्षकी मालासे करना चाहिये।

४—जपके समय गलेमें रुद्राक्षकी माला धारण कर लेनी चाहिये।

५—प्रत्येक चतुर्थीको व्रत रखना चाहिये और गणेशजीको लड्डूका भोग लगाना चाहिये।

***

सर्वार्थसिद्धिके लिये

(१) 卐 श्रीहनुमान्जीके चित्रको लाल वस्त्र धारण कराके लाल आसनपर विराजमान करें। सामने भोग-सामग्री रखें—चनेकी दाल और गुड़। दाल कच्ची हो और गंगाजल अथवा कुएँके जलसे धोयी हुई हो। गायके घीका दीपक जलाकर चित्रके दाहिनी ओर रखें। फिर 'श्रीहनुमान्चालीसा' के एक सौ आठ पाठ करें। पाठ समाप्त होनेपर भोग-सामग्रीको बच्चोंमें अथवा बन्दरोंमें बाँट दें।

पाठके समय अपने वस्त्र तथा आसन भी लाल हों तो उत्तम है। यदि एक समय पूरा पाठ न कर सकें तो प्रातः-सायं आधा-आधा पाठ भी कर सकते हैं।

—इस प्रकार बिना नागा किये एक सौ आठ दिनतक प्रतिदिन एक सौ आठ पाठ करें। अनुष्ठान-कालमें पूर्ण संयम रखें।

(२) *पंजाबी सिद्ध मन्त्र*— **ॐ अंजनी के नंद दुख दण्ड से दूर कर, रखाँ मैं टेक तेरी, ऐसों भवन खंड में रख लीजो लाज मेरी, जाँपर पीड़ परे ताँपर धीर धरो तुम जैसों लखबीर॥**

—पहले हनुमान्जीके आगे धूप-दीप करके हनुमानचालीसाका पाठ करें। फिर '**ॐ नमो आदेश गुराँजी को आदेश**'—इस मन्त्रसे गुरुको प्रणाम करें। फिर उपर्युक्त मन्त्रका यथाशक्ति (कम-से-कम एक माला) जप करें। अन्तमें पुनः '**ॐ नमो आदेश गुराँजी को आदेश**'—इस मन्त्रसे गुरुको प्रणाम करें।

यह अनुष्ठान शुक्लपक्षमें आरम्भ करें। दोपहर १ से ३ बजेतक अथवा रात्रि १० बजेके बाद जप करें। प्रत्येक मंगलवार हनुमान्जीको प्रसाद चढ़ायें। ऐसा चालीस दिनतक करें।

(३) 卐 प्रातःकाल स्नानादिसे शुद्ध होकर आसनपर बैठें। अपने सामने एक चौकीपर गणेशजीकी प्रतिमा या चित्र विराजित करके उनकी धूप-दीपादिसे पूजा करें। घीका दीपक जलाकर गणेशजीके दायीं ओर रख दें। फिर 'संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्' के इक्कीस पाठ करके '**ॐ गँ गणपतये नमः**'—इस मन्त्रकी इक्कीस माला जप करें। जपके बाद पुनः 'संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्' के इक्कीस पाठ करें।

—यह इक्कीस दिनका अनुष्ठान है। इसे करते समय इक्कीस दिन व्रत रखें और एक समय फलाहार लें। इसके साथ ही ब्रह्मचर्यका पालन करें, किसी स्त्रीसे बातचीत न करें, नीचे सोयें और असत्यभाषण न करें।

(४)卐 प्रतिदिन आधी रातको (ग्यारहसे दो बजेके बीच) ईशानकोणकी तरफ मुख करके बैठ जायँ और रुद्राक्षकी मालासे **'ॐ नमः शिवाय'** मन्त्रकी १२० माला जप करें। यदि गंगाजीका तट हो तो अपने दोनों पैर उनके बहते हुए जलमें डालकर जप करना अधिक उत्तम है। इस तरह छः मास लगातार करनेसे अभीष्ट कार्य सिद्ध हो जाता है। अनुष्ठानकालमें प्रदोषव्रत भी करना चाहिये।

(५)卐 कोरे कागजपर लाल स्याहीसे सवा लाख राम-नाम लिखनेसे सभी कामनाएँ सिद्ध होती हैं। कागजके एक ही तरफ लिखें। कागज सादा हो, उसपर रेखाएँ न हों।

(६) इस चौपाईका सम्पुट लगाकर सुन्दरकाण्ड अथवा हनुमानचालीसाका पाठ करें—

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होई तात तुम्ह पाहीं॥

(मानस, किष्किन्धा० ३०। ३-४)

(७) विपत्तिनाशपूर्वक सर्वसम्पत्तिकी प्राप्तिके लिये इस मन्त्रका सोलह लाख जप करें—

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

(८) **ॐ रां श्रीं ऐं नमो भगवते वासुदेवाय ममानिष्टं नाशय नाशय मां सर्वसुखभाजनं सम्पादय सम्पादय हूं हूं श्रीं ऐं फट् स्वाहा।**

—इस मन्त्रका प्रतिदिन १०८ बार जप करना चाहिये।

(९) इस मन्त्रका २१००० बार जप करना या कराना चाहिये तथा दशांशके लिये २१०० जप अथवा हवन करना चाहिये—

नमः सर्वनिवासाय सर्वशक्तियुताय ते।
ममाभीष्टं कुरूष्वाशु शरणागतवत्सत॥

(१०) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते राधाप्रियाय राधारमणाय गोपीजनवल्लभाय ममाभीष्टं पूरय पूरय हुं फट् स्वाहा।**

—इस मन्त्रको कदम्बकाष्ठकी छोटी पीठिका (चौकी)-पर अष्टगन्ध अथवा कपूर और केशरसे अनारकी कलमसे लिखकर षोडशोपचारसे पूजन करें। कुल जप-संख्या सवा लाख है। प्रतिदिनका १८०० से कम जप नहीं होना चाहिये। फिर साढ़े बारह हजार दशांश होमके लिये जप करना चाहिये।

(११) निम्नलिखित मन्त्रका प्रति श्लोकमें सम्पुट लगाकर 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्' के २१ पाठ प्रतिदिन करें। पाठ करनेसे पूर्व भगवान् विष्णुके चित्रका पंचोपचारसे पूजन कर लेना चाहिये—

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः।
रक्षां कुरु श्रियं देहि त्राहि मां शरणागतम्॥

(१२) 'संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्' का तीनों सन्ध्याओंमें ३-३ पाठ प्रतिदिन करें।

(१३) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते हनुमते मम कार्येषु ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल असाध्यं साधय साधय मां रक्ष रक्ष सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहा।**

—इस मन्त्रको मंगलवारसे आरम्भ करके प्रतिदिन १०८ जप कम-से-कम सात मंगलवार करें। इससे घरका पारस्परिक कलह मिटता है, दुष्टोंका निवारण होता है और असाध्य कार्य सफल होते हैं।

(१४) प्रतिदिन 'बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रम्' का विधिपूर्वक पाठ करें।

(१५) **'ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं'**—इस मंत्रका जप करनेसे सर्वसंकट नष्ट होकर सर्वलाभ प्राप्त होता है।

(१६) प्रतिदिन 'हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम्' का पाठ करें।

(१७) 'इन्द्राक्षीस्तोत्रम्' के सौ अथवा हजार पाठ करें।

(१८) कष्टनिवारणके लिये **'ॐ राँ राँ राँ राँ राँ राँ राँ कष्टं स्वाहा'** का १०८ बार उच्चारण करें।

(१९) **'ओंकारकी माया, चली नाथ के साथ, भरो भण्डार काया सुखी, चलो मंत्र ज्वालामुखी'**—इस मंत्रका साधु जप करे तो वह कभी भूखा नहीं रहेगा, नये-नये भोज्य पदार्थ प्राप्त होते रहेंगे।

(२०) **'चण्डी चामुण्डा तोरो नाम, भैरोंनाथ करे परनाम, जय काली करे कल्याण'**—यह मंत्र सवा लाख जपनेसे सिद्ध होता है। देवीके दुर्गारूपका ध्यान करें।

(२१) प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर इसका पाठ करनेसे सभी विघ्न शान्त होते हैं—

परं धाम परं ब्रह्म परेशं परमीश्वरम्।
विघ्ननिघ्नकरं शान्तं पुटं कान्तमनन्तकम्॥
सुरासुरेन्द्रैः सिद्धेन्द्रैः स्तुतं स्तौमि परात्परम्।
सुरपद्मदिनेशं च गणेशं मङ्गलायनम्॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं विघ्नशोकहरं परम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वविघ्नात् प्रमुच्यते॥

(२२) प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर गणेशजीके इन बारह नामोंका पाठ करें—

गणेपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजानन।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः॥
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्॥
विश्व तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित्।

(२३) मकईका ऐसा सिट्टा, जिसमें तेरह रेखाएँ हों, एकमुखी रुद्राक्षकी तरह दुर्लभ है। यदि मिल जाय तो ताँबे या चाँदीमें मढ़वाकर नित्य पूजन करें।

(२४) चौराहेकी मिट्टीका तिलक करनेसे अथवा थोड़ी-सी मिट्टी जलमें डालकर स्नान करनेसे कष्ट दूर होते हैं।

***

सर्वरोग-निवारणके लिये

(१) पद्मपुराणमें कथा आती है। भगवान् शंकरजी पार्वतीजीसे कहते हैं—'समुद्र-मन्थनमें सबसे पहले कालकूट नामक महाभयंकर विष प्रकट हुआ। उसे देखकर सम्पूर्ण देवता और दानव भयभीत होकर भागने लगे! तब मैंने हृदयमें भगवान् नारायणका ध्यान करके उनके तीन नामरूपी मन्त्रका भक्तिपूर्वक जप करते हुए उस विषको पी लिया तथा उन तीन नामोंके प्रभावसे उस विषको अनायास ही पचा लिया!' फिर भगवान्

शंकरजी बोले—

अच्युतानन्तगोविन्द इति नामत्रयं हरेः।
यो जपेत्प्रयतो भक्त्या प्रणवाद्यं नमोऽन्तकम्॥
तस्य मृत्युभयं नास्ति विषरोगाग्निजं महत्।
नामत्रयमहामन्त्रं जपेद् यः प्रयतात्मवान्॥
कालमृत्युभयं चापि तस्य नास्ति किमन्यतः॥

(पद्मपुराण, उत्तर० २३२। १९-२१)

'अच्युत, अनन्त, गोविन्द—ये हरिके तीन नाम हैं। जो एकाग्रचित्त होकर इनके आदिमें '**ॐ**' और अन्तमें '**नमः**' लगाकर इनका (**ॐ अच्युताय नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः**—इस प्रकार) भक्तिपूर्वक जप करता है, उसे विष, रोग और अग्निसे होनेवाली मृत्युका भय नहीं होता। जो इस तीन नामरूपी महामन्त्रका एकाग्रतापूर्वक जप करता है, उसे काल और मृत्युसे भी भय नहीं होता, फिर दूसरोंसे भय होनेकी तो बात ही क्या है!'

धन्वन्तरिजीके भी वचन हैं—

अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

'अच्युत, अनन्त, गोविन्द—इन तीन नामोंके उच्चारणरूप औषधसे सब रोग नष्ट हो जाते हैं। यह मैं सत्य-सत्य कह रहा हूँ।'

(२) **ॐ हँ हनुमते रुद्रात्मकाय हुँ फट् भूतग्रह प्रेतग्रह डाकिनी शाकिनी पिशाच काकिनी साकिनी कामिनी ब्रह्मराक्षस ग्रह सर्वग्रह शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।**

—ग्रहणके समय दोनों पैर नदीके जलमें डालकर १०८ बार इस मन्त्रका जप करनेसे मन्त्र सिद्ध हो जायगा। रोगीको झाड़ा देनेके समय पहले जमीनपर इस तरह सात रेखाएँ खींचें—

ॐ

।।।।।।।

फिर झाड़ा देते समय हर बार एक-एक रेखा मिटाते जायँ।

(३) हाथमें किसी बर्तनमें जल लेकर बर्तनपर हाथ रखकर सात बार निम्नलिखित मन्त्रका उच्चारण करके उस जलको पी लें। विश्वासपूर्वक इस प्रकार करनेसे शरीर नीरोग हो जाता है।

मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरारोग्यं मे देहि देवदेव नमोऽस्तु ते॥

(४) निम्नलिखित मन्त्रका प्रातःकाल उठते ही प्रतिदिन बिना किसीसे बोले सर्वप्रथम तीन बार जप कर लें। अनुष्ठानके लिये इसका ५१,००० जप और दशांशके लिये ५१०० जप या आहुति आवश्यक है।

ॐ नमो भगवते तस्मै कृष्णायाकुण्ठमेधसे।
सर्वव्याधिविनाशाय प्रभो माममृतं कृधि॥

(५) '**ॐ क्लीं तेजसे रां तारकब्रह्म स्वाहा**—निम्नलिखित चौपाईसहित इस मन्त्रका प्रतिदिन १०८ बार जप करें, जबतक रोग दूर न हो जाय अथवा निम्नलिखित चौपाईका सम्पुट देकर रामचरितमानसका नवाह्न या मासिक पाठ करें।

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहिं ब्यापा॥
अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुन्दर सब बिरुज सरीरा॥

(६) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमः सर्वाधाराय भगवते अस्य मम (........) सर्वरोगविनाशाय ज्वल ज्वल एनं दीर्घायुषं कुरु कुरु स्वाहा।**

सर्वाधाराय शान्ताय नमः परमब्रह्मणे।
दीर्घायुष्यं प्रयच्छास्य सर्वान् रोगान् विनाशय॥

उपर्युक्त मन्त्रमें '**मम**' के आगे जिसके लिये जप करना हो उसके सम्बन्ध, नाम, गोत्रका नाम लेकर जप करें या करायें। इस मन्त्रका सवा लाख जप करना चाहिये।

(७) निम्नलिखित मन्त्रका प्रतिदिन ११०० जप ४१ दिनतक करें या करायें। तदनन्तर श्वेत दूर्वा, गुग्गुल और घृतसे दशांशका हवन करके कम-से-कम चार ब्राह्मणोंको भोजन करावायें।

ॐ क्लीं रां हुँ फट्। रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
रोगान् नाशय मे क्षिप्रं श्रियं दासस्य देहि मे। ॐ क्लीं रां हुँ फट्।

(८) '**ॐ ह्राँ ह्रीँ सः सूर्याय नमः**'—इस मन्त्रका यथाशक्ति जप करें। यह सर्वरोगनाशक, सर्वसिद्धिप्रद मन्त्र है।

(९) इस मन्त्रका सम्पुट लगाकर दुर्गासप्तशतीका पाठ करनेसे समस्त रोगोंका नाश होता है—

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

(१०) शनिवार रातको एक पानीवाला नारियल रोगीके सिरहाने रखें। रविवारको प्रातः एक मौली रोगीके सिरसे पैरतक नापकर उस नारियलपर लपेट दें और बहते जलमें प्रवाहित कर दें। ऐसा पाँच शनिवारतक करें।

***

धनप्राप्तिके लिये

(१)卐 इस श्लोकका सम्पुट लगाकर प्रतिदिन 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्' का पाठ करें—

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥

(विष्णुसहस्रनामस्तोत्र ७८)

(२)卐 जब 'भरणी' नक्षत्र साठ घड़ीका हो, तब डाभ (कुशा)-की जड़ लाकर घरमें (पर्स, तिजोरी)-में रखें तो कभी धनकी कमी नहीं आती। एक दिन पहले चावल-कुंकुम चढ़ाकर निमन्त्रण देना चाहिये कि 'कल आपको ले जायँगे'। फिर दूसरे दिन उसे उखाड़ना चाहिये। भरणी नक्षत्र साठ घड़ीसे अधिक हो तो कोई दोष नहीं, पर कम नहीं होना चाहिये।

(३) 'स्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्रम्' का प्रतिदिन आठ बार पाठ करें।

(४) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्वसम्पदं देहि देहि ममालक्ष्मीं नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा।**

—इस मन्त्रसे सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहणके समय घृतकी १०८ आहुति देकर मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिये। फिर प्रतिदिन १०८ मन्त्रका जप करते रहना चाहिये।

(५) **ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमो भगवते मम सर्वकार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्तिं निवारय निवारय स्वाहा।**

—इस मन्त्रसे सात बिल्वपत्र (त्रिदल) शिवलिंगपर चढ़ाने चाहिये। बिल्वपत्र चढ़ानेके बाद इसी मन्त्रका १०८ बार जप करना चाहिये। उपयुक्त स्थान हो तो जप मन्दिरमें ही करना चाहिये। जबतक कार्य सिद्ध न हो, तबतक प्रतिदिन जप करते रहना चाहिये।

(६) कमलका फूल, श्वेत दूर्वा, गुग्गुल, गौ-घृत—इन सब चीजोंको मिलाकर लगातार २१ दिनोंतक प्रतिदिन १०८ बार निम्नलिखित मन्त्रका जप करके हवन करें।

कुबेर त्वं धनाधीशं गृहे ते कमला स्थिता।
तां देवीं प्रेषयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः॥

(७) **ॐ तारात्रिपुरायै नमः ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

—इस मन्त्रकी ११ मालाका जप प्रतिदिन रात्रिको दस बजेके बाद करना चाहिये। जप करते समय दीपक जलते रहना चाहिये और अपने सुविधानुसार किसी भी चीजका पूरा तीन पाव भोग लगाकर जप पूरा होनेके बाद सबको बाँट देना चाहिये।

(८) श्रीमहालक्ष्मीजीका पूजन करके श्रद्धापूर्वक निम्नलिखित स्तोत्रके प्रतिदिन ११ पाठ करने चाहिये।

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वं सुस्थिरा कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चता भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मातया सम्पद् रमा श्रीः पद्मधारिणी॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत् तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥

(९) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सिद्धिदां साधय साधय स्वाहा।**

—श्रद्धा-विश्वासपूर्वक उपर्युक्त मन्त्रकी प्रतिदिन २१ मालाका जप करना चाहिये। ग्रहणके समय पाँच तोले जटामाशी, दो तोले काली मिर्च, दूर्वा तथा घृत मिलाकर मन्त्रका उच्चारण करते हुए अग्निमें १०८ आहुतियाँ देनेपर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

(१०) जो पुरुष प्रत्येक बृहस्पतिवारको प्रातःकाल दक्षिण दिशाकी ओर मुख करके राजा बलिका ध्यान करता है, वह धन प्राप्त करता है।

(११) **'ॐ श्रीदः, श्रीशः, श्रीनिवासः, श्रीधरः, श्रीनिकेतनः, श्रियः पतिः, श्रीपरमः'**—इस मन्त्रको शुक्लपक्षके पुष्यनक्षत्रमें एक माला जप करके सिद्ध कर लें। फिर प्रतिदिन एक माला इस मन्त्रका जप करें।

(१२) रविपुष्यके समय १२ भाग ताम्र, १६ भाग चाँदी और १० भाग स्वर्णसे निर्मित अँगूठी दरिद्रताका नाश करती है। (अलग-अलग बनी हुई तीनों अँगूठियोंको एकमें मिला दें।)

(१३) **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः**—लक्ष्मीजीके चित्रके आगे दीपक जलाकर इस मन्त्रका सवा लाख जप करें।

(१४) कुम्हारके यहाँसे मिट्टी लाकर गणेशजीकी मूर्ति बनायें। उसकी पंचोपचारसे पूजा करके उसके

आगे '**ॐ गँ गणपतये नमः**' इस मन्त्रका प्रतिदिन एक हजार जप करें। छः मासमें साधक धनवान् हो सकता है।

(१५) 'ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र' तथा उसमें लिखे मन्त्रका जप करनेसे दरिद्रताका नाश होता है। नित्य एक पाठ एक वर्ष तक करना चाहिये।

(१६) 'संकटनाशगणेशस्तोत्रम्' के तीन-तीन पाठ नित्य प्रातः-दोपहर-सायं करें।

(१७) पद्मपुराणान्तर्गत 'संकटनाशनविष्णुस्तोत्र' का विधिपूर्वक पाँच या इक्कीस पाठ करनेसे संकट दूर हो जाता है।

(१८) लक्ष्मीजीका पूजन करके इस स्तोत्रके नित्य ग्यारह अथवा इक्कीस पाठ करें—

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्यप्रदायिने।
दुष्टारिष्टविनाशाय पराय परमात्मने॥
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोपशोभितम्।
अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूहविनाशनम्॥
ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ हैं हौं हः हेरम्बाय नमो नमः।
सर्वसिद्धिप्रदोऽसि त्वं सिद्धिबुद्धिप्रदो भव॥
चिन्तितार्थप्रदस्त्वं हि सततं मोदकप्रियः।
सिन्दूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः॥
इदं गजपतिस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान्नरः।
तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति॥

दुकानमें विक्रय-वृद्धिके लिये—

(१) किसी शुभ रविवारमें इस मन्त्रकी एक माला जप कर लें। फिर रविवारको प्रातः स्नान करके दुकानपर जायँ। एक हाथमें थोड़े-से काले उड़द लें और इक्कीस बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर, फूँक मारकर चारों ओर बिखेर दें। कुछ उड़द गद्दीके नीचे डाल दें। ऐसा चार रविवारतक बिना नागा करें।

भँवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा।
उठे जो डण्डी बिके जो माल, भँवर वीर सोखे नहिं जाय।

(२) पुरानी नावकी पाँच कीलें लाकर दुकानके आगे, चौखटमें गाड़ दें।

(३) एक लोटेमें संगमका जल लें। फिर शनिवारको रात्रिमें किसी चौराहेकी मिट्टी लेकर लोटेके जलमें मिला लें। मिट्टी लेते समय कोई देखे नहीं। प्रातः दुकान खोलनेपर बाहरसे भीतरकी तरफ वह जल छिड़कते जायँ।

(४) इक्कीस स्थानोंका और पाँच नदियोंका जल लें। यह न हो सके तो संगमका जल लें। दुकान-मालिक प्रातः दुकान खोलकर, झाड़ू लगानेके बाद उस जलको दुकानके भीतर छिड़क दें।

(५) दुकान न चले तो उसका नाम बदल दें। दुकानके नामके अक्षर बढ़ायें, कम न करें। अंक-विद्याके अनुसार नामकी संख्या ३७ या ७३ आये तो बहुत शुभ है।

(६)卐 दुकानके भीतर (द्वारके ऊपर) चौंतीसा यन्त्र लगा दें।

***

ऋणमुक्तिके लिये

(१) प्रतिदिन पीपलवृक्षके पास जायँ और हाथोंमें चन्दनका तेल लगाकर पीपलके तनेपर मलें। फिर तिलके तेलका दीपक जलाकर वहाँ रख दें। यह कार्य केवल पुरुषको ही करना है।

(२) ऋणमुक्तिके लिये मंगलवारसे आरम्भ करके प्रतिदिन शिवलिंगपर इस मन्त्रसे १०८ मसूरके दाने चढ़ायें—**ॐ ऋणं मुक्तेश्वराय महादेवाय नमो नमः।**

(३) सूर्योदयके समय 'गजेन्द्रमोक्ष', 'आदित्यहृदयस्तोत्रम्', 'कनकधारास्तोत्रम्' अथवा 'श्रीसूक्त' का पाठ करें।

(४) प्रत्येक मंगलवारको अलसीके तेलका दीपक जलाकर 'ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम्' का पाठ करें।

(५) प्रत्येक संक्रान्तिके दिन 'श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्' का पाठ करें।

[शुक्लपक्षके पहले मंगलवारको कर्जकी अथवा कर्जके ब्याजकी किश्तका भुगतान अवश्य करें, और इस दिन किसीसे कर्ज न लें। मंगलवार और पूर्णिमाको कर्ज लेना अथवा देना नहीं चाहिये।]

***

चोरीसे रक्षाके लिये

(१) रात्रिमें सोते समय निम्नलिखित मन्त्रको बोलकर तीन बार ताली बजाकर सोयें। इससे चोरी नहीं होगी। सोनेसे पूर्व दरवाजेकी कुण्डी बन्द करते समय भी यथाशक्ति इस मन्त्रका जप करनेसे चोर यदि रात्रिमें आयेगा भी तो उसे खाली हाथ लौटना पड़ेगा—

तिस्रो भार्या कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती।
तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः॥
कफल्ल कफल्ल कफल्ल।

(२) सोते समय अथवा घरके ताले लगाते इस मन्त्रका उचारण करनेसे घरमें चोर नहीं आता—

आदिचौरकफल्लस्य ब्रह्मदत्तवरस्य च।
तस्य स्मरणमात्रेण चौरो विशति न गृहे॥
कफल्ल कफल्ल कफल्ल।

***

खोयी हुई वस्तु पानेके लिये

(१) खोयी हुई, किसीके द्वारा दबायी हुई अथवा चुरायी हुई वस्तु (धन आदि) पुनः प्राप्त करनेके लिये इस मन्त्रका यथाशक्ति जप करें—

ॐ ह्रीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
तस्य संस्मरणादेव हृतं नष्टं च लभ्यते॥

(२) निम्नलिखित बारह नामोंका ग्यारह या इक्कीस बार पाठ करें। रातको सोनेसे पहले इसका पाठ करनेसे घरमें चोर नहीं आता—

ॐ कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली।

सहस्त्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः॥
रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजास्मर्तुरभीष्टदः।

***

कन्याके शीघ्र विवाहके लिये

(१)卐 पार्वतीजीके चित्रपर चन्दन-पुष्प चढ़ाकर निम्नलिखित मन्त्रकी सात या ग्यारह माला जप करें—

हे गौरि शङ्करार्धाङ्गि यथा त्वं शङ्करप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

फिर श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड २३५। ३ से २३६)-में आये निम्नलिखित प्रसंगका श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ करें—

चौपाई

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी॥
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना॥
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥

दोहा

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥

चौपाई

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी॥
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं॥
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा॥

छन्द

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

सोरठा

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

(२)卐 कोरे कागजपर लाल स्याहीसे सवा लाख राम-नाम लिखें। कागजके एक ही तरफ लिखें।

कागजपर लाइनें न हों।

(३)卐 श्रीरामचरितमानसमें राम-विवाहके प्रसंगमें आये ***'माँडवी श्रुतकीरति उरमिला०'*** (बाल० ३२५) छन्दसे पाठ आरम्भ करके वहींपर पाठकी समाप्ति करें।

(४) प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम तीनों समय 'सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्' के तीन-तीन पाठ करें।

(५) जिस लड़की अथवा लड़केका विवाह न हो रहा हो, वह गुरुवारके दिन विष्णुके मन्दिरमें जाकर पीले गेंदेकी एक-एक माला अपने हाथोंसे विष्णु तथा लक्ष्मीकी प्रतिमाके गलेमें पहनाये तथा शीघ्र विवाहके लिये प्रार्थना करे।

(६) प्रतिदिन जलमें चुटकीभर हल्दी डालकर स्नान करें।

[जबतक विवाह न हो, तबतक कोई एक उपाय करते रहना चाहिये।]

***

सुलक्षणा पत्नीकी प्राप्तिके लिये

ॐ क्लीं। पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्। क्लीं ॐ

(१) उपर्युक्त मन्त्रका सम्पुट लगाकर 'श्रीदुर्गासप्तशती' का पाठ करें।

(२) दुर्गाजीका पूजन करके प्रतिदिन उपर्युक्त मन्त्रका पाँच माला जप करें।

(३) शूभ मुहूर्तमें प्रतिदिन एक निश्चित समयपर उपर्युक्त मन्त्रकी तीन माला जप करते हुए ४१-४१ दिनोंके तीन अनुष्ठान करें। प्रत्येक ४१ दिनोंका अनुष्ठान पूरा होनेपर छोटी कन्याओंको मीठा भोजन कराकर फल तथा दक्षिणा दें।

[जबतक विवाह न हो, तबतक कोई एक उपाय करते रहना चाहिये।]

***

विद्यार्थियोंके लिये

बुद्धिकी वृद्धि तथा विद्याकी प्राप्तिके लिये—

(१)卐 एकान्तमें प्रतिदिन रात्रिमें ग्यारह बजे ऊन या टाटके आसनपर ईशान दिशाकी ओर मुख करके बैठ जायँ और रुद्राक्षकी मालासे '**ॐ नमः शिवाय**'—इस मन्त्रका एक सौ बीस माला जप करें। ऐसा छः महीनेतक लगातार करनेसे बुद्धि विकसित होती है तथा अभीष्ट कार्यकी सिद्धि भी होती है। यदि जलके किनारे बैठकर अथवा बहते हुए जलमें पैर रखकर इस मन्त्रका जप किया जाय तो विशेष सिद्धि होती है।

यह अनुष्ठान कृष्णपक्षकी त्रयोदशीसे आरम्भ करना चाहिये। यदि महाशिवरात्रिसे आरम्भ किया जाय तो बहुत बढ़िया है। सोमवारसे भी आरम्भ कर सकते हैं। यदि श्रावणका सोमवार हो तो और बढ़िया है। अनुष्ठान आरम्भ करनेसे पहले शिवजीका पूजन कर लेना चाहिये। अनुष्ठानकालमें प्रदोष (त्रयोदशीके दिन)-व्रत भी रखना चाहिये। व्रतके दिन एक समय फलाहार करना चाहिये। परंतु एक समय भी ज्यादा पाना ठीक नहीं। इसकी अपेक्षा दो समय थोड़ा-थोड़ा पाना अच्छा है।

'**बुद्धिवृद्ध्यर्थं क्रियते मया**'—ऐसा संकल्प करके अनुष्ठान आरम्भ करना चाहिये।

(२)卐 प्रतिदिन प्रातः शौच-स्नानादि करनेके बाद लाल आसनपर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठ जायँ और रुद्राक्ष या मूँगेकी मालासे '**ॐ गँ गणपतये नमः**'—इस मन्त्रका कम-से-कम इक्कीस माला जप करें। ऐसा छः महीनेतक लगातार करनेसे बुद्धि विकसित होती है तथा अभीष्ट कार्यकी सिद्धि भी होती है।

यह अनुष्ठान शुक्लपक्षकी चतुर्थीसे आरम्भ करना चाहिये। अगर भाद्रपद महीनेके शुक्लपक्षकी चतुर्थी हो तो बहुत बढ़िया है। अनुष्ठानके आरम्भमें गणेशजीका पूजन कर लेना चाहिये। अनुष्ठानकालमें चतुर्थीका व्रत भी करना चाहिये।

गणेशस्तोत्र, गणेशाष्टक, गणेशसहस्रनामस्तोत्र आदिका पाठ करनेसे भी बुद्धिका विकास होता है।

'**बुद्धिवृद्ध्यर्थं क्रियते मया**'—ऐसा संकल्प करके अनुष्ठान आरम्भ करना चाहिये।

(३)卐 प्रतिदिन प्रातः लाल वस्त्र पहनकर लाल आसनपर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठ जायँ और रुद्राक्ष या मूँगेकी मालासे ' '**ऐँ श्रीसरस्वत्यै नमः**'—इस मन्त्रका ग्यारह, इक्कीस, इक्यावन, एक सौ एक आदि जितनी माला जप कर सकें, उतना जप करें। ऐसा लगभग एक वर्षतक करनेसे बुद्धि विकसित होती है।

यह अनुष्ठान शुक्लपक्षकी अष्टमी या नवमीसे आरम्भ करना चाहिये। अनुष्ठानके आरम्भमें लाल पुष्पोंसे सरस्वतीका पूजन कर लेना चाहिये।

'**बुद्धिवृद्ध्यर्थं क्रियते मया**'—ऐसा संकल्प करके अनुष्ठान आरम्भ करना चाहिये।

(४)卐 श्रीरामचरितमानसका एक वर्षतक प्रत्येक महीने एक पाठ (कुल बारह पाठ) करनेसे बुद्धि विकसित होती है। अगर श्रीरामचरितमानसका प्रतिदिन एक पाठ अथवा नौ दिनोंमें एक पाठ करते हुए कुल नौ पाठ किये जायँ तो भी बुद्धिका विकास होता है। अगर श्रीरामचरितमानसका प्रतिदिन एक पाठ अथवा नौ दिनोंमें एक पाठ करते हुए कुल एक सौ आठ पाठ किये जायँ तो बुद्धि विकसित होनेके साथ-साथ भगवान्‌के साथ विशेष सम्बन्ध भी हो जाता है।

[ऊपर जितने (१ से ४ तक) अनुष्ठान बताये गये हैं, उनका अन्य अभीष्ट कार्यकी सिद्धिके लिये भी प्रयोग किया जा सकता है।]

(५)卐 प्रातः नींदसे उठते ही ऐसी कल्पना, भावना करें कि जीभपर '**ऐँ**' लिखा हुआ है और मनसे उसको जीभपर देखता हुआ '**ऐँ**'—इस बीजमन्त्रका एक सौ आठ बार जप करें। इससे बुद्धि विकसित होती है।

(६) पुष्यनक्षत्रसे आरम्भ करके दूसरा पुष्यनक्षत्र आनेतक प्रतिदिन पीपलवृक्षके नीचे बैठकर दस बार 'प्रज्ञावर्धनस्तोत्रम्' का पाठ करें। अनुष्ठानकालमें मोरको चावल आदि खिलाने चाहिये।

(७) **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनि सरस्वति मम जिह्वाग्रे वद वद ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।** आषाढ़में जब उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो, तब इस मंत्रको १०८ बार दिनमें जप लें और रात्रिको ११ से १२ बजेके बीचमें इस मंत्रका २१ बार जप करके लाल चन्दनसे जीभपर '**ह्रीं**' मंत्र लिख दें।

(८) हनुमान्‌जीकी पूजा करके इस दोहेका प्रतिदिन १०८ बार जप करें—

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार॥

(९) माघ शुक्ल त्रयोदशीको सन्ध्याके समय ब्राह्मी बूटीको निमंत्रण दे आयें। उस समय '**ॐ**

कुमाररज्जन्यै नमः' इस मंत्रको २१ बार पढ़कर शुद्ध धोये हुए चावलोंसे ब्राह्मीके एक छोटे वृक्षको घेर दें। रात्रिको पवित्रतासे कुशासन या कम्बलपर सो जायँ। फिर दूसरे दिन (चतुर्दशीको) प्रातः चार बजे उठकर बिना किसीसे कुछ बोले चुपचाप जाकर **'ॐ ऐं बुद्धिवर्द्धिन्यै नमः'** इस मंत्रको २१ बार पढ़कर उसे जड़सहित उखाड़ लें। फिर उसे बड़ी खरलमें डालकर **'ॐ ऐं ह्रीं ब्राह्मयै नमः'** मंत्रको २१ बार पढ़कर पीस लें और उसका जल (रस) छानकर किसी शुद्ध बर्तनमें रख दें। फिर गंगातटपर बैठकर **'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाग्वादिनि सरस्वति मम जिह्वाग्रे वद वद मां सर्वविद्यां देहि देहि स्वाहा'** इस मंत्रका १०८ बार जप करें। फिर गंगामें नाभितक खड़े होकर उस रसको पी जायँ।

(१०) जो विद्यार्थी हरेक पूर्णिमाको श्रीवेदव्यासजीके विग्रहकी पूजा करता है, वह सदा प्रथम श्रेणीमें सफलता प्राप्त करता है।

(११) परीक्षामें जानेसे पहले सफेद कागजपर लाल स्याहीसे नौ बार **'राम'** नाम लिखकर जायँ।

(१२) **'ॐ ह्रीं हंसः सोऽहँ स्वाहा'**—प्रतिदिन प्रातः इस मन्त्रसे सात बार अभिमन्त्रित जल पीनेसे मनुष्य वाक्पटु हो जाता है।

(१३) विद्यार्थी पढ़ाईमें कमजोर हो तो उसके हाथसे प्रति गुरुवार (कम-से-कम पाँच) केलोंका दान करवायें।

(१४) पढ़नेमें मन न लगे तो हल्दीकी तीन गाँठें, चनेकी दाल और केलेकी जड़—तीनोंको एक पीले कपड़ेमें बाँधकर गुरुवारको विद्यार्थीके कमरेमें ईशानकोणमें रख दें।

[पढ़ते समय विद्यार्थीको उत्तरकी ओर मुख करके बैठना चाहिये। पूर्व अथवा ईशानकोणकी ओर भी मुख कर सकते हैं।]

***

प्रेतबाधा-नाशके लिये

(१)卐 स्नानादिसे शुद्ध होकर आसनपर बैठ जायँ। अपने सामने धूप जला दें। एक लोटेमें गंगाजल अथवा कुएँका जल भरकर अपने पास किसी लकड़ीकी चौकीपर रख दें। फिर 'श्रीनारायणकवच' (श्रीमद्भागवत०, स्कन्ध ६, अध्याय ८ में आये)-का मूल पाठ करके लोटेमें रखे जलमें फूँक मारें। इस प्रकार 'श्रीनारायणकवच' के इक्कीस पाठ करें और प्रत्येक पाठके अन्तमें लोटेके जलमें फूँक मारते रहें। अन्तमें लोटेके कुछ जलको प्रेतबाधावाले व्यक्तिको पिला दें और कुछ जल उसके शरीरपर, उसके बिस्तरपर और कमरेमें छिड़क दें।

अभिमंत्रित जलके पात्रको पृथ्वीपर नहीं रखना चाहिये, प्रत्युत लकड़ीकी किसी वस्तुपर रखना चाहिये, अन्यथा उसकी शक्ति जमीनमें चली जाती है।

(२)卐 गीताप्रेससे प्रकाशित 'श्रीरामरक्षास्तोत्रम्' को उसमें दी हुई विधिसे सिद्ध कर लें। फिर श्रीरामरक्षास्तोत्रका पाठ करते हुए प्रेतबाधावाले व्यक्तिको मोरपंखोंसे झाड़ा दें।

(३)卐 शुद्ध-पवित्र होकर 'हनुमानचालीसा' के सात, इक्कीस या एक सौ आठ बार पाठ करके जलको अभिमन्त्रित करें। फिर उस जलको प्रेतबाधावाले व्यक्तिको पिला दें।

(४)卐 गीताके निम्नलिखित श्लोकका सम्पुट लगाकर पूरी गीताका पाठ करें। ऐसा करनेसे यह श्लोक (मन्त्र) सिद्ध हो जायगा—

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥

(गीता ११। ३६)

जिस व्यक्तिको भूत-प्रेतने पकड़ा है, उसको इस श्लोकका पाठ करते हुए मोरपंखसे झाड़ा दें अथवा अपने हाथमें शुद्ध जलसे भरा हुआ लोटा लें और इस श्लोकको बोलकर जलमें फूँक मारते रहें, फिर वह जल उस व्यक्तिको पिला दें। इन दोनों प्रयोगोंमें इस श्लोकका सात, इक्कीस या एक सौ आठ बार पाठ कर सकते हैं। इस श्लोकको भोजपत्र या सफेद कागजपर अनारकी कलमके द्वारा अष्टगन्धसे लिखें और ताबीजमें डालकर रोगीके गलेमें लाल धागेसे पहना दें। *(द्रष्टव्य-'श्रीमद्भगवद्गीताके मन्त्र')*

(५)卐 प्रेतबाधावाले व्यक्तिको भागवतका सप्ताह-पारायण सुनाना चाहिये।

(६)卐 प्रेतसे उसका नाम आदि पूछकर किसी शुद्ध-पवित्र ब्राह्मणके द्वारा सांगोपांग विधि-विधानसे गया-श्राद्ध कराना चाहिये।

[प्रेतात्मा यदि गयाश्राद्ध कराना स्वीकार कर ले तो उससे पूछ लें कि तू कैसे साथ जायगा? उसको नारियलमें भी ले जा सकते हैं। वह साथ चले तो उसका रेल-टिकट बनवा लें। उसके बैठनेका स्थान अलग रखें। उसपर कपड़ा बिछा दे और कह दे कि तू यहाँ बैठ जा।]

(७)卐 प्रेतबाधावाले व्यक्तिके पास गीता, रामायण, भागवत रख दें और उसको 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्' का पाठ सुनाते रहें।

(८)卐 जिस स्थानपर श्रद्धापूर्वक सांगोपांग विधिसे गायत्री-मन्त्रका पुरश्चरण, वेदोंका सस्वर पाठ, पुराणोंकी कथा हुई हो, वहाँ प्रेतबाधावाले व्यक्तिको ले जाना चाहिये। वहाँ जाते ही प्रेत शरीरसे बाहर निकल जाता है; क्योंकि भूत-प्रेत पवित्र स्थानोंमें नहीं जा सकते। प्रेतबाधावाले व्यक्तिको कुछ दिन वहीं रहकर भगवन्नामका जप, हनुमानचालीसाका पाठ, सुन्दरकाण्डका पाठ आदि करते रहना चाहिये, जिससे वह प्रेत पुनः प्रविष्ट न हो। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो वह प्रेत बाहर ही घूमता रहेगा और उस व्यक्तिके बाहर आते ही उसको फिर पकड़ लेगा।

(९)卐 'चौंतीसा यन्त्र' सिद्ध कर लें। फिर मंगलवार या शनिवारके दिन अग्निमें खोपरा, घी, जौ, तिल और सुगन्धित द्रव्योंकी १०८ आहुतियाँ दें। प्रत्येक आहुति **'स्थाने हृषीकेश....'** (गीता ११। ३६)—इस श्लोकसे डालें और प्रत्येक आहुतिके बाद चौंतीसा यन्त्रको अग्निपर घुमायें। इसके बाद उस यन्त्रको ताबीजमें डालकर प्रेतबाधा-वाले व्यक्तिके गलेमें लाल या काले धागेसे पहना दें।

[चौंतीसा यन्त्र और उसको लिखनेकी तथा सिद्ध करनेकी विधि इसी पुस्तकमें अन्यत्र देखें।]

(१०)卐 जिस समय किसीके शरीरमें प्रेत आये, उस समय उसकी कनिष्ठिका (स्त्रीकी बायीं तथा पुरुषकी दायीं) अँगुलीको कसकर पकड़ लें, तो फिर वह प्रेत शरीरसे निकलकर जा नहीं सकेगा। कनिष्ठिका अँगुली पकड़कर उसकी पीठपर कोड़ा, चिमटा आदिसे खूब मारे और कहे कि अब तुझे छोड़ेंगे नहीं, मारेंगे, और उसकी नाकमें लाल मिर्च तथा लोबानका धुआँ दें तो वे चिल्लायेगा। ऐसा करनेसे वह फिर उसके शरीरमें नहीं आयेगा।

(११)卐 मुस्लिम प्रेतकी बाधा हो तो शरीरमें कई जगह स्वमूत्र लगा दें।

(१२) एक धागेमें ग्यारह सुइयाँ पिरोकर दरवाजेके ऊपर (बंदनवारकी तरह) टाँग दें।

(१३) काले घोड़ेको घर लाकर खिलायें-पिलायें तो प्रेतादि भाग जाते हैं। काले घोड़ेकी पूँछके बालकी

रस्सी बनाकर रखने, काले घोड़ेका नाखून जलानेसे और भूतकेशी जलानेसे भी भूत भाग जाता है।

(१४) भूत-प्रेत दिखायी दे तो सारे वस्त्र उतारकर नग्न हो जाय, प्रेत कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सकेगा। अपना वस्त्र उसके गलेमें बाँध दे तो फिर उसी रूपमें वह वशमें हो जायगा।

(१५) नग्न होकर स्नान करनेसे स्त्रीको जल-प्रेत लग जाता है और उसका संग करने आता है। घरके जूठे बर्तन एक टोकरेमें डालकर उस स्त्रीके सिरहाने रख दे, फिर प्रेत नहीं आयेगा।

(१६) कनिष्ठिका अंगुलीमें लाल मिर्च बारीक पीसकर लेप कर दें। प्रेतबाधा नहीं रहेगी।

(१७) रात्रिमें सोनेसे पूर्व घरमें सरसों बिखेर दें। प्रेतबाधावाले व्यक्तिके सिरहाने तथा चारपाईके नीचे बिखेर दें। प्रातः चार बजे नये झाड़ूसे उसे इकट्ठा करके एक डिब्बेमें डाल दें। ऐसा सात दिन करके वह सरसों बहते जलमें डाल दें। ध्यान रहें, सरसों पैरके नीचे न आये। रातभर दीपक जलायें रखें।

(१८) निरन्तर हनुमान्‌चालीसाका पाठ करते रहें।

(१९) अपामार्गकी जड़ दीपावलीकी शामको उखाड़कर रखें। किसीको प्रेतबाधा हो तो उसका टुकड़ा गलेमें (ताबीजरूपसे) डाल दें।

(२०) लुहार जिसमें गर्म लोहा बुझाता है, उस पानीसे मुँहमें छींटे मारनेसे प्रेतबाधा ठीक होती है।

(२१) रविवारको काले धतूरेकी जड़ बाँहमें बाँधे तो भूत-बाधा दूर हो जायगी।

(२२) एकपोतिया लहसुनके रसमें हींग पीसकर प्रेतग्रस्त व्यक्तिको सुँघायें या अंजन करें।

(२३) रविवारको विधिपूर्वक शंखाहूलीकी जड़ लाकर चावल या घृतके संग प्रेतग्रस्त व्यक्तिको सुँघायें।

(२४) रविवारको तुलसीपत्र, काली मिर्च प्रत्येक आठ-आठ लेकर तथा सहदेइयाकी जड़ लाकर तीनोंको ताँबेकी ताबीजमें डालकर धूप देकर धारण करें।

(२५) नीमके पत्र, बच, हींग, साँपकी केंचुली और सरसों—इनको पीसकर धूनी देनेसे सभी प्रकारके प्रेतादि दूर हो जाते हैं।

(२६) मुण्डी, गोखरू और बिनौला—तीनों समभाग लेकर गोमूत्रमें पीसकर प्रेतग्रस्तको सुँघायें।

(२७) पीपलका दण्ड धारण करनेसे भी प्रेतबाधा नहीं रहती।

(२८)卐 यदि घरमें प्रेतका निवास हो तो नारायणकवचसे अभिमन्त्रित जलकी सब जगह छींटें दें और घरके चारों कोनोंमें 'चौंतीसा यन्त्र' रख दें।

ब्रह्मराक्षससे छुटकारा पानेके लिये—

卐(क) जो भगवान्‌के भजनमें तत्परतासे लगे हुए हैं, साधनमें जिनकी अच्छी स्थिति है, जिनमें भजन-स्मरणका जोर है, उन साधकोंके पास जानेसे ब्रह्मराक्षस भाग जाते हैं; क्योंकि भागवती शक्तिके सामने उनकी शक्ति काम नहीं करती।

(ख) अगर ब्रह्मराक्षससे ग्रस्त व्यक्ति किसी सिद्ध महापुरुषके पास चला जाय तो वह व्यक्ति उस ब्रह्मराक्षससे छूट जाता है और उस ब्रह्मराक्षसका भी उद्धार हो जाता है।

(ग) अगर ब्रह्मराक्षस गयाश्राद्ध कराना स्वीकार कर ले तो उसके नामसे गयाश्राद्ध कराना चाहिये। इससे उसकी सद्‌गति हो जायगी।

—श्रद्धा-विश्वासपूर्वक कोई एक उपाय करनेसे प्रेत-बाधा दूर हो सकती है। इस तरहके अनुष्ठानोंमें प्रारब्धके बलाबलका भी प्रभाव पड़ता है। अगर प्रारब्धकी अपेक्षा अनुष्ठान बलवान् हो तो पूरा लाभ होता

है अर्थात् कार्य सिद्ध हो जाता है, परंतु अनुष्ठानकी अपेक्षा प्रारब्ध बलवान् हो तो थोड़ा ही लाभ होता है, पूरा लाभ नहीं होता।

***

दुःस्वप्न-दोष-निवारणके लिये

(१) अच्युत, केशव, विष्णु, हरि, सत्य, जनार्दन, हंस और नारायण—इन आठ नामोंका शुद्ध होकर पूर्वमुख बैठकर दस बार जप करनेसे दुःस्वप्न शुभकारक हो जाता है—

ॐ अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं चैव ह्येतन्नामाष्टकं शुभम्॥
शुचिः पूर्वमुखः प्राज्ञौ दशकृत्वश्च यो जपेत्।
निष्पापोऽपि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नः शुभवान् भवेत्॥

(२) शिव, दुर्गा, गणपति, कार्तिकेय, सूर्य, धर्म, गंगा, तुलसी, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती—जलसे स्नान करके इन ग्यारह नामोंका '**ॐ नमः**' के साथ उच्चारण करके नमस्कार करनेसे दुःस्वप्न शुभकारक होता है और वाञ्छित फल देता है—

ॐ नमः शिवं दुर्गा गणपतिं कार्तिकेयं दिनेश्वरम्।
धर्मं गङ्गां च तुलसीं राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्॥
नामान्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा च यो जपेत्।
वाञ्छितं च लभेत् सोऽपि दुःस्वप्नः शुभवान्भवेत्॥

(३) निम्नलिखित मन्त्रका पवित्र होकर दस बार जप करनेसे दुःस्वप्न सुख देनेवाला हो जाता है—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गतिनाशिन्यै महामायायै स्वाहा।
कल्पवृक्षेति लोकानां मन्त्रः सप्तदशाक्षरः।
शुचिश्च दशधा जप्त्वा दुःस्वप्नः सुखवान् भवेत्॥

(४) प्रातःकाल जगते ही पवित्र होकर 'गजेन्द्रमोक्ष' का पाठ करें।

(५) रातको तकियेके नीचे हरड़ रखकर सोनेसे दुःस्वप्न नहीं आते।

(६) रवि या मंगलके दिन लाल फिटकरी सिरहाने रखनेसे नींदमें भय नहीं लगता, बुरी चीज पास नहीं आती।

(७) बच्चा सोते हुए डरता हो तो उसके तकियेके नीचे मोरपंख रख दें।

(८) पन्नाकी अँगूठी बनाकर पहननेसे बुरा स्वप्न नहीं आता।

***

दृष्टिदोष-निवारणके लिये

१)卐 साबत लालमिर्च और नमक लेकर व्यक्तिके सिरपर घुमाकर अग्निमें जला दें। नजर लगी होगी तो गन्ध नहीं आयेगी। मिर्चकी चाहे जितनी संख्या हो।

२)卐 दाहिने हाथकी मध्यमा-अनामिका अंगुलियोंको हथेलीकी तरफ मोड़कर तर्जनी और कनिष्ठा

अंगुलियोंको परस्पर मिला लें और व्यक्तिके सिरसे पैरतक झाड़ा दें। परंतु ये दोनों अंगुलियाँ सबकी नहीं मिलतीं।

३)卐 जिसकी नजर लगी हो, वह उस व्यक्तिको 'थू-थू-थू' कर दे तो भी नजर उतर जाती है।

४)卐 मूँजके ऊपर कपड़ा लपेटकर तेलमें डुबोकर जला दें। नीचे जल रखें, जिससे वह जलपर टपके। इससे नजर तथा लावणी दोनों दूर हो जाते हैं। *[स्त्रीके घाघरेके नीचेकी किनारीको 'लावणी' कहते हैं, उसके लगनेसे रोग बढ़ जाता है!]*

[बच्चोंको तथा बड़ोंको भी नजर लग जाती है। नजर किसी-किसीकी ही लगती है, सबकी नहीं। कइयोंकी दृष्टिमें जन्मजात दोष भी होता है, और कई जान-बूझकर भी नजर लगा देते हैं कि यह बड़ा सुन्दर है, आदि। नजर लगनेसे पत्थरतक फट सकता है!]

***

तन्त्र-प्रयोगका निवारण

(१)卐 कोई मुस्लिम अनिष्ट तन्त्रका प्रयोग करे तो शरीरमें कई जगह पेशाब लगा दें। जहाँ पेशाब लगा हो, वहाँ मुस्लिम तन्त्र काम नहीं करता।

(२)卐 किसीके द्वारा किया गया तन्त्र-प्रयोग काटनेमें श्रीहनुमानचालीसा अथवा चौंतीसा यन्त्र काम आ सकता है।

(३) रेगर (चमड़ा रंगनेवाला) जिन कुण्डोंमें रंगता है, उसमें जो अन्तिम कुण्ड हो, उसका जल तन्त्रप्रयोगको काट देता है।

(४) 'विपरीतप्रत्यंगिरास्तोत्रम्' का पाठ करें।

(५) हनुमानचालीसा अथवा सुन्दरकाण्डका पाठ करें।

(६) कृत्तिका नक्षत्रमें लोहेका कड़ा बनाकर धारण करनेसे कोई भी तन्त्र-प्रयोग नहीं चलता।

(७) एक पत्तेपर कपूर जलाकर उसके चारों ओर नींबू निचोड़ दें, और उस अग्निमें एक बताशा जला दें।

(८) लहसुनियाकी अँगूठी बनाकर पहननेसे कोई तंत्र-प्रयोग असर नहीं करता।

***

सन्तान-प्राप्तिके लिये

(१) प्रतिदिन 'श्रीषष्ठीदेवीस्तोत्रम्' तथा 'श्रीरामरक्षास्तोत्रम्' का पाठ करें। साथमें '**ॐ ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहा**' इस मन्त्रकी यथासाध्य माला फेरें। ऐसा एक वर्षतक करें।

(२)卐 पीपलकी जटाको पीसकर पीनेसे बन्ध्याको भी पुत्र हो सकता है।

(३) नवनीत (ताजा मक्खन)-को 'ललितासहस्रनामस्तोत्रम्' से अभिमन्त्रित करके स्त्रीको खिलानेसे सन्तान (पुत्र)-की प्राप्ति होती है।

(४) निम्नलिखित यन्त्रको शुभ समयमें गोरोचनसे भोजपत्रपर लिखकर, गुग्गुलकी धूप देकर, चाँदीमें मढ़वाकर वन्ध्या स्त्रीके गलेमें डालें। जिस स्त्रीके पुत्र न होता हो या होकर मर जाता हो, उसे पुत्र होगा

और जीवित भी रहेगा।

शंकरमातु शंकरपितु

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

करवरनलक्ष्मीपति

शंकरराखवारदोष

(५) सन्तानप्राप्तिके लिये नित्य प्रात: श्रीगणेशजीकी दूर्वासे पूजा करें और निम्नलिखित स्तोत्रके इक्कीस अथवा ग्यारह पाठ करें।

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च।
सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च॥ १॥
गुरूदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते।
गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने॥ २॥
विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते।
नमो नमस्ते सत्याय सत्पूर्णाय शुण्डिने॥ ३॥
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः।
प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने॥ ४॥
शरणं भव देवेश सन्ततिं सुदृढ़ां कुरु।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक॥ ५॥
ते सर्वे तव पूजार्थं निरताः स्युर्वरो मतः।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥ ६ ॥

(६)卐 मोरपंखके तीन-चार चँदवे लेकर उसके किनारेके सभी बाल काट दें। फिर उन चँदवोंको बारीक पीस लें। शिवलिंगीके बीज दस ग्राम और भाँगके तीन बीज लेकर उन्हें भी बारीक पीस लें। फिर सबको एक साथ भलीभाँति मिला लें। फिर उसमें पुराना गुड़ मिला दें, जिससे उसकी गोली बँध जाय। दवा तैयार है। यह दवा गर्भधारणके पौने दो माससे ढाई मासके बीचमें केवल एक दिन स्त्रीको लेनी है। रविवारके दिन सूर्यको अर्घ्य देकर, सूर्यके सामने भगवत्स्मरण करते हुए दवा लें। दवा लेते समय दाहिना स्वर चल रहा हो। जो गाय काली अथवा किसी एक रंगकी ही हो और जिसका बछड़ा जीवित हो, उस गायके दूधके साथ यह दवा लें। गाय देसी ही होनी चाहिये। जिस दिन यह दवा लें, उस दिन उसी गायके दूधके सिवाय कुछ भी खायें-पीयें नहीं। इससे पुत्रकी प्राप्ति होती है।

(७) मासिकधर्मके तीन दिनतक प्रतिदिन पलाश (सफेद हो तो उत्तम है)-का एक पत्ता गायके दूधमें पीसकर पी लें। मासिकधर्म समाप्त होनेके बाद गर्भाधान करें। इससे पुत्र होता है।

(८) गर्भाधानके बाद नारियलका बीज (फूल) शनिवारके दिन लें तो पुत्र होता है।

(९) पुरुषका सूर्यस्वर तथा स्त्रीका चन्द्रस्वर चलनेके समय सम्भोग करनेसे पुत्र होता है। अत: पुरुषको बायीं करवट तथा स्त्रीको दायीं करवट सोना चाहिये।

*[पुत्र चाहनेवाली स्त्रीको हीरा धारण नहीं करना चाहिये—'**न धारयेत् पुत्रकामा नारी वज्रं कदाचन।**' (शुक्रनीति ४/५३)]*

(१०)卐 सन्तानका न होना पूर्वजन्मके पापोंका फल है। अत: नि:सन्तानको हरिवंशपुराणका श्रवण तथा दान-पुण्य करना चाहिये। गरीब बालकोंकी सेवा करनी चाहिये, उन्हें पढ़ाना चाहिये।

(११) साधारणतया स्त्रीके ऋतुमती होनेके चौथे दिनसे लेकर सोलहवें दिन तकका समय गर्भाधानके लिये उत्तम समझा जाता है। परंतु इसमें भी गर्भाधानके लिये उत्तरोत्तर दिन उत्तम माने जाते हैं। प्रथम तीन रातें, अष्टमी, एकादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावस्या सर्वथा वर्जित है।

पुत्र उत्पन्न करनेके लिये—

पुत्रकी इच्छा रखनेवालेको नीचे दी गयी किसी रात्रिमें जब पुरुषका दक्षिण स्वर और स्त्रीका वाम स्वर चल रहा हो तथा पृथ्वी-तत्त्व या पृथ्वी-जलका संयोग हो, तब गर्भाधान करना चाहिये। पुत्र उत्पन्न करनेकी रातें तथा उनका फल इस प्रकार है—

१—ऋतुस्रावसे लेकर चौथी रात्रिमें गर्भ रहनेसे अल्पायु तथा दरिद्र पुत्र पैदा होता है।

२—ऋतुस्रावसे लेकर छठी रात्रिमें गर्भ रहनेसे साधारण आयुवाला पुत्र पैदा होता है।

३—ऋतुस्रावसे लेकर आठवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे ऐश्वर्यशाली पुत्र पैदा होता है।

४—ऋतुस्रावसे लेकर दसवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे चतुर पुत्र पैदा होता है।

५—ऋतुस्रावसे लेकर बारहवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्तम पुत्र पैदा होता है।

६—ऋतुस्रावसे लेकर चौदहवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्तम गुण सम्पन्न पुत्र पैदा होता है।

७—ऋतुस्रावसे लेकर सोलहवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे सर्वगुणसम्पन्न पुत्र पैदा होता है।

पुत्री उत्पन्न करनेके लिये—

पुत्रीकी इच्छा रखनेवालेको नीचे दी गई किसी रात्रिमें जब पुरुषका वाम स्वर और स्त्रीका दक्षिण स्वर चल रहा हो तथा जल-तत्त्व या पृथ्वी-जलका संयोग हो, तब गर्भाधान करना चाहिये। पुत्री उत्पन्न करनेकी रातें तथा उनका फल इस प्रकार है—

१—ऋतुस्रावसे लेकर पाँचवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्पन्न कन्या पुत्रवती होती है।

२—ऋतुस्रोवसे लेकर सातवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्पन्न कन्या वन्ध्या होती है।

३—ऋतुस्रावसे लेकर आठवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्पन्न कन्या ऐश्वर्यवती होती है।

४—ऋतुस्रावसे लेकर ग्यारहवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्पन्न कन्या दुश्चरित्रा होती है।

५—ऋतुस्रावसे लेकर तेरहवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्पन्न कन्या वर्णसंकर सन्तति उत्पन्न करनेवाली होती है।

६—ऋतुस्रावसे लेकर पन्द्रहवीं रात्रिमें गर्भ रहनेसे उत्पन्न कन्या सौभाग्यवती राजपत्नी होती है।

ज्ञातव्य— 卐 *तत्त्वको जाननेके लिये काला (आकाश), हरा (वायु), सफेद (जल), लाल (अग्नि) और पीला (पृथ्वी)—इन पाँचों रंगोंकी गोलियाँ बनाकर जेब (पर्स या थैली)-में डालें। फिर जेबमें हाथ डालकर एक गोली बाहर निकालें। जिस रंगकी गोली होगी, वही तत्त्व अभी चल रहा है—ऐसा जानना चाहिये।*

***

गर्भ-रक्षाके लिये

१)卐 जब गर्भ रह जाय, तब इस विधिसे गायका दूध पीयें। एक बर्तनपर दूध छाननेवाला कपड़ा डाल दें और उस कपड़ेपर महीन पिसी हुई मिश्री रख दें। फिर उसपर गायका दूध दुहें, जिससे वह मिश्री दूधमें मिलकर बर्तनमें चली जाय। यह धारोष्ण दूध तत्काल गायके सामने ही बैठकर प्रतिदिन प्रातः खाली पेट एक महीनेतक पीयें।

२)卐 एक कागजमें 'पुर' नामवाले निम्नलिखित १०८ नगरोंके नाम लिखकर उसे लपेटकर लाल धागेसे गर्भिणीकी कमरमें बाँध दें।

ॐ **अधारपुर अनूपपुर अमृतपुर अम्बिकापुर उदयपुर ऊधमपुर कंचनपुर कमलपुर कर्णपुर कल्याणपुर कानपुरकाशीपुर कीरतपुर कुलमीपुर कोल्हापुर खडगपुर गंगापुर गणेशपुर गदरपुर गुरदासपुर गोरखपुर चक्कीरामपुर चन्द्रपुर जगदलपुर जनापुर जबलपुर जमशेदपुर जयपुर जसदेवपुर जहाजपुर जैपुर जोधपुर जौनपुर ज्वालापुर डूँगरपुर तेजपुर दानापुर दामोदरपुर दीनपुर दीमापुर दुर्गापुर देवपुर धौलपुर नरसिंहपुर नागपुर नारायणपुर नैनपुर नोनापुर पहारपुर पालनपुर फतहपुर बंसीपुर बदरपुर बलभद्रपुर बलरामपुर बहादुरपुर बिलासपुर बेलापुर बोलपुर ब्रह्मपुर भगवानपुर भरतपुर भवानीपुर भागलपुर भीखनपुर भीमदासपुर भोजपुर भ्रमरपुर मनकापुर माधोपुर माचलपुर माड़ीपुर मिश्रपुर मिदनापुर मेंहदीपुर यशवन्तपुर रघुनाथपुर रतनपुर रमपुर राजपुर राजरूपपुर राधिकापुर रानीपुर रामपुर रायपुर रावतपुर रेवड़ापुर ललितपुर लालपुर विलासपुर विरसिंहपुर शाहपुर समसपुर सम्बलपुर सलेमपुर सवाईमाधोपुर सहारनपुर सादुलपुर सारंगपुर सिंगापुर सीतापुर सुहागपुर सूरजपुर सोनपुर सोलापुर हरपालपुर हरिहरपुर हिन्दूपुर।**

३) मंगलवारके दिन लाल कपड़ेमें थोड़ा-सा डलीवाला नमक बाँधकर पोटली बना लें और हनुमान्‌जीके मन्दिरमें जाकर इस पोटलीको हनुमान्‌जीके चरणोंका स्पर्श करवायें। घर वापिस आकर यह पोटली गर्भिणी स्त्रीके पेटमें बाँध दें।

४) रविवारको धतूरेकी जड़ उखाड़कर गर्भिणी स्त्रीकी कमरमें बाँधें। नौ मास पूरे होनेपर जड़ खोल दें।

५) 'कहरवा' छः ग्राम ताबीजमें भरकर गर्भिणीकी कमरमें बाँधें।

मृतवत्सानिवारणके लिये—

'क्रूं क्रूं क्रूं दूं दूं दूं दुर्गे दुर्गे महादुर्गे दुर्गं नाशय नाशय हन हन पच पच मथ मथ बन्ध बन्ध हिंस्रान् महाषष्ठीरूपेण इमं बालकं रक्ष रक्ष चिरजीविनं कुरु कुरु ह्रां श्रीं क्रूं दूं फट् स्वाहा।'

१५	२०	१९
२२	१८	१४
१७	१६	२१

उपर्युक्त मन्त्र तथा यन्त्रको भोजपत्रपर लिखकर, ताँबेके ताबीजमें डालकर, गुग्गुलका धूप देकर गर्भके पाँचवें महीनेमें गर्भिणीकी कमरमें बाँध दें। बालकके जन्म लेनेपर कमरसे खोलकर बालकके गलेमें बाँध दें।

***

सुखपूर्वक प्रसवके लिये

१)卐 आजकल प्राय: ऑपरेशनसे प्रसव होता है। यदि स्त्री चक्की चलाये तो उसे प्रसव सुखपूर्वक होता है। घुटनेके बल बैठकर पाँच-सात सेर वजनवाली वस्तुको उठाते ही तुरन्त प्रसव हो जाता है।

२)卐 मेथीके लड्डू खानेसे प्रसव सुखपूर्वक प्रसव होता है। एक किलो मेथी के बीच चक्कीमें पीसकर उनका चूर्ण कर लें। फिर उस चूर्णमें शुद्ध घी एवं गुड़ मिलाकर आधा पावके लड्डू बना लें। ऐसा एक लड्डू गर्भवती स्त्री आठवें महीनेसे प्रतिदिन प्रात: खाना आरम्भ कर दे तो नौ महीने होनेपर सुखपूर्वक बालकका जन्म होता है।

३) प्रसवकी पीड़ा होनेपर सबसे पहले होम्योपैथिक दवा 'कोलोफाइलम-२००' की एक-दो खुराक पन्द्रह मिनटके अन्तरसे देनेपर अगर झूठा दर्द है तो बन्द हो जायगा और सच्चा दर्द है तो तीसरी-चौथी खुराक देते ही सुखपूर्वक प्रसव हो जायगा।

४) गर्भवती स्त्री सातवें माससे होम्योपैथिक दवा 'कोलोफाइलम ३०' की तीन-तीन गोलियाँ प्रतिदिन तीन बार लेना आरम्भ कर दे तो पूरा समय होनेपर सुखपूर्वक प्रसव होता है।

५) प्रसव-पीड़ा होनेपर जिसके फूल न आये हों, ऐसे इमलीके छोटे वृक्षकी जड़ गर्भवतीके सिरके सामने बालोंसे बाँध दें। इससे बिना कष्ट सहज ही प्रसव हो जायगा; परंतु प्रसव होनेके साथ ही उसी क्षण बालोंसमेत उसे कैंचीसे काट देना चाहिये।

६) वटके पत्तेपर निम्नलिखित मंत्र तथा यंत्र लिखकर गर्भवती स्त्रीके मस्तकपर रख दें तो सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

अस्ति गोदावरीतीरे जम्भला नाम राक्षसी।
तस्या: स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्॥

१	८	९	१४
११	१२	३	६
७	२	१५	८
१३	१०	५	४

७) निम्नलिखित दो मन्त्रोंमेंसे कोई एक मन्त्रद्वारा आठ बार किंचित् जल अभिमन्त्रित करके पिलानेसे शीघ्र एवं सुखपूर्वक प्रसव होता है—

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा।

अथवा

मुक्ता: पाशा विपाशाश्च मुक्ता: सूर्येण रश्मय:।
मुक्त: सर्वभयाद् गर्भ एह्येहि मारीच स्वाहा॥

८) प्रसव-पीड़ासे मुक्ति पानेके लिये इस चतुर्व्यूह-यन्त्रको स्त्रीके हाथमें बाँधें। परंतु प्रसव होते ही तुरन्त खोल दें—



९) सूतिकागृहमें बैठकर **'अँ अँ हाँ नमस्त्रिमूर्तय'**—इस मन्त्रका जप करें।

१०) स्त्रीकी कमरमें नीमकी जड़ बाँधें। प्रसव होते ही तुरन्त खोल दें।

११) स्त्रीके बायें हाथपर चुम्बक रख दें।

१२) हुलहुलकी जड़ स्त्रीके हाथ या सिरमें बाँध दें। प्रसव होते ही तुरन्त खोल दें।

***

सर्पभयसे मुक्तिके लिये

(१) निम्नलिखित 'नवनागस्तोत्रम्' का नित्य पाठ करनेसे सर्प काटनेका भय नहीं रहता। यदि स्वप्नमें सर्प दीखते हों तो इसका पाठ करनेसे उनका दीखना बन्द हो जाता है।

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।
शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा॥
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।

(२) इन मन्त्रोंका जप करनेसे सर्पभय नहीं रहता—

असितं चार्तिमन्तं च सुनीथं चापि यः स्मरेत्।
दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्य सर्पभयं भवेत्॥
यो जरत्कारुणा जातो जरत्कारौ महायशाः।
आस्तीकः सर्पसत्रे वः पन्नगान् योऽभ्यरक्षत।
तं स्मरन्तं महाभागा न मां हिंसितुमर्हथ॥
सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर॥

(महाभारत, आदि० ५८। २३-२५)

(३) मेषके सूर्यमें एक मसूर दो नीमपत्रके साथ खानेसे एक वर्षतक सर्पका भय नहीं रहता।

(४) श्वेत पुनर्नवाको चावलके पानीके साथ अच्छे मुहूर्तमें जो पीता है, उसे सर्पका भय नहीं होता। सर्प यदि काट भी ले तो स्वयं नष्ट हो जाता है।

(५) आषाढ़ शुक्ल पंचमीके दिन जो अपनी कमरमें सिरिसकी जड़ बाँधता है तथा चावलका पानी पीता है, उसे सर्पका भय नहीं होता।

उपर्युक्त तीन (३, ४, ५) प्रयोगोंको करते समय इस मन्त्रसे अभिमंत्रित करें—**'ॐ नमो भगवते**

उड्डामरेश्वराय कञ्चितामृतमर्चत जटाय ठः ठः स्वाहा।' मंत्रको ग्रहण या दीपावलीमें सिद्ध कर लें।

(६) पुष्य नक्षत्रमें गिलोय लाकर, उसके छोटे-छोटे टुकड़ोंकी माला बनाकर '**मुनिराजं आस्तीकं नमः**'—इस मंत्रको सात बार जपकर गलेमें पहनकर कहीं भी जानेसे सर्पका भय नहीं रहता।

(७) नेवलेका दाँत ताबीजमें डालकर पासमें रखनेसे साँप नहीं काटता।

(८)卐 गाय अथवा भैंसका सींग जलानेसे उसके धुएँसे सर्प भाग जाते हैं।

(९) **ॐ नमो भगवते गरुड़ाय महेन्द्ररूपाय पर्वतशिखरकाररूपाय संहर संहर मोचय मोचय चालय चालय पातय पातय निर्विष निर्विष विषमप्यमृतं चाहारसदृशं रूपमिदं प्राज्ञापयामि स्वाहा। नमः लल लल वर वर दुन दुन क्षिप क्षिप हर हर स्वाहा।**

—इस गरुड़मन्त्रका जप करनेसे भक्षित स्थावर विष, विषाक्त अन्न आदि भी अमृततुल्य हो जाता है।

***

शनि-पीड़ानाशके लिये

(१) प्रतिदिन प्रातःकाल इस स्तोत्रका पाठ करनेसे साढ़ेसाती शनिकी पीड़ा नष्ट होती है—

पिप्पलाद उवाच

ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसञ्ज्ञाय नमस्ते सौरये विभौ॥
नमस्ते मन्दसञ्ज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥

(२) शनिवारको हनुमानाष्टकका सम्पुट लगाकर हनुमानचालीसाके सात पाठ करें।

(३) शनिवारको हनुमानजीकी प्रतिमापर मीठे तेलकी धारा दें।

***

छायापुरुष-साधना

卐 प्रातःकाल एकान्त स्थानपर जाकर खुले आकाशके नीचे खड़े हो जायँ। सूर्यकी ओर पीठ करके अपने दोनों हाथों और पैरोंको कुछ फैला लें। फिर '**ह्रीं परब्रह्मणे नमः**'—इस मन्त्रका जप करते हुए अपनी छायाकी गरदनको कुछ देरतक अपलक देखें। फिर अपनी दृष्टिको उठाकर आकाशमें अपलक देखें तो आकाशमें अपनी सफेद रंगकी छाया दीखेगी। इसीको 'छायापुरुष' कहते हैं। इसे शिवस्वरूप माना गया है।

× × ×

यदि छायापुरुष कृष्णवर्ण दीखे तो छः मासमें मृत्यु होगी। यदि पीला दीखे तो व्याधि, लाल दीखे तो भय, नीला दीखे तो हानि, और नाना वर्ण दीखें तो सिद्धियोंकी प्राप्ति होती है।

यदि छायापुरुषका कान न दीखे तो बारह वर्ष, कंधा न दीखे तो सात वर्ष, हाथ न दीखे तो

दस वर्ष, मुख न दीखे तो एक वर्ष, पार्श्व (कुक्षि) न दीखे तो तीन वर्ष, हृदय न दीखे तो दो वर्ष और सिर न दीखे तो छह मास आयु शेष समझनी चाहिये। हृदयमें छिद्र दीखे तो सात मासमें तथा दो शरीर दीखें तो अतिशीघ्र मृत्यु होती है। यदि छायापुरुषमें कोई विकार न दीखे तो वर्षभर न रोग होगा, न मृत्यु। (समरसार ७९-८०)

× × ×

यदि छायामें गुल्फ (टखने), पैर तथा पेट न दीखें अथवा भुजा न दीखे तो मृत्यु होगी। यदि वाम भुजा न दीखे तो पत्नीकी मृत्यु, दक्षिण भुजा न दीखे तो बन्धुकी मृत्यु और एक मासमें अपनी मृत्यु होगी। यदि सिर न दीखे तो छह मास, जंघा न दीखे तो आठ दिनमें, कंधे न दीखें तो आठ दिनमें, सर्वथा छाया न दीखे तो तत्काल मृत्यु जाननी चाहिये। (शिवस्वरोदय)

***

प्रकीर्ण

(१)

अग्निसे रक्षाके लिये—

आग लगनेपर जिस ओर उसकी गति हो, उस दिशामें खड़े होकर, जिस नासिकासे निःश्वास चलता हो, उस नासिकासे वायु खींचते हुए जल पीयें। उसके बाद उस पात्रमेंसे सात रत्ती (चुल्लू) जल इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके अग्निमें डालें—

उत्तरस्यां च दिग्भागे मारीचो नाम राक्षसः।
तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुतो वह्निः स्तम्भ स्वाहा॥

यह मन्त्र न बोलनेसे भी केवल उपर्युक्त उपायसे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। *[किसीसे एक लोटेमें जल मँगाकर यह कार्य किया जा सकता है।]*

(२)

सुखपूर्वक निद्राके लिये—

ॐ अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः।
कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः॥

सोते समय इसका जप करें।

(३)

कलंक-चतुर्थीसे रक्षाके लिये—

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीकी रातमें कभी चन्द्रमाकी ओर न देखे। जो देखता है, उसे झूठा कलंक प्राप्त होता है। यदि चन्द्रमा दीख जाय तो उस दोषकी शान्तिके लिये 'स्यमन्तकमणिकी कथा' (भागवत, स्कन्ध १०, अध्याय ५६) सुननी चाहिये तथा इस मन्त्रका जप करना चाहिये—

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥

(विष्णुपुराण ४। १३। ४२; नारदपुराण पूर्व० ११३। ३९)

‘सिंहने प्रसेनको मारा और सिंहको जाम्बवान्‌ने मार गिराया। सुकुमार बालक, तू रो मत। यह स्यमन्तक अब तेरा ही है।’

(४)

मुकदमा जीतनेके लिये—

बालक जन्म लेता है तो छठीके दिन उसे नया कपड़ा पहनाया जाता है। उस दिन उसे पीले रंगका नया वस्त्र पहनाकर उतारकर अपने पास रख लें। यह वस्त्र सदा मुकदमा जीतनेके काम आयेगा। जिस दिन कोर्टमें हाजिर होना हो, उस दिन इस वस्त्रको साथ लेकर जायँ।

(५)

चूहे भगानेके लिये—

पीत पीताम्बर मूशा गाँधी, ले जाइहु हनुवन्त तु बाँधी।
ए हनुवन्त लंका के राउ, एहि कोणे पैसे हु एहि कोणे जाउ।

स्नान करके हल्दीकी पाँच गाँठ और अक्षतको लेकर इस मन्त्रको पढ़कर घर या खेतमें डाल दें।

(६)

घरकी कलह-निवृत्तिके लिये—

इस मन्त्रका प्रतिदिन एक माला (१०८ बार) जप करें—

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

(७)

शत्रुभय-नाशके लिये—

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय। ह्लीं ॐ स्वाहा।

—इस मन्त्रका पाँच लाख जप करें।

(८)

बन्धनमुक्तिके लिये—

हा नाथ! हा नरवरोत्तम। हा दयालो!
सीतापते! रुचिरकुण्डलशोभिवक्त्र!
भक्तार्तिदाहक मनोहररूपधारिन्
मां बन्धनात् सपदि मोचय मा विलम्बम्॥

—इसका पाँच लाख जप करें।

(९)

सर्वसंकटविनाशके लिये—

(१) 'पञ्चमुखीहनुमत्कवचम्' का प्रतिदिन ११ पाठ करें।

(२) 'देवीकवचम् (ब्रह्मकृत)' का प्रतिदिन एक पाठ करें।

(३) 'संकटमोचन हनुमानाष्टकम्' का प्रतिदिन १०८ पाठ करें।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

तृतीय प्रकरण

श्रीमद्भगवद्गीताके मन्त्र

गीताके जिस श्लोकको सिद्ध करना हो, उसका सम्पुट लगाकर पूरी गीताका पाठ करें। ऐसा करनेसे वह श्लोक (मन्त्र) सिद्ध हो जायगा।

सम्पुटकी अपेक्षा भी सम्पुटवल्ली लगाकर गीताका पाठ करना बहुत बढ़िया है। सिद्ध किये जानेवाले श्लोकका गीताके प्रत्येक श्लोकसे पहले और पीछे एक बार पाठ करना 'सम्पुट पाठ' और दो बार पाठ करना 'सम्पुटवल्ली पाठ' कहलाता है।

मन्त्रको किसी कारणसे सिद्ध न कर सकें और अभीष्ट कार्य सिद्ध करनेकी तीव्र उत्कण्ठा हो तो बिना सिद्ध किये मन्त्रका जप करनेसे भी कार्य सिद्ध हो सकता है।

अभीष्ट कार्यकी सिद्धिके लिये गंगाजीके जलमें खड़े होकर उपर्युक्त प्रकारसे सिद्ध किये हुए मन्त्रका जप करें। ऐसा न कर सकें तो गंगाजीके जलमें पत्थरोंका आसन बनाकर उसपर ऊनका आसन बिछा दें और उसपर बैठकर जप करें। यह भी न कर सकें तो गंगाजीके किनारेपर बालूमें अपना ऊनी आसन बिछाकर और उसपर बैठकर मन्त्रका जप करें। अगर गंगाजीका सान्निध्य उपलब्ध न हो तो अपने घरमें ही किसी एकान्त कमरेमें गोबर और गोमूत्रको पानीमें मिलाकर लीप दें, फिर उसपर अपना ऊनी आसन बिछा दें और उसपर बैठकर मन्त्रका जप करें।

गीतोक्त सिद्ध मन्त्रोंका निम्नलिखित कार्योंमें प्रयोग किया जा सकता है—

(१) कोई बात भगवान्‌से पूछनी हो, किसी समस्याका समाधान पाना हो, 'मैं ज्ञानमार्गमें चलूँ या भक्तिमार्गमें'—इस उलझनको मिटाना हो तो रात्रिके समय एकान्त कमरेमें आसन बिछाकर बैठ जायँ। कमरेकी बत्ती बुझा दें। केवल एक अगरबत्ती जलाकर रखें। अँधेरेमें चमकती हुई उस अगरबत्तीपर अपनी दृष्टि रखें और भगवान्‌का ध्यान करें। भगवान् मेरे सामने खड़े हैं और मैं अर्जुनरूपसे भगवान्‌से पूछ रहा हूँ—ऐसा भाव रखकर इस श्लोकका पाठ करें और साथमें अर्थका भी चिन्तन करते रहें—

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥

(गीता २। ७)

'कायरतारूप दोषसे तिरस्कृत स्वभाववाला और धर्मके विषयमें मोहित अन्तःकरणवाला मैं आपसे पूछता हूँ कि जो निश्चित कल्याण करनेवाली हो, वह बात मेरे लिये कहिये। मैं आपका शिष्य हूँ। आपके शरण हुए मुझे शिक्षा दीजिये।'

पाठ करते-करते श्लोकके जिस चरणमें अथवा जिन पदोंमें मन लग जाय, उसीका पाठ करना शुरू कर दें; जैसे—'**पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः; पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः**' अथवा '**निश्चितं ब्रूहि तन्मे; निश्चितं ब्रूहि तन्मे**' या '**शाधि मां त्वां प्रपन्नम्; शाधि मां त्वां प्रपन्नम्**' आदि किसी एकको बार-बार आवृत्ति करते रहें। इस तरह पाठ करते हुए नींद आने लगे तो पाठ करते हुए ही सो जायँ। ऐसा करनेसे स्वप्नमें भगवान्‌का संकेत मिलता है। उस संकेतसे समझ लेना चाहिये कि भगवान्‌का अमुक भाव है। अगर संकेत समझमें न आये तो दूसरे दिन पुनः रात्रिमें उपर्युक्त विधिसे पाठ करें और भगवान्‌से प्रार्थना करें कि महाराज!

आप लिखकर बतायें। ऐसा करनेसे स्वप्नमें लिखकर सामने आ जायगा। लिखा हुआ भी समझमें न आये तो दूसरे दिन पुनः रात्रिमें उपर्युक्त विधिसे पाठ करें और भगवान्‌से प्रार्थना करें कि प्रभो! आप कहकर बतायें। ऐसा करनेसे स्वप्नमें आवाज आ जायगी और आवाजके साथ ही नींद खुल जायगी।

अगर एक रातमें ऐसा स्वप्न न आये तो जबतक स्वप्न न आये, तबतक उपर्युक्त विधिसे प्रतिदिन रातमें श्लोकका पाठ करते रहें। ग्यारह अथवा इक्कीस दिनतक पाठ किया जा सकता है। इसमें जितनी तेज लगन होगी, उतनी ही जल्दी काम होगा।

(२) मनमें दो बातोंकी उलझन हो और उनका समाधान पाना हो तो उपर्युक्त विधिसे ही इस श्लोकका पाठ करें—

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्॥

(गीता ३। २)

(३) भूत-प्रेतकी बाधाको दूर करना हो तो इस श्लोकको पहले कही गयी विधिसे सिद्ध कर लें—

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥

(गीता ११। ३६)

जिस व्यक्तिको भूत-प्रेतने पकड़ा है, उसको इस श्लोकका पाठ करते हुए मोरपंखसे झाड़ा दें अथवा अपने हाथमें शुद्ध जलसे भरा हुआ लोटा लें और इस श्लोकको बोलकर जलमें फूँक मारते रहें, फिर वह जल उस व्यक्तिको पिला दें। इन दोनों प्रयोगोंमें इस श्लोकका सात, इक्कीस या एक सौ आठ बार पाठ कर सकते हैं। इस श्लोकको भोजपत्र या सफेद कागजपर अनारकी कलमके द्वारा अष्टगन्धसे लिखें और ताबीजमें डालकर रोगीके गलेमें लाल धागेसे पहना दें।

(४) शास्त्रार्थमें, वाद-विवादमें विजय पानेके लिये इस श्लोकका पाठ करना चाहिये—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

(गीता १८। ७८)

(५) सब जगह भगवद्भाव करनेके लिये निम्नलिखित दो श्लोकोंमेंसे किसी एकका पाठ करें—

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव॥

(गीता ७। ७)

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः॥

(गीता ७। १९)

(६) भगवान्‌की भक्ति प्राप्त करनेके लिये निम्नलिखित श्लोकोंमेंसे किसी एकका पाठ करें—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥

(गीता ९। ३४)

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप॥
(गीता ११। ५४)

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥
(गीता ११। ५५)

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः॥
(गीता १२। ८)

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥
(गीता १८। ६६)

इस तरह जिस कार्यके लिये जो श्लोक ठीक मालूम दे, उसीका पाठ करते रहें तो कार्य सिद्ध हो जायगा। अगर वह श्लोक अर्जुनका हो तो अपनेमें अर्जुनका भाव लाकर भगवान्से प्रार्थना करें, और भगवान्का श्लोक हो तो 'भगवान् मेरेसे कह रहे हैं'—ऐसा भाव रखते हुए पाठ करें। गीताके श्लोकोंपर जितना अधिक श्रद्धा-विश्वास होगा, उतनी ही जल्दी काम सिद्ध होगा।

[गीताके ग्यारहवें अध्यायके श्लोक मन्त्रोंमें विशेष काम आते हैं।]

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज
—'गीता-दर्पण' पुस्तकसे

***

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रीरामचरितमानसके मन्त्र

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस एक प्रासादिक ग्रन्थ है। इस असाधारण ग्रन्थके दोहे-चौपाई मन्त्र-सदृश पवित्र एवं प्रभावकारी हैं तथा आश्रित भक्तको अपेक्षित फल प्रदान करनेमें समर्थ हैं। इस ग्रन्थका पाठ अथवा अनुष्ठान करनेसे अथवा इसके दोहे चौपाइयोंको सिद्ध करके जप करनेसे अनेक सकाम एवं निष्काम साधकोंको अभीष्टकी प्राप्ति हुई है और ऐसे प्रसंग प्रायः 'कल्याण'-में छपते रहे हैं।

दोहे-चौपाइयोंको सिद्ध करनेकी विधि

रातमें दस बजेके बाद अष्टांग-हवनकी सामग्री और एक माला लेकर एकान्तमें बैठ जायँ। अपना मुख काशीकी ओर कर लें। कारण कि काशीमें भगवान् शंकरजीने मानसके दोहे-चौपाइयोंको मन्त्र-शक्ति प्रदान की है, इसलिये काशीकी ओर मुख करके उन्हें साक्षी बनाकर श्रद्धासे जप करना चाहिये। एक बार चौपाई पढ़कर हवन करें और मालाका एक मनका पीछे करें। इस प्रकार १०८ बार मन्त्रोच्चारणके साथ हवन करते जायँ। बस, मन्त्र सिद्ध हो गया। फिर जिस कार्यके लिये आवश्यकता हो, इनका श्रद्धापूर्वक जबतक कार्य सिद्ध न हो, नित्य जप करते रहना चाहिये।

अष्टांग-हवनकी सामग्री—१) चन्दनका बुरादा, २) तिल, ३) शुद्ध घी, ४) शक्कर, ५) अगर, ६) तगर, ७) कपूर, ८) शुद्ध केशर, ९) नागरमोथा, १०) पंचमेवा, ११) जौ, और १२) चावल।

[यदि हवन न कर सकें तो श्रद्धा-विश्वासपूर्वक किसी भी चौपाईका सम्पुट लगाकर श्रीरामचरित-मानसका पाठ करनेसे भी कार्यसिद्धि होती है। उपर्युक्त विधिसे (हवन करके) मन्त्र सिद्ध कर लेनेपर भी सम्पुट-पाठ कर सकते हैं; इससे विशेष शक्ति आती है। जबतक कार्यसिद्धि न हो, तबतक पाठ करते रहना चाहिये।]

रक्षारेखा—मन्त्र सिद्ध करनेके लिये या किसी संकटपूर्ण जगहपर रात व्यतीत करनेके लिये अपने चारों ओर रक्षाकी रेखा खींच लेनी चाहिये। लक्ष्मणजीने सीताजीकी कुटीके आसपास जो रक्षारेखा खींची थी, उसी लक्ष्यपर रक्षामन्त्र बनाया गया है। इसे १०८ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिये—

मामभिरक्षय रघुकुल नायक।
धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥
(लंका० ११५)

जाननेयोग्य आवश्यक बातें

जिस उद्देश्यके लिये जिस चौपाई, दोहे या सोरठेका जप करना बताया गया है, उसको सिद्ध करनेके लिये अष्टांग-हवनकी सामग्रीसे उस चौपाई, दोहे या सोरठेके द्वारा १०८ बार हवन करना चाहिये। यह हवन केवल एक ही दिन करना है। इसके लिये कोई अलग कुण्ड बनानेकी आवश्यकता नहीं है। मामूली मिट्टीकी वेदी बनाकर, उसपर अग्नि रखकर उसमें आहुति दे देनी चाहिये। प्रत्येक आहुतिमें चौपाई आदिके अन्तमें **'स्वाहा'** बोलना चाहिये। यह हवन रातको १० बजेके बाद ही करना चाहिये।

सब चीजें मिलाकर प्रत्येक आहुति लगभग पौन तोले [लगभग ८ ग्राम]-की होनी चाहिये। इस हिसाबसे १०८ आहुतिके लिये एक सेर [लगभग ९३५ ग्राम] सामग्री सब चीजें मिलाकर बना लेनी चाहिये। कोई चीज कम-ज्यादा भी हो तो आपत्ति नहीं। पंचमेवामें पिस्ता, बादाम, किशमिश, अखरोट और काजू ले सकते हैं। इनमेंसे कोई चीज न मिले तो उसके बदलेमें चिलगोजा, मिश्री, छुहारा, चिरौंजी अथवा नारियलकी गिरी

भी मिला सकते हैं। शुद्ध केशर चार आनेभर (३ ग्राम) ही डालनेसे काम चल जायगा। अधिककी आवश्यकता नहीं है।

हवन करते समय माला रखनेकी आवश्यकता १०८ की संख्या गिननेभरके लिये है। इसलिये दाहिने हाथसे आहुति देकर फिर दाहिने हाथसे ही मालाका एक मनका सरका देना चाहिये। फिर माला या तो बायें हाथमें ले लेनी चाहिये या आसनपर रख देनी चाहिये। फिर आहुति देनेके बाद उसे दाहिने हाथमें लेकर मनका सरका देना चाहिये। माला रखनेमें असुविधा हो तो गेहूँ, जौ या चावल आदिके १०८ दाने रखकर उनसे गिनतीकी जा सकती है। बैठनेके लिये आसन ऊनका अथवा कुशका होना चाहिये। सूती कपड़ेका हो तो वह धोया हुआ पवित्र होना चाहिये। कपड़े भी शुद्ध धुले पहनने चाहिये। दोहे-चौपाईका उच्चारण मन-ही-मन या बोलकर भी कर सकते हैं, पर होना चाहिये स्पष्ट और शुद्ध। परिवारके सदस्य मिलकर हवन न करें। जिसको जप करना हो, वही हवन करे।

हवन और जप स्वयं ही करना चाहिये। बीमारी आदिके कारण स्वयं न कर सकें तो घरके किसी दूसरे सदस्यके द्वारा अथवा ब्राह्मणके द्वारा भी कराया जा सकता है। अनुष्ठानके दिन व्रत रखनेकी आवश्यकता नहीं है।

यदि कोई चौपाई या दोहा यदि लंकाकाण्डका हो तो उसे शनिवारको हवन करके सिद्ध करना चाहिये। दूसरे काण्डोंके चौपाई-दोहे किसी भी दिन हवन करके सिद्ध किये जा सकते हैं। 'रक्षारेखा'-की चौपाई भी लंकाकाण्डकी है, पर वह किसी भी दिन हवन करके सिद्ध की जा सकती है।

'रक्षारेखा' मन्त्रको सिद्ध करनेके लिये अलग हवन करना है और जप करनेवाले मन्त्र (चौपाई-दोहे)-के लिये अलग। एक बार हवनके द्वारा मन्त्र सिद्ध कर लेनेके बाद फिर न तो रक्षारेखाके मन्त्रको और न उस जपवाले मन्त्रको ही दुबारा हवन करके सिद्ध करना है। एक बार कर लेनेके बाद वह सदाके लिये हो गया। 'रक्षारेखा'-की चौपाई एक बार बोलकर जहाँ बैठे हों, वहाँ अपने आसनके चारों ओर चौकोर रेखा खींच लेनी चाहिये। रक्षारेखाकी चौपाईको भी ऊपर लिखे अनुसार १०८ आहुति देकर सिद्ध कर लेना चाहिये। पर रक्षा-रेखा न भी खींची जाय तो भी आपत्ति नहीं है।

एक दिन हवन करनेसे मन्त्र सिद्ध हो जायगा। इसके बाद जबतक कार्य सफल न हो, तबतक उस मन्त्र (चौपाई-दोहे)-का प्रतिदिन कम-से-कम १०८ बार प्रात:काल या रात्रिको जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिये। अधिक कर सके तो अधिक अच्छा। कोई चाहे तो नियमके जपके सिवा दिनभर चलते-फिरते भी उस चौपाई या दोहेका जप कर सकते हैं। जितना अधिक हो, उतना ही उत्तम है।

कोई दो कार्योंके लिये दो चौपाइयोंका अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं, पर दोनों चौपाइयोंको पहले दो दिनोंमें अलग-अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिये।

स्त्रियाँ भी इस अनुष्ठानको कर सकती हैं। परंतु रजस्वला होनेकी स्थितिमें जप बन्द रखना चाहिये। हवन भी रजस्वला-अवस्थामें नहीं करना चाहिये।

जप करते समय मनमें यह विश्वास अवश्य रखना चाहिये कि भगवान् श्रीसीतारामजीकी अहैतुकी कृपासे मेरा कार्य अवश्य सफल होगा।

१. विपत्ति-नाशके लिये

राजिवनयन धरें धनु सायक।
भगत बिपति भंजन सुखदायक॥
(बाल० १८। ५)

२. संकट-नाशके लिये

जौं प्रभु दीनदयालु कहावा।
आरति हरन बेद जसु गावा॥
जपहिं नामु जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥
(बाल० ५९। ३; २२। ३; सुन्दर० २७। २)

३. कठिन क्लेश-नाशके लिये

हरन कठिन कलि कलुष कलेसू।
महामोह निसि दलन दिनेसू॥
(अयोध्या० ३२६। ३)

४. विघ्न-नाशके लिये

सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही।
राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही॥
(बाल० ३९। ३)

५. खेद-नाशके लिये

जब तें रामु ब्याहि घर आए।
नित नव मंगल मोद बधाए॥
(अयोध्या० १। १)

६. महामारी, हैजा और मरीके प्रभावसे बचनेके लिये

जय रघुबंस बनज बन भानू।
गहन दनुज कुल दहन कृसानू॥
(बाल० २८५। १)

७. विविध रोगों तथा उपद्रवोंकी शान्तिके लिये

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
(उत्तर० २१। १)

८. मस्तिष्ककी पीड़ा दूर करनेके लिये

हनूमान अंगद रन गाजे।
हाँक सुनत रजनीचर भाजे॥
(लंका० ४७। ३)

९. विष-नाशके लिये

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥
(बाल० १९। ४)

१०. अकाल-मृत्यु-निवारणके लिये

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट॥
(सुन्दर० ३०)

११. भूतको भगानेके लिये

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥
(बाल० १७)

१२. नजर झाड़नेके लिये

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी।
निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी॥
(बाल० १९८। ३)

१३. खोयी हुई वस्तु पुनः प्राप्त करनेके लिये

गई बहोर गरीब नेवाजू।
सरल सबल साहिब रघुराजू॥
(बाल० १३। ४)

१४. जीविका-प्राप्तिके लिये

बिस्व भरन पोषन कर जोई।

ताकर नाम भरत अस होई॥

(बाल० १९७। ४)

१५. दरिद्रता दूर करनेके लिये

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद घन दारिद दवारि के॥

(बाल० ३२। ४)

१६. लक्ष्मी-प्राप्तिके लिये

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं।
जद्यपि ताहि कामना नाहीं।
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ।
धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ॥

(बाल० २९४। १-२)

१७. पुत्र-प्राप्तिके लिये

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान॥

(बाल० २००)

१८. सम्पत्तिकी प्राप्तिके लिये

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख संपति नाना बिधि पावहिं॥

(उत्तर० १५। २)

१९. ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करनेके लिये

साधक नाम जपहिं लय लाएँ।
होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ॥

(बाल० २२। २)

२०. सब सुख-प्राप्तिके लिये

सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई।
लहहिं भगति गति संपति नई॥

(उत्तर० १५। ३)

२१. मनोरथ-सिद्धिके लिये

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥

(किष्किन्धा० ३० क)

२२. कुशल-क्षेमके लिये

भुवन चारिदस भरा उछाहू।
जनकसुता रघुबीर बिआहू॥

(बाल० २९६। २)

२३. मुकदमा जीतनेके लिये

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥

(किष्किन्धा० ३०। २)

२४. शत्रुके सामने जाते समय

कर सारंग साजि कटि भाथा।
अरि दल दलन चले रघुनाथा॥

(लंका० ६८। १)

२५. शत्रुको मित्र बनानेके लिये

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई॥

(सुन्दर० ५। १)

२६. शत्रुता-नाशके लिये

बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप बिषमता खोई॥

(उत्तर० २०। ४)

२७. शास्त्रार्थमें विजय पानेके लिये

तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा।
आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥

(बाल० २६८। १)

२८. विवाहके लिये

तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।
माँडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लईं हँकारि कै॥

(बाल० ३२५। छंद २)

२९. यात्राकी सफलताके लिये

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥
(सुन्दर० ५। १)

३०. परीक्षामें पास होनेके लिये

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी।
कबि उर अजिर नचावहिं बानी॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती।
जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती॥
(बाल० १०५। ३; २८। २)

३१. आकर्षणके लिये

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥
(बाल० २५९। ३)

३२. स्नानसे पुण्य-लाभके लिये

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग॥
(बाल० २)

३३. निन्दाकी निवृत्तिके लिये

रामकृपाँ अवरेब सुधारी।
बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी॥
(अयोध्या० ३१७। २)

३४. विद्या-प्राप्तिके लिये

गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई।
अलप काल बिद्या सब आई॥
(बाल० २०४। २)

३५. उत्सवकी सफलताके लिये

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु॥
(बाल० ३६१)

३६. यज्ञोपवीत धारण करके उसे सुरक्षित रखनेके लिये

जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग॥
(बाल० ११)

३७. प्रेम बढ़ानेके लिये

सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति॥
(उत्तर० २१। १)

३८. कातरकी रक्षाके लिये

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ।
एहि अवसर सहाय सोइ होऊ॥
(बाल० १३२। ३)

३९. भगवत्स्मरण करते हुए आरामसे मरनेके लिये

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग॥
(किष्किन्धा० १०)

४०. विचार शुद्ध करनेके लिये

ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥
(बाल० १८। ४)

४१. संशय-निवृत्तिके लिये

रामकथा सुंदर कर तारी।
संसय बिहग उड़ावनिहारी॥
(बाल० ११४। १)

४२. ईश्वरसे अपराध क्षमा करानेके लिये

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता।
छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता॥
(बाल० २८५। ३)

४३. विरक्तिके लिये

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति॥

(अयोध्या० ३२६)

४४. ज्ञानकी प्राप्तिके लिये

छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा॥

(किष्किन्धा० ११। २)

४५. भक्तिकी प्राप्तिके लिये

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम॥

(उत्तर० ८४ ख)

४६. हनुमान्‌जीको प्रसन्न करनेके लिये

सुमिरि पवनसुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू॥

(बाल० २६। ३)

४७. मोक्ष-प्राप्तिके लिये

सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा।
कालसर्प जनु चले सपच्छा॥

(लंका० ६८। २)

४८. सीतारामजीके दर्शनके लिये

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥

(बाल० १४६)

४९. जानकीजीके दर्शनके लिये

जनकसुता जग जननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥

(बाल० १८। ४)

५०. श्रीरामचन्द्रजीको वशमें करनेके लिये

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान॥

(बाल० २३३)

५१. सहज स्वरूप-दर्शनके लिये

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना।
बिस्वबास प्रगटे भगवाना॥

(बाल० १४६। ४)

—'कल्याण' वर्ष २४। ९; ३३। ११-१२; तथा ४६। ३ से साभार।

***

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

महामन्त्र—'हे नाथ!'

[परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज]

१) मन्त्रोंमें, अनुष्ठानोंमें उतनी शक्ति नहीं है, जितनी शक्ति प्रार्थनामें है। अतः 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो।

× × ×

२) कोई भी आफत आये तो 'हे नाथ! हे नाथ!' पुकारो। 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—यह एक मन्त्र है, जिसे सब भाई-बहन याद कर लो और बार-बार कहते रहो।

× × ×

३) 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो। सब बीमारी, आफत, शंका मिट जायगी। यह सब रोगोंकी रामबाण दवा है।

× × ×

४) चलते-फिरते, उठते-बैठते, रातमें, दिनमें, काम करते हुए, हर समय व्याकुलतापूर्वक सच्चे हृदयसे 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो। अनन्त जन्मोंके सब पाप भस्म हो जायँगे!

× × ×

५) भगवान्से एक ही चीज माँगो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। यह एक मन्त्र है, जिससे भगवान्की स्मृति होगी। स्मृति होनेसे आपमें शान्ति, आनन्द, दया, क्षमा, उदारता आदिका ठिकाना नहीं रहेगा। सम्पूर्ण दु:खोंका अत्यन्त अभाव हो जायगा। केवल उनको हर समय याद रखो।

× × ×

६) 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—यह एक मन्त्र है, जिसे सब भाई-बहन याद कर लो और बार-बार कहते रहो। सुबह उठकर, स्नान करके, नित्य-नियम करके, दिनमें, शाममें, रात्रि सोते समय—इस प्रकार दिनमें पाँच-सात बार नियमसे 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—ऐसा कहते रहो तो आप देखो कि आपके जीवनमें फर्क पड़ता है कि नहीं पड़ता! भगवान्की स्मृति रहनेसे सम्पूर्ण विपत्तियोंका नाश हो जायगा—**'हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्'** (श्रीमद्भा० ८। १०। ५५)। आपका अन्तःकरण शुद्ध, निर्मल हो जायगा। भगवान्के साथ आपका सम्बन्ध जुड़ जायगा।

× × ×

७) भगवान्को पुकारो कि 'हे नाथ! ऐसी कृपा करो कि मैं आपको भूलूँ नहीं'। इस प्रकार भगवान्से प्रार्थना करो तो शान्ति मिलेगी। कोई आफत आ जाय तो एकान्तमें बैठकर पन्द्रह-बीस मिनट, आधा घण्टा 'राम-राम-राम-राम' करो तो शान्ति मिलेगी। ज्यादा करोगे तो ज्यादा लाभ होगा। भक्तोंके चरित्र पढ़ो तो शान्ति मिलेगी।

× × ×

८) कलियुगसे बचना चाहो तो हरदम भगवान्को पुकारते रहो—'हे नाथ! हे मेरे नाथ!!'

× × ×

९) *श्रोता*—चारों तरफ लड़ाई-झगड़ा होनेका आसार हो रहा है, तो यह मृत्युभय कैसे मिटे?
स्वामीजी—भगवान्को पुकारो कि 'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। यह उपाय है!

***

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नम: ॥

सर्वसिद्धिप्रदायक चौंतीसा तथा बीसा यन्त्र

[परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज]

मैंने जितने यन्त्र देखे हैं, उनमें 'चौंतीसा यन्त्र' बहुत विलक्षण लगा! इसमें ये विलक्षणताएँ हैं—

१—इस यन्त्रमें एकसे लेकर सोलहतक अंक आये हैं; न तो कोई अंक छूटा है और न ही कोई अंक दो बार आया है!

२—इसको ६४ प्रकारसे गिननेपर कुल जोड़ ३४ ही आता है! यहाँ चौंतीसा यन्त्रका एक प्रकार दिया गया है। इस यन्त्रको ३८४ प्रकारसे बनाया जा सकता है।

चौंतीसा यन्त्र और उसको लिखनेकी तथा सिद्ध करनेकी विधि इस प्रकार है—

९	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

इस यन्त्रको सफेद कागज या भोजपत्रपर अनारकी कलमसे अष्टगन्ध (सफेद चन्दन, लाल चन्दन, केसर, कुंकुम, कपूर, कस्तूरी, अगर एवं तगर)-के द्वारा लिखना चाहिये। यन्त्र लिखते समय क्रमसे ही अंक लिखने चाहिये; जैसे—पहले १ लिखें, फिर २ लिखें, फिर ३ आदि।

इस चौंतीसा यन्त्रको सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण या दीपावलीकी रात्रिको एक सौ आठ बार लिखनेसे यह सिद्ध हो जाता है। शीघ्र सिद्ध करना हो तो शनिवारके दिन धोबी-घाटपर बैठकर उपर्युक्त प्रकारसे एक-एक यन्त्र लिखकर धोबीकी पानीसे भरी नाँदमें डालता जाय। इस तरह एक सौ आठ यन्त्र नाँदमें डालनेके बाद उन सभी यन्त्रोंको नाँदमेंसे निकालकर बहते हुए जलमें बहा दे। ऐसा करनेसे यन्त्र सिद्ध हो जाता है। यन्त्र सिद्ध करनेके बाद भी प्रत्येक सूर्य तथा चन्द्रग्रहणके समय और दीपावली तथा होलीकी रात्रिमें यह यन्त्र एक सौ आठ या चौंतीस बार लिखकर नदीमें बहा देना चाहिये।

ग्रहण, दीपावलीके सिवाय यन्त्रको शनिवारकी रातमें भी लिख सकते हैं। कारण कि मंगल, शनि और रवि—तीनों उग्र ग्रह हैं। अत: शनि-रवि दोनोंकी सन्धि होनेसे शनिकी रात विशेष है।

यन्त्रको नदीके किनारे बैठकर, पैर पानीमें डुबोकर यन्त्र लिखनेसे विशेष शक्ति आती है। स्थिर पानीके पास बैठनेकी भी महिमा है, फिर बहते पानीके पास तो और अधिक लाभ है। गंगाजी (बहते जल)-में पैर डालकर यन्त्र लिखनेसे भी विशेष सिद्धि अथवा प्रभाव होता है। यदि जल अधिक ठण्डा होनेपर पैरोंमें ठण्डक लगे तो गंगाजीके किनारे बैठ जाय और पैरमें एक धागा बाँधकर उसका दूसरा सिरा गंगाजीमें छोड़ दे। इससे गंगाजीके साथ सम्बन्ध बना रहेगा।

प्रयोगकी विधि—

चौंतीसा यन्त्रका विविध कष्टोंके निवारणमें उपयोग किया जा सकता है।

यदि किसी व्यक्तिको यन्त्र धारण करना हो तो यन्त्रको ताँबेके चौकोर ताबीजमें (बिना मोड़े) अच्छी

तरह बन्द कर दें। ताबीजके ऊपर एक लाल कपड़ा चढ़ाकर सिल दें। फिर उसे लाल धागेसे गलेमें, बाजूमें या कमरमें बाँध लें। स्त्री बायीं बाजूमें और पुरुष दायीं बाजूमें बाँधे। बाँधनेसे पहले ताबीजको गंगाजलसे गीला करके धूप दे दें। प्रतिदिन प्रात:-सायं ताबीजपर चढ़े हुए लाल कपड़ेको गंगाजलसे गीला करते रहें। इससे यन्त्रकी शक्ति बढ़ेगी। किसीकी मृत्यु अथवा श्मशानमें जाना पड़े तो जानेसे पहले ताबीज उतारकर घरमें पवित्र जगह रख दें। अन्य किसी समय ताबीज न उतारें। यन्त्र धारण करनेपर प्रतिदिन 'श्रीहनुमानचालीसा' के इक्कीस पाठ अथवा 'सुन्दरकाण्ड' का एक पाठ करना अनिवार्य है।

यदि घरमें प्रेतबाधा हो अथव दूकानमें कोई बाधा दीखती हो तो यन्त्रको ताँबेके चौकोर ताबीजमें (बिना मोड़े) अच्छी तरह बन्द कर दें। फिर उसे लाल कपड़ेमें बाँधकर, धूप-अगरबत्ती देकर मकान, दूकान या ऑफिसके भीतर मुख्य द्वारके ऊपर (बीचमें) रख दें। द्वारके बीचमें रखनेकी कोई जगह नहीं हो तो भगवान्का चित्र लगाकर उसके पीछे ताबीज रख दें। ताबीज किसीको दीखना नहीं चाहिये।

एक थालीमें अष्टगन्धसे अनारकी कलमसे चौंतीसा यन्त्र बनायें। फिर उसे धूप देकर उसमें गंगाजल डाल दें और भलीभाँति धोकर उस जलको किसी बोतलमें रख लें। इस अभिमन्त्रित जलका भी विविध कार्योंमें प्रयोग किया जा सकता है। यन्त्रको पोलिथीनमें बन्द करके गंगाजलकी शीशीमें डाल दें और उस जलको पीते रहें तो वही प्रभाव करेगा, जो थालीमें लिखकर पिलानेका होता है।

बिल्व अथवा पीपलके पत्तेपर अष्टगन्धसे लिखे यन्त्रको दूकानमें रखनेसे व्यापार अच्छा चलेगा। पत्तेको भोजपत्रके बीचमें रखकर लिफाफेमें अथवा किसी गत्ते या कॉपीके भीतर रख दें, जिससे वह टूटे नहीं। उसे सीधा रखें, मोड़े नहीं।

आगे चौतीसा यन्त्रके दो रूप दिये जा रहे हैं—श्रीकाशीभैरवनाथमन्त्रयुक्त चौंतीसा यन्त्र और षोडशमातृकायुक्त चौंतीसा यन्त्र। दोनोंके प्रयोगसे विशेष लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

श्रीकाशीभैरवनाथमन्त्रयुक्त चौंतीसा यन्त्र

ॐ काला भैरूँ क्या क्या करे, मड़े मसाणे मन चाहे सो करे। ओपरी पराई डकणी सकणी नजर सिहारी, श्रीनाथजी के चक्र से मारी। छोड़ वे डकणी दूध पूत पराया, श्रीहनुमंत वीर का परवाना आया। सबद साचा पिंड काचा, फुरो मंत्रो ईश्वरो वाचा।

—यह 'श्रीकाशीभैरवनाथमन्त्र' है। आगे श्रीकाशीभैरवनाथमन्त्रयुक्त चौंतीसा यन्त्र दिया गया है। उपर्युक्त मन्त्रसे चौंतीसा यन्त्रको अभिमन्त्रित करना चाहिये।

ॐ	भ	प	न	ना	भा	णी	या	वा	का
का	सा	री	ज	ध	री	दू	श्री	ना	चा
ला	णे	प	र	जी	छो	ध	ह	आ	फु
भै	भ	रा	९	१६	५	४	नु	या	रो
रूँ	न	ई	७	२	११	१४	मं	स	मं
क्या	चा	ड	१२	१३	८	१	त	ब	त्रो
क्या	है	क	६	३	१०	१५	वी	द	ई
क	सो	णीं	सि	के	ड़	पू	र	सा	ख
रे	क	स	हा	च	वे	त	का	चा	रो
भ	रे	क	री	क्र	ड	प	प	पिं	बा
ड़े	ओ	णीं	श्री	सें	क	रा	र	ड	चा

षोडशमातृकायुक्त चौंतीसा यन्त्र

चौंतीसा यन्त्रके सोलह कोष्ठकोंमें 'षोडश मातृका' के नाम लिखें तो विशेष लाभ होता है। यदि लिखनेकी जगह न हो तो यन्त्रकी पीठपर सोलह नाम लिखें।

९ स्वधा	१६ आत्मनः कुलदेवता	५ सावित्री	४ मेधा
७ जया	२ पद्मा	११ मातरः	१४ पुष्टिः
१२ लोकमातरः	१३ धृतिः	८ देवसेना	१ गौरी
६ विजया	३ शची	१० स्वाहा	१५ तुष्टिः

***

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रीरामसाक्षिबीसायन्त्र

[परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज द्वारा निर्मित]



निधाय मायामुदरे स्वकीये सन्तिष्ठते राम इति श्रुतं यत्।
तत्साक्षियन्त्रं लिखितं सुखेन रेफेण मध्यप्रगतेन मेन॥

'श्रुतियोंमें वर्णित भगवान् श्रीराम प्रलयके समय सम्पूर्ण सृष्टिको अपने उदरमें रखकर साक्षिरूपसे स्थित रहते हैं, उन्हीं साक्षिरूप भगवान्का साक्षियन्त्र, जिसके आरम्भमें 'राम' और मध्यमें 'सुख' है, ऐसे (रामसुखदासके द्वारा) लिखा गया है।'

उपर्युक्त श्रीरामसाक्षिबीसायन्त्रके अन्तर्गत 'नराकृति बीसायन्त्र' आया है, जो इस प्रकार है—



इस बीसा यन्त्रको सिद्ध करनेकी विधि वही है, जो चौंतीसा यन्त्रकी है।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

चतुर्थ प्रकरण

संकटनाशनगणेशस्तोत्र

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्त्यावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये॥ १॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥ २॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥ ३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥ ४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
नास्ति विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिं लभेद् ध्रुवम्॥ ५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्॥ ६॥
जपन् गणपतिस्तोत्रं षडभिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥ ७॥
अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
नास्ति विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिं लभेद् ध्रुवम्॥ ८॥

***

विघ्ननाशकगणेशस्तोत्र

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वाद्वशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

***

संकटनाशनविष्णुस्तोत्र

कुशाके आसनपर उत्तर या पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जायँ। अपनी दाहिनी ओर शुद्ध घीका एक दीपक जलाकर रख लें। धूपबत्ती भी जलाकर रख लें। फिर शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी श्रीविष्णुका ध्यान

करके उनका मानसिक पंचोपचार पूजन इस प्रकार करें—

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

इसके बाद निम्नलिखित स्तोत्रके पाँच या इक्कीस पाठ करें—

श्रीहरये नमः। अस्मद्गुरुभ्यो नमः। अस्मत्परमगुरुभ्यो नमः।

नारद उवाच

पुनर्दैत्यं समायान्तं दृष्ट्वा देवाः सवासवाः।
भयप्रकम्पिताः सर्वे विष्णुं स्तोतुं प्रचक्रमुः॥

देवा ऊचुः

ॐ नमो मत्स्यकूर्मादिनानास्वरूपैः सदा भक्तकार्योद्यतायार्तिहन्त्रे।
विधात्रादिसर्गस्थितिध्वंसकर्त्रे गदापद्मशङ्खारिहस्ताय तेऽस्तु॥
रमावल्लभायासुराणां निहन्त्रे भुजङ्गारियानाय पीताम्बराय।
मखादिक्रियापाककर्त्रे विकर्त्रे शरण्याय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः॥
नमो दैत्यसन्तापितामर्त्यदुःखाचलध्वंसदंभोलये विष्णवे ते।
भुजङ्गेशतल्पेशयायार्कचन्द्रद्विनेत्राय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः॥

नारद उवाच

संकष्टनाशनं नाम स्तोत्रमेतत् पठेन्नरः।
स कदाचिन्न संकष्टैः पीड्यते कृपया हरेः॥

(पद्मपुराण उत्तर० ९८। १-५)

***

कामाख्याकवच

ॐ प्राच्यां रक्षतु मे तारा कामरूपनिवासिनी।
आग्नेय्यां षोडशी पातु याम्यां धूमावती स्वयम्॥ १॥
नैर्ऋत्यां भैरवी पातु वारुण्यां भुवनेश्वरी।
वायव्यां सततं पातु छिन्नमस्ता महेश्वरी॥ २॥
कौबेर्यां पातु मे देवी श्रीविद्या बगलामुखी।
ऐशान्यां पातु मे नित्यं महात्रिपुरसुन्दरी॥ ३॥
ऊर्ध्वं रक्षतु मे विद्या मातङ्गी पीठवासिनी।
सर्वतः पातु मे नित्यं कामाख्या कालिका स्वयम्॥ ४॥
ब्रह्मरूपा महाविद्या सर्वविद्यामयी स्वयम्।
शीर्षे रक्षतु मे दुर्गा भालं श्रीभवगेहिनी॥ ५॥
त्रिपुरा भ्रूयुगे पातु शर्वाणी पातु नासिकाम्।
चक्षुषी चण्डिका पातु श्रोत्रे नीलसरस्वती॥ ६॥
मुखं सौम्यमुखी पातु ग्रीवां रक्षतु पार्वती।

जिह्वां रक्षतु मे देवी जिह्वाललनभीषणा॥ ७॥
वाग्देवी वदनं पातु वक्षः पातु महेश्वरी।
बाहू महाभुजा पातु कराङ्गुलीः सुरेश्वरी॥ ८॥
पृष्ठतः पातु भीमास्या कट्यां देवी दिगम्बरी।
उदरं पातु मे नित्यं महाविद्या महोदरी॥ ९॥
उग्रतारा महादेवी जङ्घोरू परिरक्षतु।
गुदं मुष्कं च मेढ्रं च नाभिं च सुरसुन्दरी॥१०॥
पादाङ्गुलीः सदा पातु भवानी त्रिदशेश्वरी।
रक्तमांसास्थिमज्जादीन् पातु देवी शवासना॥११॥
महाभयेषु घोरेषु महाभयनिवारिणी।
पातु देवी महामाया कामाख्यापीठवासिनी॥१२॥
भस्माचलगता दिव्यसिंहासनकृताश्रया।
पातु श्रीकालिकादेवी सर्वोत्पातेषु सर्वदा॥१३॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं कवचेनापि वर्जितम्।
तत्सर्वं सर्वदा पातु सर्वरक्षणकारिणी॥१४॥

इदं तु परमं गुह्यं कवचं मुनिसत्तम। कामाख्याया मयोक्तं ते सर्वरक्षाकरं परम्॥ १५॥
अनेन कृत्वा रक्षां तु निर्भयः साधको भवेत्। न तं स्पृशेद्भयं घोरं मन्त्रसिद्धिविरोधकम्॥ १६॥
जायते च मनःसिद्धिर्निर्विघ्नेन महामते। इदं यो धारयेत्कण्ठे बाहौ वा कवचं महत्॥ १७॥
अव्याहताज्ञः स भवेत्सर्वविद्याविशारदः। सर्वत्र लभते सौख्यं मङ्गलं तु दिने दिने॥ १८॥
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा कवचं चेदमद्भुतम्। स देव्याः पदवीं याति सत्यं सत्यं न संशयः॥ १९॥

***

सर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्रोत्कीलन

॥ अथ सर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्रोत्कीलनप्रारम्भः॥

पार्वत्युवाच

देवेश परमानन्द भक्तानामभयप्रद।
आगमा निगमाश्चैव बीजं बीजयोस्तथा॥ १॥
समुदायेन बीजानां मन्त्रो मन्त्रस्य संहिता।
ऋषिच्छन्दादिकं भेदो वैदिकं यामलादिकम्॥ २॥
धर्मोऽधर्मस्तथा ज्ञानं विज्ञान च विकल्पनम्।
निर्विकल्पविभागेन तथा षट्कर्मसिद्धये॥ ३॥
भुक्तिमुक्तिप्रकारश्च सर्वं प्राप्तं प्रसादतः।
कीलनं सर्वमन्त्राणां शंस यद् हृदये वचः॥ ४॥
इति श्रुत्वा शिवानाथः पार्वत्या वचनं शुभम्।
उवाच परया प्रीत्या मन्त्रोत्कीलनकं शिवाम्॥ ५॥

शिव उवाच

वरानने हि सर्वस्य व्यक्ताव्यक्तस्य वस्तुनः।

साक्षीभूय त्वमेवासि जगतस्तु मनोस्तथा॥ ६॥
त्वया पृष्टं वरारोहे तद्वक्ष्याम्युत्कीलनम्।
उद्दीपनं हि मन्त्रस्य सर्वस्योत्कीलनं भवेत्॥ ७॥
पुरा तव मया भद्रे समाकर्षणवश्यजा।
मन्त्राणां कीलिता सिद्धिः सर्वे ते सप्तकोटयः॥ ८॥
तवानुग्रहप्रीतत्वात्सिद्धिस्तेषां फलप्रदा।
येनोपायेन भवति तं स्तोत्रं कथयाम्यहम्॥ ९॥
शृणु भद्रेऽत्र सततमावाभ्यामखिलं जगत्।
तस्य सिद्धिर्भवेत्तिष्ठ मया येषां प्रभावकम्॥ १०॥
अन्नं पानं हि सौभाग्यं दत्तं तुभ्यं मया शिवे।
सञ्जीवनं च मन्त्राणां तथा दत्तुं पुनर्ध्रुवम्॥ ११॥
यस्य स्मरणमात्रेण पाठेन जपतोऽपि वा।
अकीला अखिला मन्त्राः सत्यं सत्यं न संशयः॥ १२॥

ॐ अस्य श्रीसर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्राणां उत्कीलनमन्त्रस्तोत्रस्य मूलप्रकृतिर्ऋषिर्जगतीच्छन्दः, निरञ्जनो देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रः लौं कीलकं, सप्तकोटिमन्त्रयन्त्रतन्त्रकीलकानां सञ्जीवनसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथाङ्गन्यासः

ॐ मूलप्रकृतिऋषये नमः शिरसि।
ॐ जगतीच्छन्दसे नमः मुखे।
ॐ निरञ्जनदेवतायै नमः हृदि।
ॐ क्लीं बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
ॐ ह्रः लौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः

ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः।

अथ ध्यानम्

ॐ ब्रह्मस्वरूपममलं च निरञ्जनं तं-
ज्योतिःप्रकाशमनिशं महतो महान्तम्।
कारुण्यरूपमतिबोधकरं प्रसन्नं-
दिव्यं स्मरामि सततं मनुजावनाय॥

एवं ध्यात्वा स्मरेन्नित्यं तस्य सिद्धिस्तु सर्वदा।

वाञ्छितं फलमाप्नोति मन्त्रसञ्जीवनं ध्रुवम्॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रादीनां उत्कीलनं स्वाहा॥

॥ मूलमन्त्रः॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षट्पञ्चाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा।

ॐ जूं सर्वमन्त्रतन्त्रयन्त्राणां सञ्जीवनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मात्राक्षराणां सर्वं उत्कीलनं कुरु स्वाहा।

ॐ सोहं हं सो हं ११ ॐ जूं सों हं हंसः ॐ ॐ ११ हं जूं हं सं गं ११ सोहं हं सो यं ११ लं ११ ॐ ११ यं ११ ॐ ह्रीं जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रस्तोत्रकवचादीनां सञ्जीवय सञ्जीवनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ सोहं हं सः जूं सञ्जीवनं स्वाहा।

ॐ ह्रीं मन्त्राक्षराणां उत्कीलय उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ॐ प्रणवरूपाय अं आं परमरूपिणे।
इं ईं शक्तिस्वरूपाय उं ऊं तेजोमयाय च॥ १॥
ऋं ॠं रञ्जितदीप्ताय लृं ॡं स्थूलस्वरूपिणे।
एं ऐं वाचां विलासाय ओं औं अं अः शिवाय च॥ २॥
कं खं कमलनेत्राय गं घं गरुडगामिने।
ङं चं श्रीचन्द्रभालाय छं जं जयकराय ते॥ ३॥
झं ञं टं ठं जयकर्त्रे डं ढं णं तं पराय च।
थं दं धं नं नमस्तस्मै पं फं यन्त्रमयाय च॥ ४॥
बं भं मं बलवीर्याय यं रं लं यशसे नमः।
वं शं षं बहुवादाय सं हं ळं क्षं स्वरूपिणे॥ ५॥
दिशामादित्यरूपाय तेजसे रूपधारिणे।
अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः॥ ६॥
मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्यै नमो नमः।
प्राणेशायै क्षीणदायै संसञ्जीव नमो नमः॥ ७॥
निरञ्जनस्य देवस्य नामकर्मविधानतः।
त्वया ध्यातं च शक्त्या च तेन सञ्जायते जगत्॥ ८॥
स्तुताहमचिरं ध्यात्वा मायाया ध्वंसहेतवे।
संतुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सः॥ ९॥
ब्रह्माणं चेतयन्ती विविधसुरनरांस्तर्पयन्ती प्रमोदाद्
ध्यानेनोद्दीपयन्ती निगमजपमनुं षट्पदं प्रेरयन्ती।
सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुतदमनी साप्यहंकारमूर्ति-

स्तुभ्यं तस्मै च जाप्यं स्मररचितमनुं मोचये शापजालात्॥१०॥

इदं श्रीत्रिपुरास्तोत्रं पठेद् भक्त्या तु यो नरः।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वशापाद् विमुच्यते॥११॥

॥ इति सर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्रोत्कीलनं सम्पूर्णम्॥

***

ऋणहर्ता गणेश-स्तोत्र तथा मन्त्र

ध्यान

सिन्दूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम्।
ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्॥

'भगवान् गणेशकी अंगकान्ति सिन्दूरके समान है। उनकी दो भुजाएँ हैं। वे लम्बोदर हैं और कमलदलपर विराजमान हैं। ब्रह्मा आदि देवता उनकी सेवामें लगे हैं तथा वे सिद्ध-समुदायसे युक्त हैं। ऐसे श्रीगणपतिदेवको मैं प्रणाम करता हूँ।'

इस प्रकार ध्यान करके निम्न स्तोत्रका पाठ करें—

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ १॥
त्रिपुरस्य वधात् पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ २॥
हिरण्यकश्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ ३॥
महिषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ ४॥
तारकस्य वधात् पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ ५॥
भास्करेण गणेशस्तु पूजितच्छविसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ ६॥
शशिना कान्तिवृद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ ७॥
पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥ ८॥

उपर्युक्त स्तोत्रका पाठ करके इस मन्त्रका एक माला जप करें—

ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्य हुं नमः फट्।

एक वर्षतक नित्य एक बार उपर्युक्त अनुष्ठान करें।

***

ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम्

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मविरोधकः॥१॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥४॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥५॥
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्॥६॥
अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय॥७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥८॥
अतिवक्र दुराराध्य भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्॥९॥
विरिञ्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः॥१०॥
पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः॥११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा॥१२॥

***

स्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्र

विनियोग

ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षण भैरवस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्वर्णाकर्षण भैरव परमात्मा देवता, ह्रीं बीजं, क्लीं शक्तिः, सः कीलकं, मम सर्वकामसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ॐ नमस्ते भैरवाय ब्रह्मविष्णुशिवात्मने।
नमस्त्रैलोक्यवन्द्याय वरदाय वरात्मने॥ १॥
रत्नसिंहासनस्थाय दिव्याभरणशोभिने।
दिव्यमाल्यविभूषाय नमस्ते दिव्यमूर्तये॥ २॥
नमस्तेऽनेकहस्ताय अनेकशिरसे नमः।

नमस्तेऽनेकनेत्राय अनेकविभवे नमः॥ ३॥
नमस्तेऽनेककण्ठाय अनेकांसाय ते नमः।
नमस्तेऽनेकपार्श्वाय नमस्ते दिव्यतेजसे॥ ४॥
अनेकयुधयुक्ताय अनेकसुरसेविने।
अनेकगुणयुक्ताय महादेवाय ते नमः॥ ५॥
नमो दारिद्र्यकालाय महासम्पत्प्रदायिने।
श्रीभैरवीसंयुक्ताय त्रिलोकेशाय ते नमः॥ ६॥
दिगम्बर नमस्तुभ्यं दिव्याङ्गाय नमो नमः।
नमोऽस्तु दैत्यकालाय पापकालाय ते नमः॥ ७॥
सर्वज्ञाय नमस्तुभ्यं नमस्ते दिव्यचक्षुषे।
अजिताय नमस्तुभ्यं जितामित्राय ते नमः॥ ८॥
नमस्ते रुद्ररूपाय महावीराय ते नमः।
नमोऽस्त्वनन्तवीर्याय महाघोराय ते नमः॥ ९॥
नमस्ते घोरघोराय विश्वघोराय ते नमः।
नमः उग्राय शान्ताय भक्तानां शान्तिदायिने॥ १०॥
गुरवे सर्वलोकानां नमः प्रणवरूपिणे।
नमस्ते वाग्भवाख्याय दीर्घकामाय ते नमः॥ ११॥
नमस्ते कामराजाय योषित्कामाय ते नमः।
दीर्घमायास्वरूपाय महामायाय ते नमः॥ १२॥
सृष्टिमायास्वरूपाय विसर्गसमयाय ते।
सुरलोकसुपूज्याय आपदुद्धारणाय च॥ १३॥
नमो नमो भैरवाय महादारिद्र्यनाशिने।
उन्मूलने कर्मठाय अलक्ष्म्याः सर्वदा नमः॥ १४॥
नमोऽजामलबद्धाय नमो लोकेश्वराय ते।
स्वर्णाकर्षणशीलाय भैरवाय नमो नमः॥ १५॥
मम दारिद्र्यविद्वेषणाय लक्ष्याय ते नमः।
नमो लोकत्रयेशाय स्वानन्दनिहिताय ते॥ १६॥
नमः श्रीबीजरूपाय सर्वकामप्रदायिने।
नमो महाभैरवाय श्रीभैरव नमो नमः॥ १७॥
धनाध्यक्ष नमस्तुभ्यं शरण्याय नमो नमः।
नमः प्रसन्नरूपाय आदिदेवाय ते नमः॥ १८॥
नमस्ते मन्त्ररूपाय नमस्ते रत्नरूपिणे।
नमस्ते स्वर्णरूपाय सुवर्णाय नमो नमः॥ १९॥
नमः सुवर्णवर्णाय महापुण्याय ते नमः।
नमो शुद्धाय बुद्धाय नमः संसारतारिणे॥ २०॥
नमो देवाय गुह्याय प्रचलाय नमो नमः।
नमस्ते बालरूपाय परेषां बलनाशिने॥ २१॥

नमस्ते स्वर्णसंस्थाय नमो भूतलवासिने।
नमः पातालवासाय अनाधाराय ते नमः॥ २२॥
नमो नमस्ते शान्ताय अनन्ताय नमो नमः।
द्विभुजाय नमस्तुभ्यं भुजत्रयसुशोभिने ॥ २३॥
नमोऽणिमादिसिद्धाय स्वर्णहस्ताय ते नमः।
पूर्णचन्द्रप्रतीकाशवदनाम्भोजशोभिने ॥ २४॥
नमस्तेऽस्तु स्वरूपाय स्वर्णालङ्कारशोभिने।
नमः स्वर्णाकर्षणाय स्वर्णाभय नमो नमः॥ २५॥
नमस्ते स्वर्णकण्ठाय स्वर्णाभाम्बरधारिणे।
स्वर्णसिंहासनस्थाय स्वर्णपादाय ते नमः॥ २६॥
नमः स्वर्णाभपादाय स्वर्णकाञ्चीसुशोभिने।
नमस्ते स्वर्णजङ्घाय भक्तकामदुघात्मने॥ २७॥
नमस्ते स्वर्णभक्ताय कल्पवृक्षस्वरूपिणे।
चिन्तामणिस्वरूपाय नमो ब्रह्मादिसेविने॥ २८॥
कल्पद्रुमाधःसंस्थाय बहुस्वर्णप्रदायिने।
नमो हेमाकर्षणाय भैरवाय नमो नमः॥ २९॥
स्तवेनानेन सन्तुष्टो भव लोकेश भैरव।
पश्य मां करुणादृष्ट्या शरणागतवत्सल॥ ३०॥

[धनप्राप्तिके लिये उपर्युक्त 'स्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्र' का प्रतिदिन आठ बार पाठ करें।]

***

षष्ठीदेवीस्तोत्र तथा मन्त्र

ध्यान

सुपुत्रदां च शुभदां दयारूपां जगत्प्रसूम्॥
श्वेतचम्पकवर्णाभ्यां रत्नभूषणभूषिताम्।
पवित्ररूपां परमां देवसेनां परां भजे॥

'जो सुपुत्र देनेवाली, कल्याण प्रदान करनेवाली, दयाकी प्रतिमूर्ति और जगत्की माता हैं; श्वेत चम्पकके समान जिनका वर्ण है तथा जो रत्नमय आभूषणोंसे अलंकृत हैं, ऐसी परम पवित्ररूपा भगवती देवसेना (षष्ठीदेवी)-की मैं वन्दना करता हूँ।'

मन्त्र

ॐ ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहा

(इस मन्त्रका यथाशक्ति जप करें)

स्तोत्र

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्ध्यै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ १॥
वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।

सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ २॥
शक्तिषष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ३॥
सारायै शारदायै च पारायै सर्वकारिण्यै।
बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ४॥
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम्।
प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ५॥
पूज्याय स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु।
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ६॥
शुद्धसत्त्वस्वरूपाय वन्दितायै नृणां सदा।
हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ७॥
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि।
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ८॥
भूमिं देहि प्रजां देहि विद्यां देहि सुपूजिते।
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ९॥

—इस स्तोत्रका एक बार पाठ करनेके बाद '**श्रीरामरक्षास्तोत्रम्**' का भी एक बार पाठ करें। इस प्रकार एक वर्षतक यह अनुष्ठान करनेसे पुत्रकी प्राप्ति होती है। यदि माता-पिता एक मासतक उपर्युक्त स्तोत्रका श्रवण करें तो उनका बालक रोगमुक्त हो जाता है।

***

गर्भरक्षकस्तोत्र

पाहि पाहि महायोगिन् देवदेव जगत्पते।
नान्यं त्वदभयं पश्ये यत्र मृत्युः परस्परम्॥
अभिद्रवति मामीश शरस्तप्तायसो विभो।
कामं दहतु मां नाथ मा मे गर्भो निपात्यताम्॥

(श्रीमद्भा० १। ८। ९-१०)

'*(उत्तराने भगवान् श्रीकृष्णसे प्रार्थना की—)* देवाधिदेव! जगदीश्वर! आप महायोगी हैं। आप मेरी रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये। आपके अतिरिक्त इस लोकमें मुझे अभय देनेवाला और कोई नहीं है; क्योंकि यहाँ सभी परस्पर एक-दूसरेकी मृत्युके निमित्त बन रहे हैं। प्रभो! आप सर्वशक्तिमान् हैं। यह दहकते हुए लोहेका बाण मेरी ओर दौड़ा आ रहा है। स्वामिन्! यह मुझे भले ही जला डाले, पर मेरे गर्भको नष्ट न करे—ऐसी कृपा कीजिये।'

***

ज्वरनाशकस्तोत्र

ज्वर उवाच

नमामि त्वानन्तशक्तिं परेशं सर्वात्मानं केवलं ज्ञप्तिमात्रम्।

विश्वोत्पत्तिस्थानसंरोधहेतुं यत्तद् ब्रह्म ब्रह्मलिङ्गं प्रशान्तम्॥
कालो दैवं कर्म जीवः स्वभावो द्रव्यं क्षेत्रं प्राण आत्मा विकारः।
तत्सङ्घातो बीजरोहप्रवाहस्त्वन्मायैषा तन्निषेधं प्रपद्ये॥
नानाभावैर्लीलयैवोपपन्नैर्देवान् साधूँल्लोकसेतून् बिभर्षि।
हंस्युन्मार्गान् हिंसया वर्तमानान् जन्मैतत्ते भारहाराय भूमेः॥
तप्तोऽहं ते तेजसा दुःसहेन शान्तोग्रेणात्युल्बणेन ज्वरेण।
तावत्तापो देहिनां तेऽङ्घ्रिमूलं नो सेवेरन् यावदाशानुबद्धाः॥

श्रीभगवानुवाच

त्रिशिरस्ते प्रसन्नोऽस्मि व्येतु ते मज्ज्वराद् भयम्।
यो नौ स्मरति संवादं तस्य त्वन्न भवेद् भयम्॥

(श्रीमद्भा० १०। ६३। २५-२९)

***

चाक्षुषोपनिषद्

ॐ तस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव।
मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय।
मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय।
यथाहं अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय।
कल्याणं कुरु कुरु।
यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।
ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय।
ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय।
ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः।
खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः।
असतो मां सद्गमय। तमसो मां ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।
उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति।

ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

[नेत्ररोगके नाशके लिये रविवारसे आरम्भ करके प्रतिदिन चाक्षुषोपनिषद्के बारह पाठ करें। यदि रविपुष्ययोग हो तो और उत्तम है। प्रत्येक रविवार केवल एक बार बिना नमकका भोजन करें।]

***

मयूरेशस्तोत्रम्

पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा।
मायाविनंदुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ १॥
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ २॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ ३॥
नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्।
नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम्॥ ४॥
इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ ५॥
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्।
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ ६॥
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ ७॥
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्।
समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्॥ ८॥
सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ ९॥
अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्।
अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्॥ १०॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्॥
कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्।
आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्॥

[यह स्तोत्र ब्रह्मभावको प्रदान करनेवाला समस्त पापोंका नाशक, मनोवाञ्छित फल देनेवाला, समस्त उपद्रवोंको शमन करनेवाला और आधि (मानसिक चिन्ता) तथा व्याधिको हरनेवाला है। इसका सात दिनतक पाठ करनेसे कारागारमें बन्द कैदी भी छूट जाता है।]

***

मृत्युञ्जयस्तोत्रम्

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्गनिकेतनं
शिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ १॥

पञ्चपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं
भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम् ।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ २॥
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पङ्कजासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम्।
देवसिद्धतरङ्गिणीकरसिक्तशीतजटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ ३॥
कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ ४॥
यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजङ्गविभूषणं
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ ५॥
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघनिबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ ६॥
भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ ७॥
विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमथ प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥ ८॥
रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ ९॥
कालकण्ठं कालमूर्तिं कालाग्निं कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ १०॥
नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ ११॥
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ १२॥
देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्।

नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ १३॥
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ १४॥
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ १५॥
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति॥ १६॥

***

इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता॥ १॥
कत्यायानी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपाः।
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी॥ २॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी॥ ३॥
मेघस्वना सहस्राक्षी विकटाङ्गी जलोदरी।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला॥ ४॥
अजिता भद्रदाऽऽनन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षपरमेश्वरी॥ ५॥
इन्द्राणी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा।
सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी॥ ६॥
एकाक्षरी परा ब्राह्मी स्थूलसूक्ष्मप्रवर्तिनी।
नित्य सकलकल्याणी भोगमोक्षप्रदायिनी॥ ७॥
महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा सप्तमातृका।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी॥ ८॥
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती।
अनन्ता विजयापर्णा मानस्तोकापराजिता॥ ९॥
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा।
शिवा भवानी रुद्राणी शङ्करार्द्धशरीरिणी॥ १०॥
ऐरावतगजारूढा वज्रहस्ता वरप्रदा।
भ्रामरी काञ्चिकामाक्षी क्वणन्माणिक्यनूपुरा॥ ११॥
त्रिपाद्भस्मप्रहरणा त्रिशिरा रक्तलोचना।
शिवा च शिवरूपा च शिवभक्तिपरायणा॥ १२॥
मृत्युञ्जया महामाया सर्वरोगनिवारिणी।
ऐन्द्री देवी सदा कालं शान्तिमाशु करोतु मे॥ १३॥
भस्मायुधाय विद्महे रक्तनेत्राय धीमहि तन्नो ज्वरहरः प्रचोदयात्।

एतत् स्तोत्रं जपेन्नित्यं सर्वव्याधिनिवारणम्।
रणे राजभये शौर्ये सर्वत्र विजयी भवेत्॥
एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता।
सा मे प्रीत्या सुखं दद्यात् सर्वापत्तिनिवारिणी॥
ज्वरं भूतज्वरं चैव शीतोष्णज्वरमेव च।
ज्वरं ज्वरातिसारं च अतिसारज्वरं हर॥
शतमावर्तयेद् यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात्।
आवर्त्तयन् सहस्रं तु लभते वाञ्छितं फलम्॥
एतत्स्तोत्रमिदं पुण्यं जपेदायुष्यवर्द्धनम्।
विनाशाय च रोगाणामपमृत्युहराय च॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

***

पितरोंको प्रसन्न करनेवाला स्तोत्र

रुचिरुवाच

अर्चितानाममूर्त्तानां पितॄणां दीप्ततेजसाम्।
नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम्॥ १॥
इन्द्रादीनां च नेतारो दक्षमारीचयोस्तथा।
सप्तर्षीणां तथान्येषां तान् नमस्यामि कामदान्॥ २॥
मन्वादीनां मुनीन्द्राणां सूर्याचन्द्रमसोस्तथा।
तान् नमस्याम्यहं सर्वान् पितॄनप्सूदधावपि॥ ३॥
नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्नयोर्नभसस्तथा।
द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृताञ्जलिः॥ ४॥
देवर्षीणां जनितॄंश्च सर्वलोकनमस्कृतान्।
अक्षय्यस्य सदा दातॄन् नमस्येऽहं कृताञ्जलिः॥ ५॥
प्रजापतेः कश्यपाय सोमाय वरुणाय च।
योगेश्वरेभ्यश्च सदा नमस्यामि कृताञ्जलिः॥ ६॥
नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथा लोकेषु सप्तसु।
स्वयम्भुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योगचक्षुषे॥ ७॥
सोमाधारान् पितृगणान् योगमूर्त्तिधरांस्तथा।
नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम्॥ ८॥
अग्निरूपांस्तथैवान्यान् नमस्यामि पितॄनहम्।
अग्नीषोममयं विश्वं यत एतदशेषतः॥ ९॥
ये तु तेजसि ये चैते सोमसूर्याग्निमूर्तयः।
जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः॥ १०॥

तेभ्योऽखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसः।
नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदन्तु स्वधाभुजः॥ ११॥

उपर्युक्त स्तोत्रका माहात्म्य—

पितर बोले—'जो मनुष्य इस स्तोत्रसे भक्तिपूर्वक हमारी स्तुति करेगा, उसके ऊपर सन्तुष्ट होकर हमलोग उसे मनोवांछित भोग तथा उत्तम आत्मज्ञान प्रदान करेंगे। जो नीरोग शरीर, धन और पुत्र-पौत्र आदिकी इच्छा करता हो, वह सदा इस स्तोत्रसे हमलोगोंकी स्तुति करे। यह स्तोत्र हमलोगोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाला है।

जो श्राद्धमें भोजन करनेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके सामने खड़े होकर भक्तिपूर्वक इस स्तोत्रका पाठ करेगा, उसके यहाँ स्तोत्र-श्रवणके प्रेमसे हम निश्चय ही उपस्थित होंगे और हमारे लिये किया हुआ श्राद्ध भी निःसन्देह अक्षय होगा। चाहे श्रोत्रिय ब्राह्मणसे रहित श्राद्ध हो, चाहे वह किसी दोषसे दूषित हो गया हो अथवा अन्यायोपार्जित धनसे किया गया हो अथवा श्राद्धके लिये अयोग्य दूषित सामग्रियोंसे उसका अनुष्ठान हुआ हो, अनुचित समय या अयोग्य देशमें हुआ हो या उसमें विधिका उल्लंघन किया गया हो अथवा लोगोंने बिना श्रद्धाके या दिखावेके लिये किया हो, तो भी वह श्राद्ध इस स्तोत्रके पाठसे हमारी तृप्ति करनेमें समर्थ होता है। हमें सुख देनेवाला यह स्तोत्र जहाँ श्राद्धमें पढ़ा जाता है, वहाँ हमलोगोंको बारह वर्षोंतक बनी रहनेवाली तृप्ति प्राप्त होती है।........

जिस घरमें यह स्तोत्र सदा लिखकर रखा जाता है, वहाँ श्राद्ध करनेपर हमारी निश्चय ही उपस्थिति होती है। अतः श्राद्धमें भोजन करनेवाले ब्राह्मणोंके सामने यह स्तोत्र अवश्य सुनाना चाहिये; क्योंकि यह हमारी पुष्टि करनेवाला है।' (मार्कण्डेयपुराण, रौच्यमन्वन्तर ९७)

***

प्रज्ञावर्धनस्तोत्रम्

ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धनस्तोत्रस्य भगवान् शिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, स्कन्दकुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनानी स्वामी शङ्करसम्भवः॥
गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः कौञ्चारिश्च षडाननः॥
शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः।
सनत्कुमारो भगवान् भोगमोक्षप्रदः प्रभुः॥
शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वागमप्रणेता च वाञ्छितार्थप्रदर्शकः॥
अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत्।
प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्॥
महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत्।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥

बुद्धिवृद्धिके लिये पुष्यनक्षत्रसे आरम्भ करके दूसरा पुष्यनक्षत्र आनेतक प्रतिदिन पीपलवृक्षके नीचे

बैठकर दस बार उपर्युक्त स्तोत्रका पाठ करें। अनुष्ठानकालमें मोरको चावल आदि खिलाने चाहिये।

***

हनुमान्जीके भयनाशक बारह नाम

हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः॥
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा॥

माहात्म्य

एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।
स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत्॥
तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्।
राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन॥

(आनन्दरामायण, मनोहरकाण्ड १३। ८-९)

—इन बारह नामोंको जो मनुष्य सोते या जागते समय अथवा कहीं जाते समय पढ़ता है, उसे कहीं किसी प्रकारका भय नहीं रह जाता और संग्राममें उसकी विजय होती है। राजद्वार, कन्दरा आदि किसी भी स्थानमें उसे किसी प्रकारका भय नहीं रहता।

***

शत्रुभयनाशक मारुतिस्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते विचित्रवीर हनुमते प्रलयकालानल प्रभा प्रज्वलनाय। प्रतापवज्रदेहाय। अञ्जनीगर्भसम्भूताय।

प्रकट विक्रमवीर दैत्यदानव-यक्षरक्षोगण-ग्रह-बन्धनाय। भूतग्रहबन्धनाय। पिशाचग्रहबन्धनाय। शाकिनीडाकिनी-ग्रहबन्धनाय। काकिनीकामिनीग्रहबन्धनाय। ब्रह्मग्रहबन्धनाय। ब्रह्मराक्षस-ग्रहबन्धनाय। चोरग्रहबन्धनाय। मारीग्रहबन्धनाय। एहि एहि। आगच्छ आगच्छ। आवेशय आवेशय। मम हृदये प्रवेशय प्रवेशय। स्फुर स्फुर। प्रस्फुर प्रस्फुर। सतयं कथय। व्याघ्रमुखबन्धन। सर्पमुखबन्धन। राजमुखबन्धन। नारीमुख-बन्धन। सभामुखबन्धन। शत्रुमुखबन्धन। सर्वमुखबन्धन। लङ्काप्रासादभञ्जन। अमुकं मे वशमानय। क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं राजानं वशमानय। श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रीणां आकर्षय आकर्षय। शत्रून् मर्दय मर्दय मारय मारय चूर्णय चूर्णय खे खे। श्रीरामचन्द्राज्ञया मम कार्यसिद्धिं कुरु कुरु। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा। विचित्रवीर हनुमन् मम सर्वशत्रून् भस्म कुरु कुरु हन हन हुँ फट् स्वाहा।

एकादश शतवारं जपित्वा सर्वशत्रून् वशमानयति नान्यथा इति।

***

नवग्रहकवच

ॐ शिरो मे पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः।

मुखमङ्गारकः पातु कण्ठं च शनिनन्दनः॥
बुद्धिं जीवः सदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः।
जठरं च शनिः पातु जिह्वां मे दितिनन्दनः॥
पादौ केतुः सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च।
तिथयोऽष्टौ दिशः पान्तु नक्षत्राणि वपुः सदा॥
अंसौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च।

***

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

विविध बीजमन्त्र

आं—पाशबीज

ऐं—सरस्वतीबीज

क्रीं—कालीबीज

क्लीं—कामबीज*। कृष्णबीज

क्ष्रौं—नरसिंहबीज

गं—गणेशबीज

ग्लौं—गणेशबीज

दूं—दुर्गाबीज

फट्—अस्त्रबीज

यं—वायुबीज

रं—अग्निबीज

लं—पृथ्वीबीज

वं—जलबीज। अमृतबीज

श्रीं—श्रीबीज

स्त्रीं—वधूबीज। दुर्गाबीज

हं—आकाशबीज

हुं—क्रोधबीज। कवचबीज

हूं—कर्मबीज। कूर्चबीज। शिवबीज

हौं—प्रसादबीज। शिवबीज

ह्रीं—शक्तिबीज। मायाबीज

* संसारकी तरफ होनेसे यह 'काम' है और भगवान्‌की तरफ होनेसे यह 'प्रेम' है।

औषध खण्ड

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

औषध-संग्रह

अजीर्ण

(१)卐 अजीर्णके लिये 'वज्रासन' उपयोगी है। खट्टी डकारवाला अजीर्ण तो वज्रासनसे सदाके लिये दूर हो जाता है—उसकी विधि यह है कि दोनों पैरोंकी ऐड़ियोंको परस्पर मिलाकर उसपर बैठे। पैरके ऐड़ियाँ परस्पर न मिलें तो दोनोंको कपड़ेसे बाँध ले। भोजनके बाद ऐसा कुछ दिन करे तो फिर कभी खट्टी डकार नहीं आयेगी।

भोजन पचानेके लिये—

(१) भोजनके बाद तीन बार बोलें—**'खाया पीया भस्माभूत, शंकर पारवती अवधूत।'**

(२) भोजनके बाद इन श्लोकोंका उच्चारण करें—

ॐ अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च बडवानलम्।
आहारपरिपाकाय संस्मरामि वृकोदरम्॥
आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः।
समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु॥

अतिसार

१)卐 जामुनके रसमें नींबू और अदरखका रस मिलाकर पीयें।

२) एक चम्मच चायकी पत्ती फाँककर ऊपरसे पानी पी लें।

३) दस्त लगे हों तो रस-सहित एक-दो रसगुल्ले खा लें।

४) पर्याप्त मोटे आकके पौधेकी एक मोटी डालीके दो टुकड़े लाकर रख लें। जिस व्यक्तिको उल्टी या दस्तकी शिकायत हो, वह कुछ समयतक इन दोनों टुकड़ोंको अपनी हथेलीमें कसकर पकड़े रहें। वह ठीक हो जायगा।

५) आधी कच्ची और आधी पक्की (तवेपर भूनी हुई) अजवायन मिलाकर गर्म जलसे फाँक लें। अतिसार मिट जायगा।

६) जीरा और मिश्री सममात्रामें लेकर पीस लें और दही-चावलमें मिलाकर खायें। ऐसा चौदह दिनोंतक लेनेसे अतिसार नष्ट हो जाता है।

७) सहदेवीकी जड़ लाकर उसके सात टुकड़े करके लाल धागेमें पिरोकर रोगीकी कमरमें बाँध दें।

८) गेहुँए रंगके साँपकी केंचुलीको कपड़ेकी थैलेमें सीकर रोगीके पेड़ूपर बाँधनेसे संग्रहणी ठीक होती है।

उदर-रोग

१) प्रतिदिन प्रातः गाय (काली हो तो सर्वोत्तम)-का पहली बारका मूत्र काँच या मिट्टीके पात्रमें लेकर छानकर एक छटाक पी लें। चालीस दिनोंतक नियमित पीनेसे पेटके सब रोग नष्ट होते हैं।

२) कच्ची फिटकरी दो माशा एक तोला शुद्ध शहदमें बारीक पीसकर चटा दें तो पेट-दर्द शान्त हो जाता है।

३) नमक और घीको मिलाकर एक गोली बना लें और खिला दें।

४) सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आँवला, सौंफ, धनिया, सनाय, बड़ी इलायची—इन दस चीजोंको सममात्रामें लें। इनसे दुगुनी मात्रामें बेलगिरीका चूर्ण मिला दें। उतनी ही मात्रामें कच्ची खाँड़ मिला लें। चूर्णको काँचके बर्तनमें रखें। दो-चार तोला (अपनी शक्ति-अनुसार) सायंकाल दूध या गरम जलके साथ लें। प्रातःकाल खुलकर शौच होगा और धीरे-धीरे उदरके समस्त रोग मिट जायँगे।

५) पेटमें गैस बनती हो तो एक अम्बरी सेव लेकर उसमें एक तोला टोपीवाली लौंग गाड़ दें। फिर उसे किसी रस्सीसे बाँधकर तीन दिनतक लटका दें। फिर प्रतिदिन प्रातःकाल खाली पेट, दोपहर, तथा शामको एक-एक लौंग चूसें।

६)卐 दिनमें दो-तीन बार एक लौंग जीभके नीचे रखें। जब वह नरम हो जाय, तब अगले दाँतोंसे भलीभाँति चबा लें। इस तरह दिनमें दो-तीन बार लौंग ले। इससे शरीरमें वायुका नाश होता है।

केश-रोग

केश उड़ना (गंज)—

१) हरे (कच्चे) अखरोटका छिलका पीसकर लगानेसे दो-तीन दिनमें बाल पुनः उग आते हैं।

२) अड़हुल (गुड़हल) के फूलोंकी पँखुड़ियाँ और नारियलका तेल—दोनों समभागमें लेकर अग्निपर रखें। पँखुड़ियाँ जलनेपर उतारकर छान लें। यह तेल लगानेपर बाल पुनः उग आते हैं।

३) जिस जगहसे बाल उड़े हों, उसपर लहसुन पीसकर लेप करें।

केश काले करना—

१) एक बड़ी बोतलमें सरसोंका तेल लें। उसे एक आँवलेके वृक्षके नीचे इस प्रकार गाड़ दें—आँवलेकी एक जड़के अगले भागको बीचमें चीर दें और उसे बोतलके भीतर डाल दें। उसीसे बोतलका मुँह कसकर बन्द कर दें। चालीस दिनके बाद निकाल लें। उस तेलको चालीस दिनतक लगानेसे बाल काले हो जाते हैं और नये बाल भी काले ही उगते हैं।

२)卐 आँवला अधिक खानेसे बाल भीतरसे ही काले पैदा होते हैं। आँवलेका सेवन शहद, दही व दाल—तीनोंमें मिलाकर कर सकते हैं।

कानके रोग

१) पीपलके पत्ते महीन पीसकर उनका अर्क कानमें डालें। इससे कानका दर्द, कान बहना तथा बहरापन ठीक हो जाता है।

२) असली शहद १० ग्राम और बिना रंगवाली स्पिरिट २५ ग्राम मिलाकर रख लें। सुबह शाम कानमें

दो-दो बूँदें डालें। इससे कान बहना आदि ठीक होता है।

कैन्सर

१) प्रातः खाली पेट एवं सायंके समय कृष्णा तुलसीके ३०-३५ ताजे पत्ते लेकर लगभग ५० ग्राम दहीमें मसलकर अथवा दोनोंको स्वच्छ पत्थरपर पीसकर उसे पी लें। यदि दही अनुकूल न पड़े तो दो चम्मच शहदके साथ लें। एक अथवा डेढ़ किलो दूध या दही, जो अपनी प्रकृतिके अनुकूल हो, प्रतिदिन लेना चाहिये।

दहीमें कुछ जल मिलाकर उसे छाछकी तरह बना लेना चाहिये। दूध गायका हो। दही भी गायके दूधका, घरमें जमाया हुआ और मीठा हो। तेल, लाल मिर्च और तली हुई चीज नहीं खानी चाहिये। पन्द्रह दिनोंमें ही लाभका अनुभव होना चाहिये। यदि तीन महीनेमें कोई लाभ न दीखे तो दवा छोड़ सकते हैं।

२) प्रतिदिन ढ़ाई किलोसे अधिक गाजरका रस निकालकर पीयें। छः महीनेतक लेनेसे रोग पूर्णरूपसे ठीक हो सकता है।

३) प्रतिदिन १० ग्राम हल्दीका सेवन करें।

क्षयरोग (टी.बी.)

१) क्षयरोग (टी.बी.) का रोगी पहले एक दिन केवल पानका प्रयोग करे। पानमें केवल कत्था-चूना लगाया जाय। प्रति घण्टे एक पान खाना चाहिये। उस दिन और कुछ भी खाना-पीना नहीं चाहिये। इसके सात दिन बाद एक दिन गौमूत्रका प्रयोग करे। प्रति घण्टे एक-एक तोला गौमूत्र पीना चाहिये। शौच होने लगे तो गौमूत्र पीना बन्द कर दें। गौमूत्रके सिवाय कुछ भी खाना-पीना नहीं चाहिये। जल भी नहीं पीना है।

२) मृत सर्पको भूमिमें गाड़कर उसके ऊपर गन्ना बो दें। उस गन्नेका रस चूसनेसे क्षयरोग ठीक हो जाता है।

खाँसी

१) लोहेका टुकड़ा और काला नमक-दोनोंको अग्निमें लाल करके कटोरीमें रखे जलमें बुझा दें। दिनमें तीन बार वह जल लें।

२) पीपलकी छालकी राख शहदके साथ लें।

३) मकईका सिट्टा (छल्ली) खानेके बाद जो बच जाय, उसकी राख बना लें। वह राख शहदके साथ लें।

४) चावलोंकी पिच घीसे तड़ककर पीयें।

५) सातों धातुएँ (सोना, चाँदी, ताँबा, पीपल, लोहा, रांगा, सीसा) गर्म करके पानीमें बुझायें। वह पानी पीनेसे पुरानी खाँसी भी मिट जाती है।

६) काली मिर्च एक तोला, पीपल दो तोले, अनारदाना चार तोले और जवाखा आधा तोला—इन सबको

पीसकर आठ तोले गुड़में मिलाकर चटनीकी तरह कर लें। छोटी चम्मच दिनमें तीन बार चाटें। दुःसाध्य खाँसी भी ठीक हो जाती है। इससे दमा भी ठीक होता है।

७) हरी इलायची ५ दाने लेकर पानीमें डाल दें और मिश्री डालकर धीमी आँचमें पकाएँ। जब पानी आधा रह जाय, तब उसे उतार लें। वह पानी दिनमें ३ बार पीयें।

८) *बच्चोंकी खाँसी*—एक बड़े मुनक्काका बीज निकालकर उसमें एक रत्ती काकड़ासिंगी और एक रत्ती दालचीनीका चूर्ण भरकर बच्चेको खिला दें।

गलेके रोग

१) एक थालीमें जल डालकर उसे चाकूसे कई बार काटें और पी लें। यह प्रयोग मंगल या शनिको करें। गलेका दर्द ठीक होगा।

२) एक पात्रमें जल डालकर उसे पैरसे सात बार ठोकर मारें और उसे पी लें। इससे गलेका दर्द ठीक होता है।

३)卐 *गला बैठा हो तो उसके लिये ये उपाय करें*—१) बड़ी हरड़की छालको चूसें २) कुलंजन (नागरपानकी जड़)-को चूसें और ३) गलेपर चूनेका लेप करें (चूनेको गीला रखें)। ***'बच कुलंजन बावची, पीपल राई पान। (इनका जो सेवन करे) कण्ठ कोकिला जान॥'***

गायोंके रोग

१)卐 रविपुष्य, गुरुपुष्य अथवा किसी भी पुष्यनक्षत्रके समय शुद्धतापूर्वक भोजपत्रपर अनारकी कलमसे गोरोचन या अष्टगन्धसे अर्जुनके इन अठारह नामोंको लिखें—

अर्जुन, किरीटी, गुडाकेश, धनञ्जय, पार्थ, भारत, सव्यसाची, कपिध्वज, कौन्तेय, कुरुनन्दन, पाण्डव, कुरुप्रवीर, कुरुश्रेष्ठ, कुरुसत्तम, परन्तप, पुरुषर्षभ, भरतर्षभ, भरतसत्तम।

फिर गुग्गुल आदिका धूप देकर लाल कपड़ेमें बाँधकर गायोंके आने-जानेके द्वारके ऊपर लटका दें। उसे प्रतिदिन धूप देते रहें।

२) निम्नलिखित मन्त्रको इक्कीस बार पढ़ते हुए गायको गुग्गुल लोबान एवं कुछ लौंग मिलाकर धूप दें। इस मन्त्रको गंगाजलसे लाल चन्दन एवं केसरकी स्याहीसे भोजपत्रपर लिखें और उसे नारियलके साथ लाल वस्त्रमें लपेटकर धूप देकर गौशालामें बाँध दें। बाँधते समय बन्दर या कुत्ते और छोटे बच्चोंको मिठाई खिलायें—

ॐ अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
बीभत्सुर्जियः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः॥
कपिध्वजो गुडाकेशो गाण्डीवी कृष्णसारथिः।
एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्।
न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं च जायते।

३) निम्नलिखित श्लोकसे जलको अभिमन्त्रित करके गायको पिला दें। पहले इसका तीन हजार जप कर लें।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥

(गीता ११। ३६)

४) गणेशजीका नाम-स्मरण करके निम्न यन्त्रको रविवार या मंगलवारके दिन कागजपर स्याहीसे लिखें। फिर उसे खानेके तेलका धूप देकर, काले कपड़ेमें लपेटकर गाय आदिके गलेमें बाँधनेसे खुरपका रोग नष्ट होता है—

श्रीगणेशाय नमः

	४२	४२	४२	४२	
४२	१९	१४	५	४	४२
४२	१३	८	९	१२	४२
४२	७	१८	११	६	४२
४२	३	२	१७	२०	४२
	४२	४२	४२	४२	

गायको गर्भधारण न होना—

शतावरी, गिलोय, नागकेसर और असगंध—इन चारोंको ५०-५० ग्राम लेकर बारीक कूट लें। फिर इसमें कुछ गुड़ मिलाकर पाँच लड्डू बना लें। कृष्णपक्षमें प्रतिदिन प्रातः एक लड्डू गायको खिलायें तो गाय गर्भधारणके योग्य हो जाती है।

गर्भाशय बाहर आना—

वटवृक्षकी जटा ७० ग्राम लेकर मिक्सीमें पीस लें और गायके दूधमें मिलाकर गायको तीन दिनतक खिलायें।

घाव

१)卐 घाव जितने वर्ष पुराना होता है, उतने ही दिनमें वह ठीक होता है। स्त्रीके दूधका फोहा रखनेसे घाव ठीक हो जाता है; क्योंकि उसीके दूधसे शरीर पला है।

२)卐 पर्णबीज (पत्थरचट्टी)-के पत्तोंका रस लगानेसे बहता हुआ रक्त रुक जाता है। पर्णबीज इसलिये कहते हैं कि इसका पत्ता जमीनमें गाड़ देनेसे पौधा निकल आता है अर्थात् इसका पत्ता ही बीज है।

चक्कर आना

१) गुलकन्द २५० ग्राममें सौंफ ७० ग्राम और छोटी पीपल २० ग्राम पीस लें। रातको २० ग्राम खाकर ऊपरसे फीका दूध पीयें।

२) मक्खन ५० ग्राममें ५ काली मिर्च पीसकर प्रातः खाली पेट लें।

चर्म-रोग

१)卐 अलग-अलग जातिके वृक्षोंके एक सौ आठ पत्ते लेकर सबको पीस ले और फोड़ेपर लगाये तो फोड़ा ठीक हो जाता है। कारण कि सब पत्तोंमें अलग-अलग गुण होते हैं, मिलनेसे सब गुण काम करते हैं। दूध व काँटेवाले वृक्षके पत्ते नहीं ले।

२)卐 चमड़ेके जूतेसे पैरमें छाले पड़ जायँ तो चमड़ा जलाकर लगानेसे ठीक हो जाते हैं।

३) एक बर्तनमें जल भरकर उसमें सोनेकी अँगूठीको डाल दें। कुछ देर बाद उसी जलसे घावको धोकर उस जलको चौराहेपर डाल दें। यह क्रिया शनिवारको करें।

४)卐 नाभिमें घी लगानेसे होठोंका फटना ठीक होता है।

५) नीला थोथा और गन्धक—दोनोंको बराबर पीस लें। फिर उसे नारियलके तेलमें मिला लें। नीमके पत्ते डालकर नहानेके बाद इस तेलको मलें। एक ही बार करनेसे खुजली ठीक हो सकती है।

दाद—

१)卐 सुबह उठते ही अपनी थूक लगाये तो दाद ठीक हो जाता है।

२) स्वर्णक्षीरी (सत्यानासी)-की जड़की छाल और सात काली मिर्च लें। दोनोंको पीसकर उसका रस निकालें। लगभग एक चम्मच रस प्रात:-सायं लें। सातसे पन्द्रह दिनतक लें। मिर्च, तेल, खटाई न लें। दूध अधिक पीयें। इससे एक्जिमा, दाद, कुष्ठ आदि ठीक हो जाते हैं।

३) रविवार और मंगलवार, 'मुसव्वर' मसूरके दानेके बराबर लेकर पानीसे निगल लें। केलेके गूदेके साथ ले तो अधिक लाभ होगा। दाद और फाइलेरिया दोनों ठीक होंगे।

४) खरबूजेकी गिरियाँ घोटकर मक्खनमें मिलाकर दादपर लगायें। मक्खन रोज ताजा निकालें। कुछ दिनोंमें ठीक हो जायगा।

५) गायके नवनीतको काँसेकी थालीमें सौ बार मीठे पानीसे धो लें। हथेलीसे पानीमें घीको थालीमें घिसें। इस घीको चीनी या काँचके पात्रमें रखें। सूर्योदय और सूर्यास्तके समय अँगुलीसे दादपर लगायें। नमक-मिर्च कम खायें।

कुष्ठ, सफेद दाग—

१)卐 लाल रंगकी बोतलमें जल भरें। ऊपरका कुछ भाग खाली छोड़ दें। उसे एक लकड़ीकी चौकीपर, स्वच्छ आकाशकी धूपमें रखें। बोतलके ऊपरी भागमें भापकी बूँदें दीखने लगें, तब उसे तैयार समझें। इस बोतलका जल सफेद दागकी जगह लगायें। यह जल आँखोंमें न लगने पाये—यह सावधानी रखें।

२)卐 तीन डण्डीवाला थूहर लेकर उसका दूध लगायें।

३)卐 नमक खाना छोड़ देनेसे भी सफेद दाग मिट जाते हैं।

४) कृष्णा तुलसीका रस लगायें। रस निकालकर वही लुगदी खा लें। छ: मासमें ठीक हो जायगा।

५) करेलेका रस लगानेसे सफेद दाग मिटते हैं।

६) 'तबकिया हरताल भस्म' बालक एक रत्ती तथा बड़ा दो रत्ती मक्खनके साथ प्रात: खाली पेट ४० दिन तक लें। उतने दिन बिना नमककी बेसनकी रोटी, दूध, घीके सिवाय कुछ न लें।

स्वर्णक्षीरी पंचांगको सरसोंके तेलमें जलाकर छान लें और दागोंपर लगायें। मुखपर न लगायें, छाला

हो सकता है।

७) पीपलके कोमल पत्ते खानेसे कुष्ठ दूर होता है।

८) आँवला और नीमके पत्ते समभाग लेकर चूर्ण बनायें। प्रातःकाल शहदके साथ चाटनेसे गलित कुष्ठ भी कुछ दिनोंमें नष्ट हो जाता है।

मस्सा—

१) पानका डंठल लेकर उसे मस्सेपर रगड़ें। एक सप्ताहमें मस्सा गिर जायगा।

२) अदरखके टुकड़ेपर खानेका चूना लगाकर मस्सेपर रगड़ें।

३) मस्सेको सेमकी फलीसे खुजलाकर फलीको फेंक दें। जब फली गल जायगी तो मस्से भी समाप्त हो जायँगे।

४) शरीरमें जितने मस्से हों, उतनी ही काली मिर्च गिनकर उन्हें शनिवारकी संध्याको कहीं रख आयें, और निमंत्रण दे आयें। फिर रविवारको प्रातः उन्हें लाकर कपड़ेकी पोटलीमें बाँधकर कुछ देर गलेमें पहनें। बादमें निकालकर राहमें छोड़ आयें। मस्से सूखते जायेंगे।

जुकाम

१)卐 जुकाम लगा हो तो मुँहमें सात काली मिर्च रखकर उसको सात मिनटतक चबाते रहें। मुँह बन्द रखें। लारको न थूकें, न निगलें, मुँहमें ही जमा होने दें। सात मिनटके बाद मुँहकी सारी लारको थूक दें। यह क्रिया भोजनसे पन्द्रह मिनट पहले अथवा ढाई-तीन घण्टे बाद करें। जैसे इंजेक्शनसे दवा खींची जाय, ऐसे काली मिर्च नजलेको मुँहमें खींच लेती है।

२)卐 गायके घीमें छोटी काली हरड़ जला लें। उस घीकी दो-तीन बूँदें नाकमें डालते रहनेसे जमा हुआ नजला (जुलाबकी तरह) बाहर निकल जाता है।

३)卐 पानीमें लाल मिर्च उबालकर छानकर पीनेसे जुकाम मिट जाता है।

४)卐 रात्रि सोनेसे पहले एक सेर पानी उबालें। जब वह एक पाव रह जाय, तब उसे पीकर सो जायँ।

५) लहसुनके रसकी बूँदें (कुछ जल मिलाकर) नासिकामें दिनमें कई बार डालते रहनेसे सायनस ठीक हो जाता है। ऑपरेशन करवानेकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

६)卐 *जुकाम मिटानेके विविध उपाय—*१) मिश्रीकी डलीको राखमें गरम करके खाकर सो जायँ। २) हल्दीकी गाँठको गरम करके चबाकर खा लें और सो जायँ। ३) एक दिन भोजन न करके केवल आँवलेका रस लें। ४) राबड़ीको खूब गरम करें। फिर उसमें थोड़ा-सा ठण्डा पानी मिलायें। पीनेयोग्य गरम रहे तो पीकर सो जायँ। ५) गरम अजवायनको कपड़ेमें बाँधकर नासिकापर सेक करें। ६) पतला शीरा गरम-गरम पीकर सो जायँ।

ज्वर

१) निम्नलिखित दोनों मन्त्रोंमेंसे किसी एकका १०८ बार जप करें—

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।

प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥

अथवा

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रका उच्चारण करके तीन आचमन करें। ऐसा करनेसे एकान्तरा, तेजरा, चौथिया या नित्य रहनेवाला—सभी ज्वर शान्त हो जाते हैं। इनमें एकभुक्त व्रत करना चाहिये।

अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

२) निम्नलिखित मन्त्रको अष्टगन्धसे कागजपर लिखकर धूप देकर ताबीजमें डालकर गलेमें बाँधनेसे हर प्रकारके ज्वर दूर होते हैं। साथ ही इसका प्रतिदिन जप भी करना चाहिये—

श्रीकृष्णबलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च।
ऊषास्मरणमात्रेण ज्वरव्याधि विमुच्यते॥

३) निम्नलिखित यन्त्र पीपलके पत्तेमें लिखकर दाहिने हाथकी कलाईपर बाँध दें। मंगलवार या रविवारका दिन हो। उसी दिनसे कैसा भी, कितने दिनका भी अंतरा (एकांतरा) ज्वर क्यों न हो, नहीं आयेगा। यदि बाँधनेके दिन आ भी गया, तो दूसरी पारीसे बिल्कुल नहीं आयेगा। मंगल या रविवारके दिन अगर पारी हो, तो उसी दिन बाँधें। पत्तेको पाँचवें दिन खोलकर किसी कुएँमें फेंक दें। किसीका पैर पड़े, ऐसी जगह या गन्दी जगह न फेंकें।

ह्लीं	८	१	६	ह्लीं
	३	५	७	
ह्लीं	४	९	२	ह्लीं

४) जब सूर्य प्रातः आकाशमें आधा निकला हो और आधा न निकला हो, उस समय पीपलका दातुन करनेसे ज्वर उतर जाता है।

५) फिटकरीका फूल एक माशा थोड़ी-सी चीनीके साथ मिला कर जलसे ले लेनेपर ज्वर उतर जाता है।

६) ज्वर आनेके दिन दो घंटे पहले, रोगीको थोड़ा-सा गुड़ लेकर अपने पास बुला लें, फिर थोड़ी-सी भुनी हुई फिटकरी गुड़में डालकर भगवन्नामका उच्चारण करते हुए उसकी गोली बनाकर रोगीको खिला दें। ऊपर थोड़ा-सा जल पिला दें। इससे एकान्तरा नष्ट हो जाता है।

७) भगवान् श्रीकृष्णको नमस्कार करके (गीता ११। २५ के) निम्न मन्त्रका १०८ बार विश्वासपूर्वक जप करनेसे ज्वर उतर जाता है—

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥

८) कृष्णा तुलसीके ११ पत्ते और काली मिर्च ११ लेकर काढ़ा बनाकर पीयें। अपमार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बाँधे। प्रतिदिन १० तुलसीपत्र १० काली मिर्चके साथ चबायें। इससे मलेरिया ज्वर उतर

जाता है।

९) रविवारको प्रात:काल लाल अपामार्गकी जड़ उखाड़कर उसके सात टुकड़े कर लें और सात लाल रंगके धागोंसे उन सातों टुकड़ोंको अच्छी तरह मिलाकर बाँध दें। फिर उसे दाहिने हाथमें बाँध दें। एक-दो दिनोंमें ही ज्वर चला जाता है।

१०) एक कागजी नींबूके दो टुकड़े करके एक साफ हाँडीमें आधा सेर जलमें उसे डालकर आगपर रख दें। जब जल आधा पाव रह जाय, तब उतारकर उस हाँडीको रातभर ओसमें रख दें। दूसरे दिन प्रात:काल नींबूको अच्छी तरह निचोड़कर छानकर पी लें। एक सप्ताहतक इसका रोज प्रयोग करें।

११) रात्रिमें दो चम्मच 'खूबकलाँ' लेकर एक गिलास जलमें भिगो दें। प्रात: उस जलको उबालें। आधा गिलास जल रह जाय तो गुनगुना करके पी लें। ऐसे तीन दिन लें।

१२) एक तोला गोमूत्रको '**मार्कण्डेय**' नाम से सौ बार अभिमन्त्रित करके जो पीता है, उसे कभी ज्वर नहीं आता। उसकी बुद्धि तेज होती है तथा शरीरमें भी स्फूर्ति आती है।

१३) एक टोकरेमें सभी जूठे बर्तन रातको रोगीके सिरहाने रख दें।

१४) लाल मिर्च बारीक पीसकर रोगीकी कनिष्ठा अंगुलीमें लगायें।

१५) नीमके ऊपरकी कोमल पत्तियाँ सरसोंके तेलमें जलाकर छान लें। उस तेलको हाथों और पैरके तलुओंपर काँसेके बर्तनसे मलें। पाँच-दस मिनटमें बुखार उतर जायगा।

१६) रातको थोड़ी-सी अजवायन मिट्टीके बर्तनमें भिगो दें तथा उसमें पाँच बादामकी गिरी भी डाल दें। सुबह (सोटा घुमाकर) अजवायनके छिलके उतार लें। उसमें पाँच काली मिर्च डालकर पीस लें। थोड़ा-सा पानी डालें। फिर छानकर पी जायँ। सब प्रकारका ज्वर ठीक हो जाता है।

१७) **ॐ नमो भगवते रुद्राय नम: क्रोधेश्वराय नमो ज्योतिपतङ्गाय नमो नम: सिद्धिरुद्र आज्ञापयति स्वाहा।'**

—हाथमें चुटकीभर सरसोंके दाने लेकर इस मन्त्रको सात बार पढ़कर जिसको एकांतरा, तिजारा या चौथिया ज्वर आता हो, उसके शरीरपर छिड़क दें। इस प्रकार सात बार करें।

१८) लाल अपामार्गकी जड़ अथवा निर्गुण्डीकी जड़ हाथमें बाँधनेसे भूत-प्रेतादिकी बाधासे आया हुआ सब प्रकारका ज्वर नष्ट हो जाता है।

१९) सफेद आककी जड़ कानमें बाँधनेसे सभी ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

२०) 'श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र' का नित्य पाठ करनेसे ज्वर नहीं रहता।

२१) इस पुस्तकमें आये 'ज्वरनाशकस्तोत्र' का पाठ करनेसे भी ज्वर उतर जाता है।

दन्त-रोग

१) ग्रहणके समय कीकरके वृक्षको दाँतोंसे काटें अथवा उसमें कील गाड़ें तो जीवनभर दाँत खराब नहीं होते, उनमें कीड़ा नहीं लगता।

२) कपूर और नमक मिलाकर दाँतोंपर मलें, फिर थूक दें। कीड़ा बाहर आ जायगा।

३) लाल फिटकरी और ठीकरी नौसादर मिलाकर दाँतोंपर मलनेसे दाँत दृढ़ होते हैं, हिलता दाँत भी

पक्का हो जाता है। दाँतोंमें पीड़ा नहीं रहती।

४) दाँत-दाढ़के दर्दमें कैल्शियम लेक्टाससे दिनमें तीन बार मंजन करें।

५) काकड़ासिंगी एक तोला और छोटी पीपर एक तोला—दोनोंको महीन पीसकर आधा तोला खानेका सोडा मिलाकर रख लें। जहाँ दर्द हो, वहाँ मल दें और नीचे मुँह कर दें, जिससे सब लार गिर जाय। फिर गर्म जलसे कुल्ला कर दें। दस मिनटमें दाँत-दर्द मिट जायगा।

६) प्रतिदिन मल-मूत्रका त्याग करते समय दाँतोंको परस्पर जोरसे दबा कर रखें। दो-चार दिनोंमें कमजोर दाँत दृढ़ हो जायँगे और दाँतोंमें किसी रोगकी सम्भावना नहीं रहेगी।

७) सिरसके बीजोंकी माला बालकके गलेमें पहनानेसे उसके दाँत सुगमतासे निकल आते हैं।

८)卐 दाँतोंमें ठण्डी-खट्टी चीज लगती हो तो आटेमें हींग डालकर मोटी रोटी (बाटी) बनायें और गर्म-गर्म दाँतोंके बीचमें रखकर दाँतोंसे दबायें। इससे दाँत ठीक हो जाते हैं।

दमा

१)卐 ढाई वर्षकी बछड़ीका एक तोला गौमूत्र प्रतिदिन लेनेसे दमा ठीक हो जाता है। यह फेफड़ेके रोगोंको ठीक करता है। *[बूढ़ी गायका मूत्र तेज होता है, आँतोंमें घाव कर देता है। दूध पीनेवाली बछड़ीका मूत्र सौम्य होता है; अतः वही लेना चाहिये।]*

२) गेहूँका आटा हाथकी चक्कीसे पीसें। आटेको मिट्टीके पात्रमें ही गूँथें। मिट्टीके तवेपर ही रोटी बनायें। सब्जी भी मिट्टीके पात्रमें बनायें। गैसपर न बनाकर चूल्हेपर बनायें। आम या बेरीकी लकड़ी जलायें। मिट्टीके सिवाय कोई भी धातुका बर्तन काममें न लें। कम-से-कम एक सप्ताह करें। दमेवाला व्यक्ति बकरीका दूध पीये।

३) अपामार्गकी जड़ सुखाकर चूर्ण बना लें। उसे शहदके साथ लेनेसे दमा-खाँसी मिटती है। अपामार्गकी जड़ तवेपर जलाकर भस्म बना लें। इसे चाटनेसे दमा-खाँसी, बुखार मिट जाते हैं।

४) पुराना गुड़, अदरखका रस और अजवायन—तीनों सौ-सौ ग्राम लें। अजवायनको खरलमें बारीक पीस लें। फिर उसमें शेष वस्तुएँ डालकर और रगड़कर चटनी बना लें। इसे किसी काँचके पात्रमें रखें। एक-एक चम्मच प्रातः-सायं लें। यदि इससे लाभ न हो तो दवाकी मात्रा तीन-तीन सौ ग्राम कर दें।

५) पीपलके पत्तोंको कूटकर कपड़छान कर लें। तीन ग्राम चूर्ण बारह ग्राम शहदमें मिलाकर चाटें। दो सप्ताहमें दमा-खाँसी जड़से ठीक हो सकते हैं।

६) एक काँसेकी कटोरीमें ५ तोले गौघृत खूब गरम कर लें। दूसरे बर्तनमें ढाई तोले अदरखका रस गरम कर लें। फिर उस गरम अदरखके रसको गरम घृतमें डालकर काँसेकी थालीसे ढक दें। कलकल शब्द बन्द होनेपर वह दो तोले गौघृत आधा पाव दूधके साथ पी लें। दूध गरम हो। पन्द्रह दिन सेवन करें।

७) पीपलकी छालका चूर्ण अथवा मोरपंखकी भस्म एक आना शहदके साथ लें।

छातीमें कफ अधिक होनेपर—

१)卐 कफ बाहर न निकलता हो तो घी लेना चाहिये। घी कफको बाहर निकालता है। घी गरम करके खिचड़ीमें मिलाकर लें; क्योंकि गरम करनेसे घी जल्दी पच जाता है, उसे पचानेमें आँतोंको कम मेहनत करनी पड़ती है। गरम पानी पीनेसे भी कफ बाहर निकलता है।

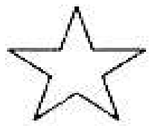
२)卐 एक लोटाभर पानीमें एक-दो चुटकी नमक डालकर उबालें। जब चौथाई भाग पानी रह जाय, तब उसे आगसे नीचे उतार लें। ठण्डा होनेपर वह पानी पी लें।

३)卐 रात्रि सोनेसे पहले एक सेर पानी उबालें। जब वह एक पाव रह जाय, तब उसे पीकर सो जायँ।

४) प्रतिदिन प्रातः छोटी पीपलका महीन (कपड़छान) चूर्ण चुटकीभर लेकर शहदमें मिलाकर लें।

धरन (नाभि) टलना

(१) जिस व्यक्तिकी धरन उतर गयी हो, वह अपनी नाभिपर हाथ रखकर सामने खड़ा हो जाय। अब अपनी हथेलीपर अँगुलीसे निम्नांकित पंचकोण बनायें—



फिर इस पंचकोणके चारों ओर प्रदक्षिण-क्रमसे नौ बार 'राम' नाम लेते हुए अपनी अँगुली घुमायें। फिर नौ बार ताली बजायें। धरन अपनी जगह आ जायगी।

(२) रोगी खड़े होकर एक हथेलीमें चावलके तीन दाने रखकर दूसरी हथेलीसे उसे ढक ले और तीन बार भगवन्नाम लेकर जलके साथ निगल ले।

नकसीर

१) थोड़ा-सा बिदाना रातमें जलमें भिगो दें। प्रातः छानकर खाली पेट पी लें।

२) मुलतानी मिट्टी १२० ग्राम लेकर उसे महीन पीस लें और रात्रिमें ६० ग्राम मिट्टी एक पाव जलमें (काँचके बरतनमें) भिगो दें। किसी लकड़ीसे उसे खूब मिलाकर ढककर रख दें। प्रातःकाल '**अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः**'—इस मंत्रकी एक माला जपकर पानी निथारकर, छानकर जल पी लें। बची हुई मिट्टीको पाँच मिनटतक मस्तिष्क तथा नासिकापर लेप करें। दूसरे तथा तीसरे दिन ३०-३० ग्राम मिट्टी भिगोयें। स्त्री या पुरुषोंका कैसा ही रक्तप्रवाह हो, बन्द हो जाता है।

३) तीन ग्राम सुहागेको थोड़े पानीमें घिसकर दोनों नथुनोंपर लेप करें। नकसीर तत्काल बन्द हो जायगी।

नशा

१) सर्वथा काली गायका मूत्र तीन दिन पिलानेसे फिर व्यक्ति शराब नहीं पी सकेगा। यदि पीयेगा तो उल्टी हो जायगी।

२) एक मीठे सेबमें यथासंख्या फूलवाले लौंग दबाकर उसे किसी हवाबन्द डिब्बेमें इक्कीस दिन तक बन्द रखें। फिर उस सेबका रस निकाल लें। उसमें और रस भी मिला सकते हैं। वह रस थोड़ा-थोड़ा करके पिलायें। वह मदिरा नहीं पी सकेगा। यदि उल्टी होने लगे तो घी खिलायें।

३) गौमूत्र आटेमें सानकर रोटी बनायें और प्रभावित व्यक्तिको खिलायें। गौमूत्र जलमें डालकर स्नान

करायें। शराबकी आदत छूट जायगी।

४) शहद और दालचीनी सिगरेट पीनेकी इच्छाको कम करते हैं। दालचीनीको बारीक कूटकर शहदमें मिलाकर दिनमें तीन बार चाटें। सिगरेट पीनेकी आदत अपने आप छूट जायगी।

५) जब सिगरेट पीने या पान-मसाला खानेकी तलब लगे, तब दालचीनीका एक टुकड़ा मुँहमें रख लें। आदत छूट जायगी।

६) पचास ग्राम आँवलेका चूर्ण लेकर आँवलेके रसमें मिलायें। फिर २० ग्राम काली मिर्च (महीन पीसकर) तथा १० ग्राम काला नमक मिलाकर छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर सुखा लें। गुटखा या तम्बाकूकी इच्छा होनेपर चार गोलियाँ चूसें।

निर्बलता

१) 'मल्लचन्द्रोदय' १-१ रत्ती दिनमें दो बार देसी घीसे बने हलवेके साथ लें।

२) पीपलके फलको सुखाकर कूट-पीसकर कपड़छान कर लें। लगभग तीन ग्राम लेकर गायके ताजे दूधके साथ सेवन करें। यह धातुको गाढ़ा करके वीर्यकी वृद्धि करता है, शक्ति देता है। स्त्रियोंके बाँझपन, प्रदर तथा मासिकधर्मकी खराबी भी दूर करता है।

३) बंगभस्म १० ग्राम, रससिन्दूर ५ ग्राम—दोनोंको मिलाकर आठ मात्रा करें। नित्य प्रातः एक मात्रा (२ ग्राम) हलवेके साथ सेवन करें। इससे शुक्राणुओंमें भी वृद्धि होती है।

४) एक पात्रमें गायका दूध दुहे और उस पात्रको जमीनपर रखे बिना ५० ग्राम शहद मिलाकर पी लें। शहद चम्मचसे न मिलाकर मथानी, मिक्सी या दो लोटोंसे भलीभाँति उथल-पुथल करके मिलायें।

५) दो किलो काले चने लेकर आधे भून लें, आधे कच्चे रखें और चक्कीमें पीसकर दलिया जैसा बना लें। उसमें एक किलो गोघृत और एक किलो खाँड़ मिला लें। प्रातः खाली पेट सौ ग्राम खाकर ऊपरसे दूध पी लें। चालीस दिन लें।

मस्तिष्ककी कमजोरी—

१)卐 गुग्गुलकी लकड़ीका दातुन करनेसे बुद्धि तेज होती है।

२)卐 रात्रिमें तीन-चार बादामकी गिरी भिगो दें। प्रातः छिलका उतारकर पत्थरपर घिस लें। उसमें मक्खन, छोटी इलायची और मिश्री मिला लें। इससे मस्तिष्कको बल मिलता है, बुद्धि तेज होती है और नेत्र-ज्योति बढ़ती है।

यदि बादाम, मक्खन, इलायची और मिश्रीके साथ-साथ लौंग भी लें तो इससे वायुका नाश होगा। बहुत मामूली जलमें रातको दो लौंग भिगो दें। प्रातः उनको पत्थरपर घिस ले और बादाम आदिके साथ ही ले ले।

३)卐 दिमागके लिये अखरोट एक नंबर है और बादाम दो नंबर।

नेत्र-रोग

१) प्रातःकाल उठते ही जस्तेकी सलाईसे अपनी जीभका थूक लगाकर तीन बार आँखोंमें फेरें।

मोतियाबिन्द कुछ दिनोंमें ठीक हो जायगा।

२) जल आँखमें गुहेरी निकले तो नाभिमें आकका दूध लगायें।

३) इमलीका बीज लेकर उसके ऊपरका लाल छिलका उतार लें और भीतरका सफेद भाग पानीके साथ घिसकर आँखमें लगायें तो गुहेरी ठीक हो जायगी।

४) सफेद फिटकरी (कच्ची) ३५ ग्राम, छोटी इलायची (छिलके समेत) आधा तोला अर्थात् ६ ग्राम और नीला थोथा आधा ग्राम—तीनोंको भलीभाँति खूब महीन पीस लें और एक बोतल (एक सेरकी) गंगाजलसे भरकर उसमें डाल दें। दस दिनोंतक दिनमें ३-४ बार बोतलकी अच्छी तरह हिलाते रहें। दस दिन बाद दवा तैयार हो जायगी। नेत्रके सभी रोगोंमें लाभकारी एवं नेत्रज्योतिवर्धक भी है। यथासम्भव गंगोत्रीसे गंगाजल लेना चाहिए।

५) छोटी मक्खीका असली शहद और हरे आँवलोंका रस बराबर वजनमें लेकर मिला लें और एक शीशीमें रख लें। सोते समय रात्रिमें आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्द ठीक होता है।

६) **ॐ नमो श्रीरामकी धनुहि लक्ष्मण का बाण, आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन**— नीमकी डालीसे इस मंत्रसे २१ बार झाड़नेसे तीन दिनमें नेत्रपीड़ा दूर हो जाती है।

७) प्रातः खाली पेट छः-सात काली मिर्च चबाकर खा लें और ऊपरसे थोड़ा सा गायका घी ले लें।

८) रास्तेका छोटा सा कंकड़ उठाकर जिस तरफकी आँख दुखती हो, उसी तरफके कानके ऊपरी भागमें बैठा दें। कंकड़को एक-दो दिनतक रखकर चौराहेमें फेंक दें।

९) रविवार (रविपुष्ययोग हो तो उत्तम है)-से आरम्भ करके प्रतिदिन 'चाक्षुषोपनिषद्' के बारह पाठ करें। रविवारके दिन केवल एक बार बिना नमकका भोजन करें।

नेत्र-ज्योति बढ़ानेके लिये—

१)卐 प्रातः खाली पेट छः-सात काली मिर्च चबाकर खा लें और ऊपरसे थोड़ा-सा गायका घी (पिघला हुआ) ले लें।

२)卐 सुबह उठते ही अपनी थूक आँखोंमें लगायें।

३)卐 नेत्रोंमें गोमूत्र डालें। *[बूढ़ी गायका मूत्र तेज होता है, दूध पीनेवाली बछड़ीका मूत्र सौम्य होता है; अतः वही लेना चाहिये।]*

पथरी

१) आधा पिण्ट (लगभग २८० ग्राम) जैतूनका तेल (ओलिव ऑयल) और लगभग इतना ही नींबूका रस निकालकर रख लें। पहले एक घूँट तेल पीकर ऊपरसे तुरन्त एक घूँट नींबूका रस पी लें। फिर तीन-चार मिनटके बाद पुनः यह विधि दुहरायें। इस प्रकार पूरा आधा पिण्ट तेल पी जायँ। नींबूका रस तेलको पचानेमें सहायक होता है। एक ही दिनमें पथरी (गॉलस्टोन) निकल सकती है। दो-तीन दिन ले सकते हैं।

२) एक किलो नींबूके रसमें दो-तीन कौड़ियाँ डालकर रख दें। तीन दिनोंमें वे कौड़ियाँ गल जायँगी। फिर उस रसको प्रातः खाली पेट और रात्रिमें १-१ चम्मच लेनेसे पथरी गलकर मूत्रमार्गसे निकल जायगी।

३) 'बालम ककड़ी' के छोटे-छोटे टुकड़े करके एक मर्तबानमें डाल दें और उसे गंगाजलसे भर दें।

आठ दिनतक रखनेके बाद उसमेंसे एक टुकड़ा निकालकर पंचलवण लगाकर खा लें, और ऊपरसे एक चम्मच जामुनका सिरका लेकर एक गिलास पानी पी लें। इसे खाली पेट न लेकर प्रातः नाश्तेके बाद अथवा सायं भोजनसे एक घण्टा पहले लें। यह दवा चालीस दिनतक लें। *['बालम ककड़ी' कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयमें और रेलवे कॉलोनी, लखनऊमें प्राप्त हो सकती है।]*

४) पत्थरचट्टी १ रत्ती, जवाखार १ माशा और डोरेवाली मिश्री २ माशा—इसकी दो पुड़िया बनाकर प्रतिदिन प्रातः-सायं लें। एक पाव गर्म दूध स्वतः ठण्डा हो जाय तो उसमें उतना ही जल मिलाकर उसके साथ दवा लें। पहले दस दिन दवा लेकर जाँच करवायें। लाभ न दीखे तो कुछ मात्रा बढ़ा दें। पीड़ा हो तो एक-दो घण्टे बाद पुनः दवा ले सकते हैं। दाल, पालक, टमाटर, कढ़ी न लें। चाय कम लें। पानी अधिक पीयें।

५) नारियलके फूल २१, काली मिर्च ७ के साथ पानीमें पीसकर पिलायें। दोनों समय लेते रहें। *[नारियलका एक बड़ा सिट्टा सा होता है। उसे तोड़ कर रख लें, वह ५-७ दिनोंमें अपने-आप फट जाता है। एक सिट्टेमें लगभग एक सेरसे अधिक फूल निकलते हैं।]*

६) लोहेकी अँगूठी बनवाकर दायें हाथकी मध्यमा अँगुलीमें पहननेसे पथरीकी पीड़ा ठीक होती है।

७) मूली और कटहलके बीज समभाग लेकर गरम जलसे खा लें। पथरी गलकर मूत्रमार्गसे निकल जायगी।

पीड़ा

१)卐 कानका मैल लगानेसे काँटेकी पीड़ा मिट जाती है।

२)卐 भेड़का दूध मलनेसे भीतर हड्डीका दर्द भी ठीक हो जाता है।

३)卐 टाँगोंकी हड्डियोंमें दर्द हो तो यदि बायीं टाँगमें दर्द हो तो दायीं टाँगके तलवेपर मालिश करे—हथेलियोंसे दबाकर रगड़े। दायीं तरफ दर्द हो तो बायीं तरफ पैरके तलवे मले।

गठिया, वातरोग—

१)卐 गायका गोबर विष तथा दर्दको खींचता है। दर्दवाले स्थानपर एक अंगुल मोटी गोबरकी परतका लेप करें। पन्द्रह-बीस मिनटके बाद उसे उतार दें। फिर पुनः लेप कर सकते हैं। उस अंगको हवासे बचाकर रखें। यदि चमड़ीपर फफोले या फुंसी हो जाय अथवा दर्द बढ़ जाय तो घबरायें नहीं।

२)卐 चोपचीनीका चूर्ण दूधके साथ लेनेसे शरीरकी सब पीड़ा नष्ट होती है।

३)卐 मेथीदाना जलमें भिगो दें। प्रातः खाली पेट वह जल पी लें और मेथीदानाकी सब्जी बनाकर खा लें। यदि दस्त लगें तो बन्द करनेकी चेष्टा न करें, भीतरका विकार निकलेगा तो पीड़ा कम होगी।

४) अरण्डके सात बीज लेकर उनका छिलका उतार लें और पीस लें। प्रातः एक कप दूधमें मिलाकर खाली पेट पी लें। दूसरे दिन आठ बीज, तीसरे दिन नौ बीज—इस प्रकार प्रतिदिन एक-एक बीज बढ़ाते हुए चालीस बीजोंतक लें। फिर एक-एक बीज घटाना शुरू करें और अन्तमें पुनः सात बीजोंतक पहुँचकर बन्द कर दें। बीचमें नागा नहीं होना चाहिये।

५) हारसिंगारके पन्द्रह पत्ते पानीमें उबालकर लें। साइटिकामें भी लाभ होगा।

६) एक किलो दूधमें सौ ग्राम लहसुन कूटकर मिला लें। आगपर चढ़ाकर घोटें और मावा बना लें।

मावाकी गोलियाँ बना लें। प्रतिदिन कम-से-कम २५ ग्राम एक मासतक खायें। यह नपुंसकतामें भी लाभप्रद है।

७) प्रातः गाँठिया लहसुनकी दो-तीन कली खाकर पानी पी लें।

८) एक गिलास दूधमें एक चम्मच सोंठ डालकर इतना उबालें कि चम्मचसे पीनेलायक गाढ़ा हो जाय। इसे प्रतिदिन पीयें।

९) दो भल्लातक लें। दोनोंके चार-चार टुकड़े कर दें। टुकड़े करते समय हाथोंमें घी मल लें, क्योंकि वह जहरीला होता है; उसका तेल हाथपर लगनेसे व्रण हो जाता है। उन टुकड़ोंको एक पाव शुद्ध घीमें डालकर अग्निपर पकायें। उन टुकड़ोंमेंसे तेल निकलकर घीमें आ जायगा और वे टुकड़े घीके ऊपर तर आयेंगे। जब सारा तेल निकलकर घीमें आ जाय, तब उस सब टुकड़ोंको निकाल दें। फिर उस घीमें अन्दाजसे मैदा और बूरा बराबर मात्रामें डालकर हलुआ बना लें। उसे प्रातः खाली पेट पूरा अथवा यथाशक्ति खा लें। दिनमें खूब तेज भूख लगेगी, तब भोजन कर लें। इस प्रकार तीन या सात दिन लें। बालक, स्त्री, वृद्ध, कमजोरको देना हो तो एक या आधा भल्लातक लें। विषैले तेलके कारण किसीको शरीरमें फुँसी या खुजली होने लगे तो भैंसका ताजा गोबर मलकर धूपमें बैठे। भीतरी चोटका दर्द भी इस दवासे ठीक हो जाता है। इसे वैद्यकी देखरेख में लें।

१०) तीस ग्राम धतूरेके बीज कूटकर तीन पाव शुद्ध सरसोंके तेलमें सात दिनोंतक भिगोकर रखें। फिर छानकर उस तेलकी मालिश करें।

११) वातरोग होनेपर प्रतिदिन भोजनके बाद लकड़ीकी कंघी इस तरह बालोंमें फेरें कि उसके दाँत सिरमें लगें। फिर वीरासनपर १५ मिनटतक बैठें।

१२) हुक्केमें हल्दी डालकर दिनमें दो-तीन बार हुक्का पीनेसे वायुगोलेकी पीड़ा नष्ट होती है।

साइटिका—

महायोगराजगुग्गुल आठ तोला, गोघृतमें भूनी हुई हींग दो तोला, एरण्डके बीज (अंकुर अर्थात् जीभी निकालकर साफ किये हुए) दो तोला—इन तीनों चीजोंको 'महारास्नादि क्वाथ' के साथ घोटकर छोटे बेरके समान गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं दो-दो गोली जलके साथ लें।

पीलिया

१)卐 पीलियाके लिये तूम्बीकी गिरीको महीन पीसकर नासिकामें चढ़ायें तो पीला पानी निकलकर पीलिया रोग ठीक हो जाता है। यदि बालक हो और नाकमें दवा न चढ़ा सके तो उसका चूर्ण रातमें पानीमें भिगो दें और सुबह छानकर वह पानी पिलायें।

२) सूखा 'पंडालफल' लेकर पानीमें भिगो दें। लगभग आधे घण्टे बाद मसलकर पानी छान लें। हथेलीमें वह जल लेकर नासिकासे हल्का-सा खींचें और छोड़ दें। दोनों नासिकाओंसे ऐसा करें। तुरन्त जुकाम लग जायगा और नाकसे पीला पानी बहने लगेगा। जुकाम को रोके नहीं। पसीनेमें भी पीला जल आयेगा।

३) अत्यल्प मात्रामें 'अतीस' लेकर मट्ठेके साथ दिनमें दो बार दें। पहली खुराकसे ही आराम दीखेगा।

४) आकके ऊपरकी दो कोमल-कोमल छोटी पत्तियाँ प्रातः ले आयें। उस पत्तियोंपर सफेदी होनी चाहिये। उनके बीचमें पुष्प न हो। वर्षा होनेके तुरन्त बाद न लें। दिनमें बारह बजेके बाद उसके छोटे-

छोटे टुकड़े करके पेड़ेके भीतर रखकर रोगीको खिला दें। फिर एक खुराक सात दिनके बाद दें। ऐसे तीन खुराक दें। बड़े व्यक्तिको तीन पत्तियाँ दे सकते हैं।

५) ताजी मूलीके चार टुकड़े करके, उनपर नमक लगाकर रातमें छतपर किसी रस्सीपर टाँग दें, ताकि उनपर रातभर ओस पड़ती रहे। प्रात: खाली पेट उसे (जितना खा सके) खा लें।

६) एक रत्ती बंगभस्म एक छोटी चम्मच दूधकी मलाईपर डालकर प्रात:काल खा लें। दोपहरके बाद थोड़ीसी ईसबगोलकी भूसी फाँककर ऊपर एक गिलास नींबूका शर्बत पी लें। दो-तीन दिनमें पीलिया दूर हो जायगा।

७) लहसुनिया रत्नको गुग्गुलका धूप देकर कण्ठमें धारण करनेसे पीलिया ठीक होता है।

प्रोस्टेट-वृद्धि

१)卐 शौच जानेके बाद गुदासे लगभग १००-१५० बार संकोचन-क्रिया करें। ऐसा करनेसे प्रोस्टेट नहीं बढ़ेगा। यदि बढ़ गया हो तो एक-दो वर्षमें पेशाब खुलकर आने लगेगा।

२)卐 गोमुखासनसे बैठें। पहले दायीं टाँग ऊपर तथा बायीं नीचे रखनी चाहिये। दोनों हाथोंको पीछे ले जानेकी जरूरत नहीं।

बवासीर

१)卐 प्रात:काल २५ ग्राम मोठ अच्छी तरह चबाकर (या चूर्ण लेकर) थोड़ा-सा ठण्डा जल पी लें। दस दिन लें। लेनेके बाद एक घण्टेतक कुछ न लें।

२)卐 गंगाके भीतरके पत्थरपर लँगोटी खोलकर बैठें, जिससे कि गुदा पत्थरपर टिके। प्रतिदिन इस प्रकार बैठनेसे बवासीर नहीं रहती।

३) गुदा धोते समय इस मन्त्रको मन-ही-मन गुनगुनाते जायँ। श्रद्धा-विश्वासपूर्वक कुछ दिन ऐसा करनेसे कैसा भी भयंकर खूनी बवासीर हो, ठीक हो सकता है—

ईशम ईशो ईशाम, कंकर को न करो ललिशाम।
आठों अच्छर जो नित जोय, मूल बवासीर होय न होय॥

४) नीमकी निंबोलीके अन्दरकी मींगी २१ दाने तथा इसीके समान काली मिर्च २१ दाने—दोनोंको पीसकर गोली बना लें और जलके साथ निगल जायँ। कुछ ही दिनोंके प्रयोगसे मस्से मिट जायँगे। रोग घटनेके साथ-साथ दवाकी मात्रा कम कर सकते हैं। तेल, खटाई, गुड़, लाल मिर्च, अरुई, भिंडी, उड़दकी दालका सेवन न करें तो अच्छा है।

५) रसौत एक तोला और कलमी सोरा एक तोला—दोनोंको पानीमें खूब महीन पीसकर आठ-आठ आनेभर (लगभग ५ ग्राम)-की गोली बना लें। एक गोली प्रात:काल और एक संध्याको ठंडे जलके साथ खिला दें। यह दो दिनोंकी दवा है। इसीसे खून बंद हो जायगा। न हो तो दो दिन इसी प्रकार और दे दें। गुड़, लाल मिर्च, खटाई, तेल न खायें।

६) नारियलके ऊपरकी जटामेंसे जो रेशे काटकर फेंक दिये जाते हैं, वे लाकर उन्हें एक माचिसकी तीलीसे जला दें। जल जानेके बाद काफी राख हो जायगी, उसे छानकर एक छोटी चम्मच रातका जमाया

हुआ दूधका दही एक कटोरी अन्दाज लेकर उसमें अच्छी तरह घोल दें। उसमें शक्कर आदि कुछ न डालें। सुबह उठते ही बिना और कुछ पिये-खाये इसे पी जायँ। एक-डेढ़ घण्टा बाद चाय, दूध नाश्ता कर सकते हैं। दिनमें दो बार भी ले सकते हैं। दो-तीन खुराकमें रोग जड़से मिट जायगा। अधिक-से-अधिक तीन चार दिनोंमें यह रोग नहीं रहना चाहिये।

७) अखरोटका छिलका जला दें। उसे सरसोंके तेलमें मिला कर काजल-जैसा बना लें। मस्सेके ठीक ऊपर इसे लगायें। तीन-चार दिनमें मस्सा बैठ जायगा।

८) यह दवा रवि या मंगलको सूर्योदयसे पूर्व लेनी है। शनि या सोमकी रातको परिवारवालोंसे छोटा केला मँगवा लें। फिर दूसरे दिन प्रातः सूर्योदयसे पूर्व केलेको थोड़ा चीरकर उसमें थोड़ा खानेका चूना भर दें और उसे निगल जायँ। फिर जीवनभर केले और उससे सम्बन्धित किसी भी वस्तुका सेवन न करें।

९) गेंदेके फूलकी पँखुड़ी लेकर उसमें थोड़ी-सी काली मिर्च मिलाकर पीस लें। छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें। दो-दो गोली दिनमें दो बार जलसे लें।

१०) देसी गायका ठण्डा दूध लेकर उसमें नींबू निचोड़ें। दूध फटनेसे पहले ही उसे पी लें। यह प्रयोग तीन दिन करें।

११) गेंदेके पत्तोंके रसमें काली मिर्च मिलाकर एक चम्मच प्रातः खाली पेट लें अथवा करेलेके छिलकेका रस थोड़ा नमक मिलाकर लें।

१२) अजवायन ५० ग्राम, मेथीदाना ५० ग्राम और सुहागा (तवेपर फुलाया हुआ) १५ ग्राम—तीनों चीजें कूटकर मिला लें। रात्रि सोते समय एक चम्मच चूर्ण जलके साथ लें। चार-पाँच दिन लें। बादी बवासीर हो तो नारियल-जटाकी राख कपड़ेसे छानकर करके शहदके साथ लें। यदि यह गर्मी करे तो मट्ठेके साथ लें।

१३) डीकामाली (मीकामाली)-के एक माशा चूर्णमें देशी नमक मिलाकर फाँक लें, ऊपरसे ठंडा जल पी लें। शामको एक ही खुराकसे सुबह लाभ होगा। यदि ठीक न हो तो दो-तीन दिन सुबह-शाम लें।

१४) बवासीरमें खून गिरता हो तो एक तोला नागकेसर बारीक पीसकर आधा पाव या पावभर मीठे दहीमें मिलाकर प्रातःकाल लें। तीन दिन प्रयोग करनेपर ठीक हो जायगा।

१५) पानके डंठलको कुचलकर रस निकालें। उसमें थोड़ा खानेवाला चूना मिलाकर रोज मस्सेपर लगायें। तीन सप्ताहमें मस्सा मिट जायगा।

१६) नारियलकी जटाकी भस्म एक तोला फाँककर ऊपरसे गायकी छाछ (पाव या आधा सेर) रुचिके अनुसार पी लें। ऐसा पाँच दिन करें। तेल, खटाई, गुड़, नहीं खायँ। लाल मिर्च तो कभी न खायें।

१७) शनिवारको काले धतूरेकी जड़ काले धागेसे कमरपर बाँधें।

१८) मस्सेके नीचे साँपकी केंचुली रखनेसे बवासीरका कष्ट दूर होता है।

१९) जंगली जिमीकंद (सूरण)-को कार्तिक मासमें लाकर उसके टुकड़े सुखा लें। फिर उन्हें काले डोरेमें पिरोकर कमरपर धारण करनेसे बवासीरके मस्से सूखने लगते हैं।

बालकोंके रोग

१) शिशुने यदि जल्दी बोलना शुरू न किया हो तो उसका हाथ लगवाकर दो मीठे पान बुधवारको

कालीके मन्दिरमें अर्पण करें। पान चाँदीका वर्क लगाकर बढ़िया रीतिसे तैयार किये गये हों। *[दुकानदारसे कहें कि प्रातः दुकान खोलकर पहले हाथ धोकर, पूरी शुद्धि रखते हुए दो पान तैयार करे।]*

२) बालक अधिक रोता हो तो हाथमें भस्म लेकर केवल एक बार इस मंत्रको पढ़कर बालकके माथेपर वह भस्म लगा दें—**ॐ नमो हनुमंता, ब्रिजका कोठा, जिसमें पिंड हमारा बैठा, ईश्वर कुंजी, ब्रह्मा ताला, इस घट पिंडका यति हनुमंत रखवाला।**

३) हाथमें थोड़ा-सा नमक लेकर बालकके सिरपर सात बार घुमाकर जलमें बहा दें तो बालकका रोना रुक जायगा।

मधुमेह

१) भिण्डी २५० ग्राम लेकर अच्छी तरह धो लें। फिर उन्हें बीचमेंसे सीधे चीर दें और एक बर्तनमें पानी डालकर उसमें पूरी तरह डुबो दें। रातभर रखनेके बाद सुबह भिण्डी निकालकर पानी पी लें। सात दिनतक लें। चाहें तो दुबारा भी ले सकते हैं।

२) गेहूँदाना १०० ग्राम, खानेवाली गोंद १०० ग्राम, जौं १०० ग्राम और कलौंजी १०० ग्राम—इन चारोंको ५ कप पानीमें डालकर आगपर रख दें और १० मिनटतक उबलने दें। फिर आगसे उतारकर इसे स्वतः ठण्डा होने दें। ठण्डा होनेपर छानकर किसी काँचकी बोतलमें भरकर रख दें। दवा तैयार है। प्रतिदिन प्रातः खाली पेट एक कप दवा सात दिनतक लें। फिर सात दिनतक एक दिन छोड़कर दवा लें।

३) जामुनकी गुठली और गुड़मार बूटी—दोनोंको सममात्रामें लेकर दूधके साथ खायें। मात्रा वैद्यके परामर्शसे लें। छेना, छाछ आदिका आवश्यकतानुसार सेवन करें।

४) जामुनके हरे पत्ते, हरे नीमके कड़वे पत्ते, बिल्वपत्रके पत्ते तथा तुलसीके पत्ते सब सुखा लें। अलग-अलग लेकर समभागमें सूखे पत्तोंको पीसकर मिला दें। रोज एक चम्मच चूर्ण सुबह पानीसे पी लें। दस दिन बाद शक्करकी जाँच करवा लें। इसे लेते समय चीनी शरीरमें नियन्त्रित रहती है।

५) रात्रिमें पनीर डोडा जलमें भिगो दें। प्रातः वह जल पी लें।

६) पन्द्रह 'गूँदीके पत्ते' पीसकर जलके साथ दिनमें दो बार लें।

७) त्रिफला, हल्दी और मेथी—तीनोंका एक चम्मच चूर्ण प्रातः जलके साथ लें।

८) करेलेके बीज, जामुनकी गुठली, नीमके सूखे पत्ते और गुड़मार—ये चारों चीजें ५०-५० ग्राम ले लें। सबको बारीक पीसकर उसमें आँवलेका चूर्ण १०० ग्राम मिला दें। फिर सम्पूर्ण चूर्णकी बराबर मात्रामें ४० पुड़िया बना लें। एक-एक पुड़िया प्रातः-सायं जलके साथ बीस दिनतक लें।

९) उड़हल (अड़हुल, जशवन्ती) के फूलकी एक-दो कली प्रातः खाली पेट चबा लें। एक सप्ताह अथवा एक मास तक खायें। इससे आमातिसार (आँव) भी ठीक होता है।

१०) बबूल (कीकर)-की छाल ३० ग्राम लेकर डेढ़ पाव जलमें पकायें। जब एक पाव जल रह जाय, तब उतारकर छानकर प्रतिदिन पीयें। मधुमेहके कारण हुए फोड़े, घाव, कफ आदि भी इससे ठीक हो जायँगे। छालको छायामें सुखायें।

११) ग्वारपाठेका गूदा एक तोला लेकर प्रातः खाली पेट सेंधा नमक लगाकर खायें। रात्रि सोनेसे पहले पाँच ग्राम मेथीदानेका चूर्ण गरम जल या दूधके साथ लें।

मानसिक रोग

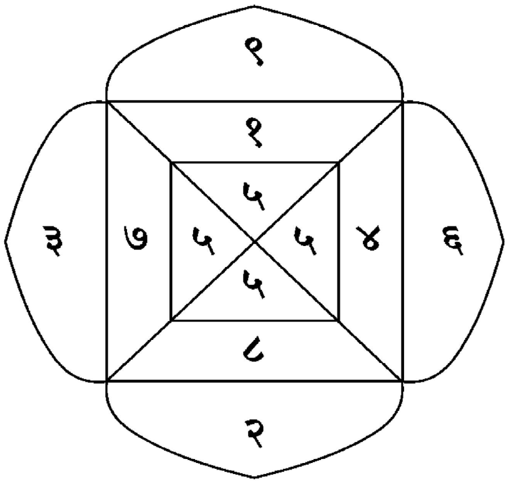
उन्माद, पागलपन—

१) रोगीकी चोटीमें धवलबरुआ (सर्पगन्धा)-की जड़ बाँध दें।

२) धवलबरुआ पाँच ग्राम लेकर प्रात: पचास ग्राम गुलाबजलमें भिगो दें। रात्रिमें उस जलमें तीन काली मिर्च पीसकर बिना छाने रोगीको पिला दें। इसी प्रकार रात्रिमें दवा भिगोकर प्रात: पिला दें। नींद अधिक आयेगी। यदि अधिक कमजोरी लगे तो बीचमें एक-दो दिन दवा बन्द कर दें अथवा दवाकी मात्रा घटा दें।

तनाव—

निम्न बीसा यन्त्रको कागजपर बना लें। तनाव-मुक्तिके लिये इसे सामने रखकर बैठें और पाँच-दस मिनट इष्ट मन्त्रका जप करें।



मिरगी

१) बिल्वपत्र १५ और काली मिर्च ५ दाने लेकर बारीक पीस लें। उसे सौ ग्राम ताजे पानीमें घोल लें। थोड़ी मात्रामें देसी खाँड़ मिलाकर रोगीको सुबह-शाम एक मासतक पिलायें। उपचारके समय खटाई, लाल मिर्च, तली वस्तु, गुड़, चाय तथा अन्य गरम वस्तुएँ बिल्कुल न लें। (श्रावण और चैत्र मासमें लेनेसे शीघ्र लाभ होता है)।

२) इस मन्त्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखकर गलेमें बाँधें—**ॐ हलाहल सरगत मढ़िया पुरिया श्रीरामजी फूँके मृगी बाई सूखे सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।**

३) शव-यात्रा जाती हो तो रोगीको एक बार शवके नीचेसे निकाल दें।

४) अरथी ले जाते समय जो घड़ा फोड़ते हैं, उसकी ठीकरी पासमें रखें।

५) इक्कीस जायफल लेकर रेशमी धागेमें पिरो लें और गलेमें धारण करें।

६) कीकर (या अन्य) वृक्षके ऊपर 'पीपल' उगा हो तो उसकी ऊपरी कोंपले खानेसे मिरगी ठीक होती है।

७) मीठी बच एक छटाक लेकर कपड़छान-चूर्ण बना लें। दो-दो आनेभर सुबह-शाम शहदमें चाटें। लगभग पन्द्रह दिन लें। भोजनमें दूध-भातके सिवाय और कुछ नहीं खाना है। अधिक-से-अधिक फल खा सकते हैं।

८) कपिला गायका दूध प्रात:काल खाली पेट और सायंकालको जितना पी सकें उतना ४० दिनोंतक पीयें। दूध ताजा दुहा हुआ, गरम न किया हुआ, फीका पीना चाहिये। गायका शरीर काला हो या न हो, पर थन अवश्य काले हों। गाय पहले ब्यानकी न हो।

९) प्रतिदिन हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रका पाठ करें।

१०) इस मन्त्रका जप करनेसे मिरगी जैसे भयानक रोग नष्ट होते हैं—**ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।**

११) पन्ना अथवा फिरोजाकी अँगूठी बनाकर पहननेसे मिरगी रोग नहीं रहता।

मूत्रावरोध (पेशाब रुकना)

१)卐 पानीमें अफीमका डोडा उबालकर उस पानीमें (टबमें) बैठे तो बन्द पेशाब खुल जाता है।

२) एक तोला ईसबगोल आधा सेर जलमें पन्द्रह मिनटतक उबालें। फिर छानकर ठंडा करें। उसमें एक तोला मिश्री मिलाकर दिनमें तीन बार रोगीको पिलायें।

३) पेशाब रुकनेपर ५ ग्राम मुलहटी और ५ ग्राम कलमी शोरा—दोनोंको घिसकर जलके साथ पी लें। यह दवा प्रतिमास लें।

४) कलमी शोरेको पानीमें पीसकर पेड़ूपर लेप करें। इससे मूत्रावरोध ठीक न हो तो आधा तोला कलमी शोरा एक गिलास ठण्डे पानीमें घोलकर पिला दें। शीतकालमें तथा ज्वरमें इसे नहीं पिलायें।

५) करेलेके छ: बीज पानीके साथ पीसकर पिला दें।

६) मूत्रछिद्रमें कपूरकी डली रखनेसे पेशाब खुल जाता है।

७) खरबूजेका छिलका पानीके साथ पीसकर पिला दें।

रक्तचाप

उच्च रक्तचाप—

१) एक तोला जटामासीका चूर्ण रात्रि पानीमें भिगो दें। प्रात: मसल-छानकर पानी पी लें।

२) रुद्राक्षके १० दाने ५० ग्राम जलमें रात्रि समय ताँबेके पात्रमें भिगो दें। प्रात: उठनेपर खाली पेट पी लें।

३) पंचमुखी रुद्राक्षको शहदके साथ घिसकर चाटनेसे तत्काल लाभ होता है। छ:मुखी अथवा पंचमुखी रुद्राक्षको कण्ठमें अथवा हाथमें धारण करें।

४) ब्राह्मी, आँवला, जटामासी, शंखपुष्पी और सर्पगन्धा समान मात्रामें लेकर कूट-छान कर रख लें। एक चम्मच रातमें सोते समय ठण्डे जलके साथ लें।

५) प्रात: खाली पेट सदासुहागनके १०-१२ फूल खा लें।

६) पारेकी गोली लाल धागेमें पिरोकर स्त्रीकी बायीं भुजामें और पुरुषकी दायीं भुजामें बाँधें।

निम्न रक्तचाप—

किशमिश १०-१५ दाने और काले चने २० ग्राम रात जलमें भिगो दें। प्रतिदिन प्रात: खाली पेट चबाकर खानेसे निम्न रक्तचाप ठीक हो जाता है।

लिवर-रोग

१) सुबह नींद खुलनेपर बिस्तरपर ही पाँच मिनटतक हाथ-पैरोंको, पूरे शरीरको बार-बार सिकोड़ें और छोड़ें। सदा ऐसे करनेसे यकृत् अथवा लिवरकी पीड़ा नहीं होगी।

२) प्याज अथवा नागफनीकी जड़की माला धारण करनेसे लिवर और प्लीहाका रोग (लिवरवृद्धि) दूर होता है।

३) सूखी अंजीरको तीन दिनोंतक जामुनके सिरकेमें भिगोकर रखनेके बाद प्रात: खाली पेट दो अंजीर प्रतिदिन खायें। मिट्टीके बर्तनमें भिगोयें। चालीस दिनतक खायें।

विष

१)卐 मूलीका रस पीनेसे संखियाका विष दूर हो जाता है।

२)卐 गायके घीमें विष दूर करनेकी शक्ति होती है। इसको पीनेसे साँपका विष भी उल्टी होकर बाहर निकल जाता है। विषैली तथा नशीली दवाका असर भी गायके घीसे नष्ट हो जाता है।

३)卐 भिलावा हाथमें लग जाय तो फफोले हो जाते हैं, उनपर खोपरा लगाना चाहिये।

४) किसीने पारा पी लिया हो तो मूलीके टुकड़े करके गड्ढेमें भर दें और उसे दोनों पैरोंसे गूँथें। सब पारा पैरोंसे निकल जायगा।

बिच्छूका विष—

१) जिस जगह बिच्छूने काटा हो, उस जगहपर दो तोले गुड़में आधा तोला नमक, एक रत्ती फिटकरी और एक रत्ती पोटैशियम परमैंगनेट मिलाकर बाँध देनेसे कुछ देरमें जहर उतर जाता है।

२) **'सोनेका चिमटा, चाँदीका कड़ा, अलख निरंजन लिये खड़ा'**—इस मंत्रसे ऊपरसे नीचेकी ओर झाड़नेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है।

३) **'प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः'**—इसका सात बार उच्चारण करनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है।

४) नमकका संतृप्त (saturated) जल दोनों आँखोंमें कुछ बूँदें डालनेसे बिच्छूका विष तुरन्त उतर जाता है।

८) गुरुपुष्य अथवा रविपुष्यके समय अपामार्गकी जड़ लाकर रख लें। बिच्छूके काटनेपर उस जगह अपामार्गकी जड़ घिसकर लेप कर दें। केवल अपामार्गकी जड़का स्पर्श करानेसे भी विष उतर जाता है।

९) जहाँ बिच्छूने काटा हो, वहाँ भस्म लगाते हुए यह मंत्र पढ़ें—**'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'।**

१०) ऊपरसे लेकर बिच्छूके काटनेके स्थानतक झाड़ा देते हुए २० से १ तक उल्टी गिनतीका जप

करनेसे जहर उतर जाता है। अन्तमें दंश-स्थानपर हींग लगा दें।

कुत्तेका विष—

१)卐 सामान्य कुत्तेके द्वारा काट लेनेपर उसपर लाल मिर्च पीसकर लगा देनेसे वह ठीक हो जाता है। कुत्ता लाल मिर्च नहीं खाता।

२) काटे हुए स्थानपर बुझे हुए चूनेका मोटा लेप लगा दें। वह हरा हो जायगा। फिर पुन: ताजा चूना लगायें तो वह भी हरा हो जायगा। जब सफेद चूना रह जाय, तब समझे कि विष चला गया।

७. भुने हुए चनोंको (छिलका उतारकर) पीस लें। उसमें आकका दूध सममात्रामें मिलाकर गोली बना लें। आकका दूध उतना डालें, जितनेसे गोली बन जाय। इसे खिलानेसे पागल कुत्ता तथा कुत्ता काटे हुए पागल आदमीको खिला दें, दोनों ही ठीक हो जायँगे।

सिरदर्द, आधासीसी

१)卐 खस, खसखस, बादाम और चार मगज—चारोंको बराबर मात्रामें थोड़ा-थोड़ा लेकर सायंकाल जलमें भिगो दें। रात्रि बादामके छिलके उतारकर सब चीजोंको रगड़ लें। फिर अग्निपर पात्र रखकर उसमें थोड़ा गायका घी डालकर गरम करें और उसमें उपर्युक्त चीजोंका छोंका लगायें। तुरन्त भलीभाँति हिलायें, जिससे कि वह फट न जाय। उसे पीनेसे सिरदर्द ठीक होता है और मस्तिष्कको शक्ति मिलती है।

२)卐 दूधमें केसर डालकर पीनेसे सिरदर्द ठीक होता है।

३) सिरमें दर्द होनेपर एक सेव खा लें।

४) लेट जायँ और इमली चूसें।

५) काले साँपकी काँचुली १ तोला और कूँजेकी मिश्री १ तोला लेकर पीस लें और सुबह-शाम २-२ रत्ती बताशेमें डालकर खा लें। इससे आधासीसी (माइग्रेन) सिरदर्द ठीक हो जाता है।

५) **काल चिड़ी कुल कूली बिष की कोंपल खाय। हनुमान के हाँक से आधासीसी जाय। शब्द साचा पिंड काचा चलो मंत्र ईस्वर वाचा।**

—पहले ग्रहणके समय यह मन्त्र १०८ बार जपकर सिद्ध कर लें। रोगीको झाड़ा देनेके समय पहले जमीनपर इस तरह सात रेखाएँ खींचें—

ॐ

।।।।।।।

फिर झाड़ा देते समय हर बार एक-एक रेखा मिटाते जायँ। इससे आधासीसीकी पीड़ा दूर होती है।

६) आधासीसीका एक टोटका है, जिसे सभी कर सकते हैं। रोगी चुपचाप सुबह हाथमें एक गुड़का ढेला लेकर चौराहेपर जाय और दक्षिण दिशाकी ओर मुख करके गुड़के ढेलेको दाँतोंसे काटकर वहीं फेंक दे।

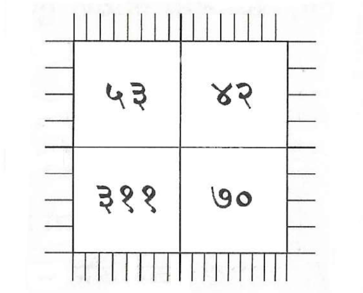
७) प्रात:काल सूर्योदयसे एक घंटे पूर्व मावेके एक पेड़ेमें एक चनेके दानेके बराबर देशी (डलीवाला) कपूर डालकर उसे चबाकर खा जायँ। उसीके साथ छटाँक-आधी छटाँक मावाका पेड़ा या मावा और खा लें। पानी न पीयें। एक ही मात्राके सेवनसे लाभ होता है, किसी-किसीको दो मात्रा खानी पड़ती है।

८) मुर्गीकी बीट और काली मिर्च बराबर भाग लेकर पीस लीजिये। यदि दर्द बायीं ओर हो, तो दायीं

ओर ललाटपर लेप कीजिये और दर्द दायीं ओर हो तो बायीं ओर लेप कीजिये। तीन दिनमें ही लाभ होगा।

९) जंगली कबूतरकी बीट और राई समान भाग लेकर पीस लीजिये। जिस तरफ दर्द हो, उसी तरफ ललाटपर सूर्योदय होते ही लेप करनेसे पुरानी आधासीसीमें भी लाभ होगा।

१०) सफेद कागजपर निम्न यंत्र बनाकर (चारों ओर ५३ रेखा खींचकर) कागजको मोड़ दें। फिर उसे सफेद और काले धागेसे बाँधकर, धूप देकर जिस तरफ दर्द हो, उसी ओरके भागके कानमें या सिरके बालोंमें सूर्योदयसे पहले महावीर बजरंगबलीका नाम लेकर बाँध दें। पहले दिन कुछ दर्द रहेगा, पर दूसरे दिन एकदम चला जायगा।



११) रात्रिको सोनेसे पूर्व एक छटाक चीनी या चीनीका बूरा पावभर पानीमें घोलकर ढककर रख दें। ऐसा ढकें कि उसमें चींटी आदि न लग जाय। प्रात:काल सूर्योदयसे एक घंटा पूर्व जलको अच्छी तरह हिला कर पी जायँ।

११) बादाम, तरबूजके बीज, खसखस, काली मिर्च, ३-४ छोटी पीपर—इन पाँचोंको रात्रि जलमें अलग-अलग भिगो दें। प्रात: पीसकर लुगदी बना लें। यथायोग्य (जितना पच सके) गायका घी कड़ाहीमें डालकर गर्म करें। पहले लौंग छौंककर ऊपरसे लुगदी छौंक दें और घीमें तल लें। ऊपरसे दूध डाल दें। प्रात: नींदके बीचमेंसे उठाकर (कुल्ला करके) रोगीको पिला दें, और पुन: सुला दें। पीनेके बाद लगभग दो घण्टे नींद आनी चाहिये।

१२) एक पाव दूधमें एक पाव पानी डालें। उसमें दो पीपली, पाँच लौंग, चार दालचीनीके छोटे टुकड़े डालकर औटायें। जब केवल दूध ही बचे, तब दो चम्मच शहद मिलाकर गरम-गरम पीयें और कम्बल ओढ़कर सो जायँ। दिनमें ३-४ बार पीयें।

१३) **ॐ नमो आदेश गुरु को, बालमें कपाल, कपालमें भोजी भेजी, भेजीमें कीड़ा करे पीड़ा, सोनेका शालाका, रूपाका हथौड़ा, ईश्वर गढ़े गौरिया तोड़े, इनका शाप श्रीमहादेव तोड़े, शब्द साचा पिण्ड काचा चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।**

—अपने बाएँ हाथमें सात बार थोड़ी-थोड़ी शुद्ध राखको लेकर दायें हाथसे ढक दें और उपर्युक्त मन्त्रको सात बार पढ़कर मस्तकमें लगानेसे मस्तकका दर्द दूर हो जाता है।

१४) हुक्केमें आकका सूखा पत्ता डालकर (जलाकर) दोनों नासिकासे धुआँ खींचें।

१५) इस स्वयंसिद्ध मन्त्रसे झाड़ा करें—**'सोनेकी सिल, रूपेका लोढ़ा, सीता पीसे जीरा, उतर जाय मूँडेकी पीड़ा'**।

१६) काकजंघा अथवा गूमाकी जड़ सिरपर बाँधकर सोनेसे सिरदर्द बन्द हो जाता है।

स्त्री-रोग

१)卐 साबत धनियाके लड्डू खानेसे माँका दूध ज्यादा पैदा होता है। सूँठ खानेसे दूध तेज होता है, जिससे बालक बड़ा बलवान् बनता है।

२) *मासिक धर्मकी गड़बड़ी*—कायफल और समुद्रफल—दोनों समान मात्रामें लेकर कूट-पीसकर महीन चूर्ण (कपड़छान) कर लें। एक या डेढ़ ग्राम चूर्ण प्रातः और रात्रि सोनेसे पूर्व गरम जल या चायसे लें। मासिक धर्म होते ही दवा बन्द कर लें और मासिक धर्म बन्द होते ही दवा शुरू कर दें। जब तक मासिक धर्म उचित समयपर, उचित रूपसे न होने लगे, तबतक दवा लेती रहें। अपनी शक्तिसे अधिक परिश्रम न करें ओर भारी बोझ न उठायें।

प्रदर—

१)卐 सिंघाड़ेका आटा आठ आनाभर प्रातः-सायं जलके साथ फाँक लें। यह पुरुषोंके प्रमेहमें भी काम करता है। प्रदर या प्रमेहके रोगीके ओंठ सूखते हैं, इसके लिये नाभिमें घी लगायें।

२) छोटी इलायचीके बीज २५ ग्राम, मिश्री २५० ग्राम और लाल फिटकरी (फुलाकर) २५० ग्राम—तीनोंको पीसकर छान लें। प्रातः खाली पेट दही या ठण्डे दूधके साथ ६ ग्राम लें। चालीस दिन लें।

३) पत्थर संगजराहत और सोना गेरू—दोनों पचास-पचास ग्राम लें और महीन पीसकर मिला लें। रक्तप्रदरमें पाँच-पाँच ग्रामकी पुड़िया ओर श्वेतप्रदरमें दो-दो ग्रामकी पुड़िया पाँच-पाँच घण्टे बाद ताजा पानीसे दें। यह दवा इक्कीस दिनतक लें। गुड़, तली चीजें, लाल मिर्च, खटाईका सेवन न करें। नमक भी कम लें तो अच्छा है।

४) काले चने एक किलो लेकर एक पाव घीमें भून लें। फिर पीसकर ५० ग्राम बूरा डालकर लड्डू बनायें। प्रातः खाली पेट एक गिलास दूधके साथ लें।

५) कमरमें मूँजकी रस्सी बाँधकर सो जायँ और प्रातः उसे खोलकर चौराहेपर फेंक दें तो मासिक धर्मकी खराबी तथा पेटमें या कमरमें होनेवाली पीड़ा शान्त होती है।

६) कुम्हारके आँवेकी बहुत पुरानी ठीकरी लायें और उसके समान मात्रामें चीनी मिलाकर महीन पीस लें। नौ दिनोंतक प्रातः-सायं शीतल जलके साथ लेनेसे रक्तप्रदर ठीक हो जाता है।

स्वप्नदोष

१)卐 सोनेसे पहले गरम दूध अथवा ठण्डा जल पीनेसे और गीले पाँव सोनेसे स्वप्नदोष होता है। अतः इनका त्याग करना चाहिये।

२) प्रातःकाल एक रत्ती बंगभस्म एक छोटी चम्मच मक्खनपर डालकर तीन दिन लें।

३) शनिवार काले धतूरेकी जड़ काले धागेसे कमरमें बाँधें।

४) प्रातः बासी जलके साथ अफीमका सरसों जितना दाना (बिना कुल्ला किये) निगल लें।

५) रात्रिमें गोंद कतीरा भिगो दें। प्रातः दूधमें डालकर खाली पेट खा लें अथवा बिना दूध डाले मिश्री व छोटी इलायची मिलाकर खा लें।

हिचकी

१)卐 एकपोतिया लहसुनको दूधमें उबालकर पीनेसे हिचकी ठीक होती है।

२) गायका घी एक या दो चम्मच लेनेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

३) सूईकी नोकमें काली मिर्च लगाकर उसे जलायें और तत्काल बुझा दें। उससे निकलता हुआ धुआँ सूँघनेसे हिचकी तुरन्त बन्द हो जाती है।

४) हिचकी बन्द करनेके लिये बहेड़ेका बारीक चूर्ण ४ माशा लेकर एक तोला शहदमें मिला कर चाटें।

५) हिचकीमें सूखे नींबूको जलाकर उसे शहदके साथ चाटें।

हृदयरोग

१) प्रतिदिन प्रातः सूर्योदयके समय सूर्यके सम्मुख बैठकर इस मन्त्रका १०८ बार जप करें—

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमहः आरोहन्नुत्तरां दिवम्।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥

यदि इसके साथ 'आदित्यहृदयस्तोत्रम्' का भी पाठ किया जाय तो विशेष लाभ होता है।

२) पीपलके १५ पत्ते लेकर उन्हें आगे-पीछेसे काट लें और एक गिलास पानीमें धीमी आँचपर पकायें। जब पानी एक तिहाई रह जाय, तब उतार लें और ठण्डा होनेपर छान लें। इस काढ़ेकी तीन खुराक बना लें और प्रातः नाश्तेके बाद तीन-तीन घण्टेके अन्तरसे पी लें। पन्द्रह दिनतक लें। तली चीजें, चावल, नमक आदि और मांस-मदिरा आदि न लें, पूर्ण सात्त्विक आहार करें।

३) नींबूका रस १ कप, अदरखका रस १ कप, लहसुनका रस १ कप और सेबका सिरका १ कप—चारोंको मिलाकर धीमी आँचपर गरम करें। जब ३ कप रह जाय, तब इसे ठण्डा होने दें। अब इसमें ३ कप शहद मिला दें। दवा तैयार है। इसे किसी काँचकी बोतलमें भरकर रख दें। प्रतिदिन प्रातः खाली पेट तीन चम्मच दवा लें। इस दवासे हृदयकी सब बन्द नसें खुल जायँगी और बाईपास सर्जरी नहीं करानी पड़ेगी।

४) रुद्राक्षकी २७ दानोंकी माला कण्ठमें इस प्रकार धारण करें कि रुद्राक्षका सदैव हृदयसे स्पर्श रहे। चतुर्मुख रुद्राक्ष '**ॐ ह्रीं नमः**' मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके धारण कर लें। अर्जुन-घृत, अर्जुनारिष्टका भी सेवन करें।

५) तीनसे पाँच ग्राम जावित्री लेकर उसका काढ़ा बनाकर पीयें।

विविध

१) **कोलेस्ट्रोल-वृद्धि—**प्याज, लहसुन, अदरख और शहद—चारोंको थोड़ा-थोड़ा लेकर कूट लें और यथोचित जल मिलाकर काढ़ा बना लें। फिर उसमें थोड़ा नींबू निचोड़कर छान लें। एक कप दिनमें एक बार पीयें। तीन दिन तक लें।

२) **एपेण्डीसाईटिस—**जंगलकी एक बूटी 'बनतुलसा' है। उसे पीसकर लुगदी बना लें ओर किसी लोहेकी करछुल आदिपर उसे गरम करके (भूनकर नहीं) उसपर थोड़ा-सा नमक छिड़क दें और दर्दकी जगह उस लुगदी को ४८ घण्टेमें तीन बार बदलकर बाँधें। इस बीच रोगीको आराम करना चाहिये। इस

४८ घण्टेके बाद रोग सदाके लिये चला जाता है।

३) **उल्टी—** 卐 नारियलकी जटा जलाकर पानीमें बुझा दें और वह पानी छानकर पिलायें। इससे उल्टी बन्द हो जाती है।

४) **मोच—** 卐 ग्वारकी दाल मोचकी जगह बाँधकर ऊपरसे मूँजकी रस्सी बाँध दें। फिर उसे गीला कर दें। गीला होनेसे ग्वार फैलेगी व मूँज सिकुड़ेगी और मोच ठीक हो जायगी।

५) **मोटापा—** 卐 मोटापा कम करनेके लिये आसन करने चाहिये। इसमें दो आसन हैं। पहला, पश्चिमोत्तान आसन करें अर्थात् सीधे पैर करके हाथोंसे पैरोंका अँगूठा पकड़ें और सिर घुटनोंमें ले जायँ। दूसरा, पद्मासन लगाकर बैठ जायँ और दोनों हाथोंसे पेट दबाते हए, श्वास बाहर निकालकर आगे झुकें और सिर जमीनकी तरफ नीचे झुकाते जायँ।

६) **लकवा—**रविपुष्यके समय सर्वथा काले घोड़ेके किसी भी पैरकी नाल निकलवाकर किसी लुहारसे उसका कड़ा बनवा लें। रोगीके किसी भी अंगमें कड़ा पहना दें। लकवेका दौरा नहीं पड़ेगा।

७) **सुजाक—** 卐 रसकपूरको डमरूयंत्रसे उड़ाया जाय। उसको एक चावलकी मात्रामें मलाईके साथ लेनेसे आतशक (सुजाक) एवं फोड़ा ठीक हो जाता है। डमरूयंत्रको ऊपरसे ठण्डा करनेके लिये केलेके डंठलका रस काममें लेना चाहिये।

८) **हरनिया—**एक रीठा लेकर लाल धागेसे कमरमें बाँधें।

९) 卐 बिच्छू काट जाय तो श्वास भीतर भर ले और जिस अंगमें बिच्छूने काटा है, उस अंगमें भावके द्वारा वायुका दबाव डाले कि वायु विषको बाहर निकाल रही है। कुत्ता अपनी तरफ भौंकता हो तो दोनों हाथोंकी मुट्ठी भींच ले। कुछ ही देरमें वह चुप हो जायगा।

१०) 卐 गायका घी, भेड़का दूध, बकरीकी छाछ और भैंसका दही विशेष काम आता है। भेड़का दूध मलनेसे भीतर हड्डीका दर्द भी ठीक हो जाता है।

११) 卐 रोगी व्यक्ति कुछ भी खा-पी न सके तो गेहूँ आदि अग्निमें डालकर धुआँ देना चाहिये। उस धुएँसे उसे पुष्टि मिलती है। डॉक्टरलोग यह बात नहीं जानते!

१२) 卐 औषधसे 'काम' नष्ट नहीं होता, प्रत्युत इन्द्रियशक्ति नष्ट होती है। केलेके डंठलका रस पीनेसे स्त्रीसंगकी शक्ति नष्ट होती है। सिद्धासनसे भी इन्द्रियशक्ति क्षीण होती है; अत: गृहस्थको यह आसन थोड़ी देर करना चाहिये, ज्यादा देर नहीं।

१३) 卐 मानसिक रोग प्रारब्धसे भी होते हैं, और कुपथ्य (चिन्ता आदि)-से भी होते हैं।

१४) 卐 गायकी पीठ आदिको सहलानेसे गायकी प्रसन्नता प्राप्त होती है, जिससे रोग नष्ट होते हैं।

१५) 卐 प्रत्येक बार लघुशंका करनेपर इन्द्रिय और मुखको ठण्डे जलसे तथा पैरोंको गरम जलसे धोना चाहिये। इससे आयु बढ़ती है! पैरोंको गर्म जलसे इसलिये धोना चाहिये कि पैर गर्म तथा सिर ठण्डा रखना स्वास्थ्यवर्धक होता है। ***'पैर गरम, पेट नरम, सिर ठंडा; वैद्यको मारो डंडा!'***

१६) 卐 औषध लेनेसे प्रारब्धजन्य रोग क्षीण नहीं होता, प्रत्युत कुपथ्यजन्य रोग क्षीण होता है। हाँ, औषध लेनेसे रोगका उपद्रव (पीड़ा आदि) अवश्य शान्त होते हैं। इसलिये औषधद्वारा चिकित्सा करना वैद्यका कर्तव्य है।

१७) 卐 एक ही दवा लम्बे समयतक नहीं लेनी चाहिये, बीचमें कुछ दिन छोड़ देनी चाहिये। निरन्तर

लेनेसे वह आहार (भोजन)-की तरह हो जाती है।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

[प्रतिकूल परिस्थिति प्रत्येक मनुष्यके जीवनमें आती है और उसके दुष्प्रभावसे बचनेके लिये वह अनादिकालसे विविध उपायोंका सहारा लेता आया है। इसलिये वेद-पुराणादिमें लौकिक कामनापूर्तिके लिये विविध उपाय, अनुष्ठान, स्तोत्र-मन्त्रादिका वर्णन प्राप्त होता है, जिसका उद्देश्य यही प्रतीत होता है कि मनुष्य किसी भी प्रकारसे भगवान्‌के सम्मुख हो जाय। परंतु वर्तमान समयमें पाखण्ड बहुत फैल गया है! रुपयोंके लोभसे लोगोंको ठगनेकी अनेक दुकानें खुल गयी हैं! शास्त्रोंके ज्ञानसे अनभिज्ञ नासमझ स्त्री-पुरुष सहज ही उनके चँगुलमें फँसकर अपना सब कुछ लुटा देते हैं! इसलिये प्रस्तुत पुस्तककी सहायतासे लोग स्वयं ही अपनी कामनापूर्ति अथवा कष्ट-निवारणका सात्त्विक उपाय जानकर ढोंगी तान्त्रिकोंसे बच सकते हैं। इसमें परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजकी कृपासे प्राप्त सम्बन्धित सामग्रीको भी सम्मिलित किया गया है, जिससे इस पुस्तककी उपयोगिता कई गुना बढ़ गयी है!!]

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

माप-तौलका परिचय

१ तोला= १२ माशा= ११.६६ ग्राम
१ माशा= ८ रत्ती= १.४५६ ग्राम
१ छटाक= ५ तोला= ६० ग्राम
१ सेर= १६ छटाक= ९६० ग्राम
१ टंक= ४ माशा
१ ग्रेन= एक गेहूँभर= आधी रत्ती

१ ग्राम= १५.४३ ग्रेन
१ रत्ती= ०.९१ कैरेट= १८२ मिलिग्राम= ०.१८२ ग्राम
रुपयाभर= १ तोला
आठ आनाभर= आधा तोला
चार आनाभर= ३ ग्राम
पैसाभर= आनेका चौथा अथवा रुपयेका ६४वाँ भाग

===::0::===